गुरुवार, 10 जुलाई 2025

मौसम

तापमान 26 – 31
आर्द्रता 82%
सूर्योदय: 4:58 सूर्यास्त: 18:25

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

www.samagya.in

समाज्ञा

ऑस्ट्रेलिया, यूएई, ब्रिटेन के साथ एफटीए से कृषि क्षेत्र को बेहतर बाजार पहुंच मिलेगी: गोयल पृष्ठ 8

स्थानीय खबरें पृष्ठ तीन, चार और पांच पर

कोलकाता, आषाढ़ शुक्लपक्ष पूर्णिमा, वि.स. 2082, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रुपये

सुविचार : सुख का ताला केवल और केवल संतुष्टि की चाबी से ही खुलता है।

संविधान की ताकत से बड़ी कोई ताकत नहीं: पीएम मोदी

विंडहोक : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नामीबिया की संसद में अपना संबोधन शुरू किया तो लोगों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। नामीबिया की संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि लोकतंत्र के मंदिर, इस गरिमामय सदन को संबोधित करना मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है।। मुझे यह सम्मान देने के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। मैं आपके समक्ष लोकतंत्र की जननी के प्रतिनिधि के रूप में खड़ा हूं और मैं अपने साथ भारत के 1।4 अरब लोगों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं लाया हूं। नामीबिया की संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कुछ महीने पहले, आपने एक ऐतिहासिक क्षण का जश्न मनाया, नामीबिया ने

अपनी पहली महिला राष्ट्रपति चुनी। हम आपके गर्व और खुशी को समझते हैं और साझा करते हैं क्योंकि भारत में, हम भी गर्व से मैडम प्रेसिडेंट कहते हैं। यह भारत के संविधान की शक्ति है कि एक गरीब आदिवासी परिवार की बेटी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की राष्ट्रपति है। यह संविधान की शक्ति है जिसने मुझ जैसे व्यक्ति को, जो एक गरीब परिवार में पैदा हुआ, तीन बार प्रधानमंत्री बनने का अवसर दिया। जिनके पास कुछ नहीं है, उनके पास संविधान की गारंटी है।

प्रधानमंत्री मोदी को नामीबिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजा गया

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बुधवार को नामीबिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द मोस्ट एनशिएंट वेल्विच्चिया मिराबिलिस' से नवाजा गया। यह सम्मान नामीबिया की राष्ट्रपति नेटुम्बो नेंडी-नदैतवा द्वारा प्रदान किया गया। नामीबिया में पाए जाने वाले अनोखे और प्राचीन रेगिस्तानी पौधे वेल्विच्चिया मिराबिलिस के नाम पर रखा गया यह सम्मान नामीबियाई लोगों के जुझारुपन, दीर्घायु और स्थायी भावना का प्रतीक है। प्रधानमंत्री मोदी ने सम्मान से नवाजे जाने के बाद अपने संबोधन में कहा, ''नामीबिया का वेल्विच्चिया, जिसके नाम पर यह पुरस्कार रखा गया है, कोई साधारण पौधा नहीं है। यह परिवार के किसी बुजुर्ग सदस्य की तरह है, जिसने समय को गुजरते देखा है। यह नामीबिया के संघर्ष, साहस और संस्कृति का प्रतीक है।''

नीति आयोग के मानचित्र में बिहार बना पश्चिम बंगाल, ममता ने तुरंत सुधार और माफी की मांग की

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को नीति आयोग के उपाध्यक्ष को पत्र लिखकर एक आधिकारिक रिपोर्ट में अपने राज्य को बिहार के रूप में दर्शाये जाने पर कड़ी आपत्ति जताई। मुख्यमंत्री ने इस त्रुटि की निंदा की और उनसे माफी की मांग करते हुए इस संबंध में तत्काल सुधारात्मक कदम उठाने को कहा। ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में पत्र की एक प्रति और भारत के मानचित्र का स्क्रीनशॉट साझा किया। यह मानचित्र रिपोर्ट के पहले पृष्ठ पर है, जिसमें बिहार को पश्चिम बंगाल के रूप में दर्शाया गया है। ममता ने नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन के. बेरी को लिखा कि मैं अत्यधिक चिंता और स्पष्ट

अस्वीकृति के साथ लिख रही हूं कि नीति आयोग द्वारा प्रकाशित और इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध 'पश्चिम बंगाल राज्य के लिए सारांश रिपोर्ट' में इस राज्य को मानचित्र में बिहार के क्षेत्र को दर्शाया गया है। इस त्रुटि को नीति आयोग की 'गंभीर चूक' बताते हुए मुख्यमंत्री ने दावा किया कि नीति आयोग के आधिकारिक प्रकाशन में इस तरह की बड़ी गलती राज्यों के प्रति 'सम्मान की कमी' को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि इससे संस्था के काम की विश्वसनीयता के बारे में वाजिब चिंताएं पैदा हुईं, जिस पर नीति निर्माता और नागरिक सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्भर हैं तथा नीति आयोग की रिपोर्टों और प्रकाशनों की गुणवत्ता, प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता पर गंभीर संदेह पैदा होता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार इस त्रुटि की कड़ी निंदा करती है और नीति आयोग से स्पष्टीकरण जारी करने तथा क्षमा मांगने, दस्तावेज में सुधार के लिए तत्काल सुधारात्मक कदम उठाने तथा भविष्य में ऐसी चूक को रोकने के लिए मजबूत तंत्र स्थापित करने की मांग करती है।

RED-X
B.W.P. PLY,
BOARDS& DOORS
'X' Factor that Makes A Difference
Stockist :
GULAB CHAND
LAL CHAND& Co.
9831114555
9874415555

संसद को निर्देश नहीं दे सकते: दिल्ली उच्च न्यायालय

नयी दिल्ली : दिल्ली उच्च न्यायालय ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के कुछ प्रावधानों को निरस्त करने के अनुरोध वाली जनहित याचिका बुधवार को खारिज कर दी और कहा कि वह संसद को निर्देश नहीं दे सकता। मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय और न्यायमूर्ति अनीश दयाल की खंडपीठ ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि न्यायपालिका के पास विधायिका को कानून बनाने या निरस्त करने के लिए बाध्य करने का अधिकार नहीं है। पीठ ने कहा, समापन (निरसन) केवल संशोधन अधिनियम पारित करके ही स्वीकार्य है। यह संसद का अधिनियम है। हम संसद को ऐसा करने का निर्देश नहीं दे सकते। यह कानून बनाने के समान होगा। यह हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। याचिका में कहा गया था कि बीएनएस की धारा 147 से 158 राज्य के खिलाफ कुछ अपराधों से संबंधित हैं, जबकि धारा 189 से 197 सार्वजनिक शांति के उल्लंघन से जुड़ी हुई हैं-दोनों ही ब्रिटिश कानून हैं, जिनका उद्देश्य भारतीयों का दमन करना है।

ट्रंप ने सात और देशों पर फोड़ा टैरिफ बम

वाशिंगटन : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को अल्जीरिया, ब्रुनेई, इराक, लीबिया, मोल्दोवा, श्रीलंका और फिलीपींस को 30 फीसदी तक टैरिफ को लेकर पत्र जारी किए। इनमें अल्जीरिया, इराक, लीबिया और श्रीलंका पर 30-30 फीसदी, ब्रुनेई और मोल्दोवा पर 25 फीसदी व फिलीपीन पर 20 फीसदी टैरिफ लगाने का जिक्र है। डोनाल्ड ट्रंप ने इससे पहले सोमवार को कई देशों को टैरिफ वाले पत्र भेजे थे। ये सभी टैरिफ 1 अगस्त से लागू होंगे। विभिन्न देशों के उत्पादों पर टैरिफ लगाने के अलावा, जनवरी में व्हाइट हाउस लौटने के बाद से ट्रंप ने स्टील, एल्युमीनियम और ऑटोमोबाइल पर भी क्षेत्र-विशिष्ट शुल्क लगाए हैं। मंगलवार को ट्रंप ने कहा था कि वे तांबे और दवाओं पर भी टैरिफ लगाए जा रहे हैं।

वडोदरा में पुल ढहने के बाद वाहन नदी में गिरे, 13 लोगों की मौत

वडोदरा : गुजरात के वडोदरा जिले में बुधवार सुबह चार दशक पुराने एक पुल का हिस्सा ढह जाने से कई वाहन महिसागर नदी में गिर गए, जिससे भाई-बहन समेत 13 लोगों की मौत हो गई और नौ अन्य को बचा लिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बचाए गए लोगों में से कुछ को चोटें आई हैं। घटनास्थल के दृश्यों में देखा जा सकता है कि पुल के दो खंभों के बीच बने स्लैब का पूरा हिस्सा ढह गया। स्लैब के ढहने से पुल से गुजर रहे वाहन नदी में गिर गए। पुलिस अधीक्षक आनंद ने बताया कि बचाए गए नौ लोगों में से पांच को वडोदरा के एसएसजी (सर सैयाजीराव जनरल) अस्पताल में रेफर किया गया है। बचाए गए लोगों में से किसी की भी हालत गंभीर नहीं है। उन्होंने बताया कि सुबह करीब साढ़े सात बजे पुल का 10 से 15 मीटर लंबा स्लैब ढह गया। वडोदरा के जिलाधिकारी अनिल धमेलिया ने बताया कि पुल ढहने के बाद पांच वाहन - दो ट्रक, दो वैन, एक ऑटोरिक्शा और एक दोपहिया - नदी में गिर गए। जिलाधिकारी ने बताया कि दो अन्य वाहन जो गिरने ही वाले थे, उन्हें खींचकर सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। उन्होंने बताया कि नदी में गिरे दोपहिया वाहन पर सवार तीन लोग तैरकर सुरक्षित बाहर निकल आए। पुलिस ने बताया कि पुल ढहने की घटना में मारे गए 13 लोगों में दो साल का एक बच्चा और उसकी चार वर्षीय बहन भी शामिल हैं। मृतकों में से अधिकतर वडोदरा और आणंद जिले के निवासी थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने इस त्रासदी पर दुख व्यक्त किया और प्रत्येक मृतक के परिजनों को क्रमशः दो लाख रुपये और चार लाख रुपये की अनुग्रह राशि तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये के मुआवजे की घोषणा की।

गुजरात में पुल ढहने से हुई जान-माल की हानि बेहद दुखद: राष्ट्रपति मुर्मू

नयी दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को गुजरात के वडोदरा में पुल ढहने की घटना में हुई जानमाल की हानि पर शोक जताया और पीड़ित परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। राष्ट्रपति ने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना भी की। अधिकारियों ने बताया कि वडोदरा में बुधवार सुबह लगभग चार दशक पुराने एक पुल का कुछ हिस्सा ढह जाने के कारण एक बच्चे समेत नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि नौ अन्य लोगों को बचा लिया गया।

बिहार में मतदाता सूची संशोधन के फैसले के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई आज

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के निर्वाचन आयोग के फैसले के खिलाफ दायर याचिकाओं पर बृहस्पतिवार को सुनवाई करेगा। अद्यतन वादसूची से पता चलता है कि न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ के समक्ष 10 जुलाई को सुनवाई के लिए 10 से अधिक संबंधित मामले सूचीबद्ध हैं। बुधवार को न्यायालय ने दो सामाजिक कार्यकर्ताओं - अरशद अजमल और रूपेश कुमार की नई याचिका पर सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें राज्य में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के निर्वाचन आयोग के निर्णय को चुनौती दी गई है।

वायुसेना का जगुआर विमान चुरू जिले में दुर्घटनाग्रस्त, दो पायलट की मौत

जयपुर/नयी दिल्ली : भारतीय वायुसेना का एक जगुआर प्रशिक्षण विमान बुधवार दोपहर राजस्थान के चुरू जिले में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे दो पायलट की मौत हो गई। वायु सेना ने एक बयान में कहा कि दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए 'कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी' के आदेश दिये गए हैं। बयान में कहा गया, ''वायुसेना का एक जगुआर प्रशिक्षण विमान आज राजस्थान के चुरू के पास एक नियमित प्रशिक्षण मिशन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया।'' इसमें कहा गया, ''दुर्घटना में दोनों पायलट की मौत हो गई। किसी भी नागरिक संपत्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है।'' वायसेना ने हादसे में जनहानि पर ''गहरा दुख'' जताते हुए कहा कि दुख की इस घड़ी में शोक संतप्त

परिवारों के साथ खड़ी है। वायुसेना ने कहा ''हादसे के कारणों की जांच के लिए कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी गठित की गई है।'' इससे पहले दिन में, राजलदेसर के थानाधिकारी कमलेश ने बताया कि विमान दोपहर करीब 1:25 बजे भाणुदा गांव के एक खेत में दुर्घटनाग्रस्त हुआ। उन्होंने बताया कि दुर्घटना स्थल के पास मानव शरीर के अंग मिले हैं। दुर्घटना के तुरंत बाद, स्थानीय लोग घटनास्थल पर पहुंचे और उन्हें विमान का जलता हुआ मलबा मिला।

झारखंड उच्च न्यायालय ने देवघर कोषागार घोटाले में लालू प्रसाद के खिलाफ सीबीआई की अपील मंजूर की

रांची : झारखंड उच्च न्यायालय ने देवघर कोषागार से संबंधित घोटाले में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद को दी गई सजा की अवधि बढ़ाने की सीबीआई की अपील बुधवार को स्वीकार कर ली। प्रसाद को देवघर कोषागार से संबंधित घोटाले में दोषी ठहराया गया था। इस घोटाले में 89 लाख रुपये का कथित गबन हुआ था। विशेष सीबीआई अदालत ने इस मामले में यादव को दोषी ठहराते हुए साढ़े तीन साल कैद की सजा सुनाई थी। सीबीआई ने इस आदेश के खिलाफ अपील दायर की थी, जिसमें कहा गया था कि यादव उस समय पशुपालन विभाग के प्रभारी थे। सीबीआई ने कहा कि जांच से पता चला कि लालू को देवघर कोषागार में हुई गड़बड़ी की जानकारी थी। फिर भी निचली अदालत ने इस अपराध के लिए केवल साढ़े तीन साल की कैद की सजा सुनाई, जबकि अधिकतम सजा सात साल की कैद है।

इसरो ने गगनयान प्रणोदन प्रणाली के 'हॉट टेस्ट' सफलतापूर्वक पूरे किए

बेंगलुरु : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने तीन जुलाई को महेंद्रगिरि में अपने प्रणोदन परिसर में गगनयान सेवा मॉड्यूल प्रणोदन प्रणाली (एसएमपीएस) के दो 'हॉट टेस्ट' (तप्त परीक्षण) सफलतापूर्वक पूरे किए। 'हॉट टेस्ट' एक प्रकार का परीक्षण होता है जिसमें रॉकेट या अंतरिक्ष यान की प्रणोदन प्रणाली को वास्तविक स्थितियों में चलाकर परखा जाता है। यह परीक्षण सुनिश्चित करता है कि इंजन या थ्रस्टर अंतरिक्ष में अपेक्षित परिस्थितियों में सही काम करेंगे या नहीं। इसरो ने बुधवार को एक बयान में कहा कि ये परीक्षण बेहद कम समय क्रमशः 30 सेकंड और 100 सेकंड तक चले, जिनका उद्देश्य नमूना विन्यास (टेस्ट आर्टिकल कन्फीग्यूरेशन) को सत्यापित करना था। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा, ''इन 'हॉट टेस्ट' के दौरान प्रणोदन प्रणाली का कुल प्रदर्शन परीक्षण पूर्वानुमानों के अनुसार सामान्य रहा। 100 सेकंड के परीक्षण के दौरान सभी प्रतिक्रिया नियंत्रण प्रणाली (आरसीएस) थ्रस्टर्स का विभिन्न मोड (स्थिर अवस्था, पल्स मोड) में एक साथ संचालन किया गया। साथ ही सभी 'लिक्विड एपोजी मोटर' (एलएएम) इंजनों का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया।''

दिव्यांगजनों के लिए कौशल विकास योजना के तहत लाभ प्राप्त करने के वास्ते अब आधार कार्ड अनिवार्य: सरकार

नयी दिल्ली : केंद्र ने दिव्यांगजनों के लिए कौशल विकास योजना के तहत लाभ प्राप्त करने के लिए अपना आधार कार्ड का नंबर देना या इसके वास्ते आवेदन करने का प्रमाण देना अनिवार्य कर दिया है। साथ ही, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि आधार न होने या प्रमाणीकरण नहीं हो पाने के कारण किसी भी पात्र बच्चे को लाभ से वंचित नहीं किया जाएगा। एक राजपत्र अधिसूचना में मंत्रालय ने कहा कि योजना के तहत नकद लाभ प्राप्त करने के लिए आधार प्रमाणीकरण आवश्यक है, जिसमें परिवहन भत्ता, भोजन और आवास, परिवहन और नियुक्ति के बाद सहायता शामिल है। दिव्यांगजनों के कौशल विकास के लिए दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी) ने मार्च 2015 में राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपी-एसडीपी) शुरू की थी। यह एक केंद्रीय योजना है। इसका उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) के कौशल को बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिससे वे सार्थक रोजगार प्राप्त कर सकें और आत्मनिर्भर बन सकें। अधिसूचना में स्पष्ट किया गया है कि यदि किसी पात्र व्यक्ति के पास आधार संख्या नहीं है तो उसे नामांकन के लिए आवेदन करना होगा। बच्चों के लिए ऐसा आवेदन माता-पिता या कानूनी अभिभावक की सहमति से किया जाना चाहिए।

ईडी ने अवैध सट्टेबाजी में लिप्त हरियाणा की कंपनी पर छापा मारा, 284 करोड़ रुपये की जमा राशि फ्रीज की

नयी दिल्ली : हरियाणा में अवैध ऑनलाइन जुआ और सट्टेबाजी गतिविधियों के माध्यम से कथित तौर पर लोगों को ठगने से जुड़े एक मामले में धन शोधन निरोधक कानून के तहत एक कंपनी की 284 करोड़ रुपये से अधिक की सावधि जमा राशि (एफडी) और शेयरों के लेनदेन पर रोक लगा दी गई है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को यह जानकारी दी। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि उसने मंगलवार से दो दिन तक हरियाणा के गुरुग्राम और जींद में 'प्रोबो मीडिया टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड' नाम की फर्म समेत उसके प्रवर्तक सचिन सुभाषचंद्र गुप्ता और आशीष गर्ग के चार परिसरों में छापेमारी की। कंपनी 'प्रोबो' नाम से एक मोबाइल ऐप और वेबसाइट संचालित करती थी। हरियाणा के गुरुग्राम और पलवल तथा उत्तर प्रदेश के आगरा में इस कंपनी और उसके प्रवर्तकों के खिलाफ दर्ज कई प्राथमिकी के बाद धन शोधन का यह मामला सामने आया। ईडी के अनुसार, शिकायतकर्ताओं ने पुलिस को बताया कि उनके साथ धोखा हुआ है और बेईमानी से उन्हें एक योजना पेश की गई, जिसमें सरल रूप से 'हां या नहीं' प्रश्नों के माध्यम से पैसा कमाने के नाम पर जाल में फंसाया गया। जबकि वास्तव में यह साजिश है जो कथित रूप से अधिक रिटर्न कमाने का लालच देकर लोगों को अधिक निवेश करने के लिए लुभाती है और जुआ को बढ़ावा देती है।

घुटने और हिप रिप्लेसमेंट में रोबोटिक क्रांति!

Dr Santosh Kumar

कोलकाता स्थित बेले व्यू क्लिनिक में जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी के निदेशक, प्रसिद्ध जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. संतोष कुमार के पास 17 वर्षों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने अब तक 35 हजार से अधिक सफल सर्जरी की हैं। वह **संतोष कुमार** हिप और नी फाउंडेशन और मोमेंटम ऑर्थोकेयर के संस्थापक भी हैं, जो जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन का एक समर्पित समूह है, जो हिप और घुटने के प्रतिस्थापन में नवीनता और सुधार के लिए प्रतिबद्ध हैं।

डॉ. कुमार का मानना है कि एक संगठन की ताकत उसकी टीम में होती है। उनकी टीम में कई विशेषज्ञ ऑर्थोपेडिक सर्जन, चिकित्सक, सहायक, तकनीशियन और फिजियोथेरेपिस्ट शामिल हैं। डॉ. कुमार का उद्देश्य व्यक्तिगत कौशल, दक्षता, व्यापक अनुभव और विश्वास को स्वास्थ्य सेवा के फ्रंटलाइन में एकीकृत करना है।

साल 2011 में, **डॉ. कुमार** ने कंप्यूटर-समर्थित जॉइंट रिप्लेसमेंट के लिए 'ऑर्थोपायलट' उपकरण का उपयोग किया था। पिछले वर्ष, उन्होंने इस प्रक्रिया को और बेहतर बनाने के लिए रोबोटिक आर्म का भी समावेश किया, जिससे सर्जरी में और अधिक सटीकता प्राप्त हो रही है। हिप और घुटने के प्रतिस्थापन में बायोमेकानिक्स, जैसे एक सस्पेंशन ब्रिज की यांत्रिकी, का महत्व है और यह बेहतर तरीके से नेविगेशन और रोबोटिक आर्म द्वारा हासिल किया जाता है।

डॉ. संतोष कुमार यह भी मानते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑगमेंटेड रियलिटी

जैसे आधुनिक उपकरण अब सर्जन के हाथों में हैं, जो सर्जरी को और भी सटीक और प्रभावी बनाते हैं। डॉ. कुमार का उद्देश्य घुटना और हिप रिप्लेसमेंट सर्जरी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छूने के साथ-साथ मरीजों को बेहतर जीवन जीने के अवसर प्रदान करना है। उनके नेतृत्व में, मोमेंटम ऑर्थोकेयर और संतोष कुमार हिप और नी फाउंडेशन ने सर्जरी में एक नया मानक स्थापित किया है।

डॉ. कुमार का कहना है कि सही तरीके से किया गया जॉइंट रिप्लेसमेंट 25 वर्षों से अधिक तक चल सकता है और अगर आवश्यक हो, तो इसे पुनः किया जा सकता है, जिसे 'रिवीजन जॉइंट रिप्लेसमेंट' कहा जाता है। डॉ. कुमार और उनकी टीम कोलकाता में नियमित रूप से इन रिवीजन प्रक्रियाओं का संचालन करते हैं।

नवीनतम तकनीक

डॉ. संतोष कुमार ने घुटने और हिप रिप्लेसमेंट में नए विकास के बारे में बताया। उन्होंने मोबाइल बेयरिंग रोटेटिंग प्लेटफॉर्म घुटने के रिप्लेसमेंट की बात की, जो खासतौर पर पैरों को क्रॉस करके बैठने के लिए डिजाइन किए गए हैं। इसके अलावा, कम संपर्क तनाव डिजाइन से इम्प्लांट के जीवनकाल में वृद्धि होती है। काइनेमेटिक एलाइनमेंट का उपयोग करके मेडियल पिवट घुटने ने घुटने के कृत्रिम जोड़ को जितना संभव हो प्राकृतिक घुटने के करीब लाने में मदद की है। **डॉ. संतोष कुमार** का कहना है कि पूरी प्रक्रिया को दर्द रहित बनाना उनका प्रमुख उद्देश्य है, जिसे उच्च सटीकता वाली नर्व ब्लॉक्स और मल्टीमोडल एनाल्जेसिया तकनीकों भी नहीं रहता।

-जॉइंट रिप्लेसमेंट के लिए सुलभ और किफायती हब

डॉ. संतोष कुमार का कहना है कि संतोष कुमार हिप और नी फाउंडेशन और मोमेंटम ऑर्थोकेयर की स्थापना का मुख्य उद्देश्य पूर्व भारत में जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी के लिए एक किफायती और स्थानीय केंद्र बनाना था।

-फ्री वीडियो कंसल्टेशन और यात्रा खर्च की सुविधा

इसके अलावा, **डॉ. कुमार** अपने मरीजों और उनके साथ आने वाले रिश्तेदारों के लिए बिहार और झारखंड से इलाज के लिए आने वाले मरीजों के यात्रा खर्च को भी वापस करते हैं और उन्हें मुफ्त

द्वारा प्राप्त किया जाता है।

-स्टिचलेस सर्जरी का नया युग

डॉ. कुमार बताते हैं कि आजकल वे स्टिचलेस सर्जरी करते हैं, जिससे मरीज को सर्जरी के कुछ ही दिनों बाद स्नान करने की अनुमति मिलती है और कोई भी स्टिच हटाने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे लगभग कोई निशान

वीडियो कंसल्टेशन की सुविधा भी प्रदान करते हैं।

डॉ. संतोष कुमार और उनकी टीम का उद्देश्य जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके मरीजों को बेहतर और दर्दमुक्त जीवन प्रदान करना है।

For additional information, feel free to communicate with Dr. Santosh Kumar at Plot number 236, Lake Town, Block B, Kolkata 700089; email: sandr@gmail.com; WhatsApp or call: 6289962271 / 9831911584; or visit: Belle Vue Clinic, Loudon Street, Kolkata.

राजनीतिक एकजुटता व जन संकल्प जरूरी

हाल के दिनों में हिमालयी राज्यों खासकर हिमाचल व उत्तराखंड में अतिवृष्टि और बादल फटने की घटनाओं में जिस तेजी से पुनरावृत्ति हुई है, उसे मौसम के चरम के रूप में देखे जाने की जरूरत है। हालांकि, तात्कालिक जरूरत आपदा प्रभावित जिलों में राहत, बचाव व पुनर्वास के प्रयासों में तेजी लाने की है, लेकिन सबसे बड़ी जरूरत मौसम के चरम के बीच अचानक आती बाढ़ और बार-बार बादल फटने के कारणों को भी समझने की है। हाल ही में, इन्हीं मुद्दों की तरफ हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने भी ध्यान खींचा है। निस्संदेह, इन कारणों की पड़ताल के लिए विषय विशेषज्ञों की सहायता लेना भी जरूरी है। पिछले दिनों हिमाचल में आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक में मुख्यमंत्री ने उन उपायों की सूची पर चर्चा की, जिन्हें तत्काल लागू करने की आवश्यकता है। इन उपायों में नदियों में अवैज्ञानिक तरीके से मलबा फेंकने की जांच, नियमित मौसम अपडेट देना और नदी-नालों से कम से कम सौ मीटर की दूरी पर घरों का निर्माण करना शामिल है। लेकिन इसके प्रभावी लक्ष्य तभी हासिल किए जा सकते हैं जब इस बाबत किसी ठोस योजना को अमलीजामा पहनाया जाए और साथ ही नीतियों के क्रियान्वयन की समय सीमा निश्चित की जाए। निश्चित रूप से मौजूदा संकट को देखते हुए युद्धस्तर पर काम करने की जरूरत है। वह समय चला गया जब सरसरे आदेश दिये जाते और सिफारिशें की जाती थीं। कानूनों और नियमों की अनदेखी के खिलाफ सभी एजेंसियों को तालमेल बैठाकर इस दिशा में अभियान चलाने की जरूरत है। वनों की अवैध कटाई, अनियोजित निर्माण और अवैज्ञानिक विकास प्रथाओं पर लगाम लगाना बेहद जरूरी है। इसके लिये सरकारी मशीनरी को मिशन मोड में काम करने की जरूरत होगी। जिसके लिये मजबूत राजनीतिक इच्छा शक्ति की जरूरत है। भले ही राज्य की सत्ता में दो दलों का वर्चस्व हो और उनकी विचारधाराओं में टकराव रहा हो, लेकिन इस मुद्दे पर एकजुट होकर संकट का मुकाबला करने की जरूरत है।

निश्चय ही हाल के वर्षों में पहाड़ विरोधी विकास ने हिमालयी राज्यों की अस्मिता को आहत किया है। हिमालयी राज्यों में लोग पहाड़ों के मूल चरित्र में हस्तक्षेप करने वाले विकास की विसंगतियों की कीमत चुके रहे हैं। अब चाहे बड़े बांध हों या फोर लेन सड़के हों। निस्संदेह, विकास हर राज्य की प्राथमिकता है, लेकिन विकास योजनाओं को पहाड़ों की जरूरत के मुताबिक बनाया जाना चाहिए। इन राज्यों में स्थितियां विकट हैं और हालात और खराब होने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। भूस्खलन की लगातार बढ़ती घटनाएं और दरकती सड़कें इसकी बानगी मात्र हैं। कुल मिलाकर पहाड़ों के अस्तित्व पर संकट बढ़ा है। निस्संदेह, मौजूदा रणनीति और नीतियां इस संकट से निबटने में सक्षम नहीं हैं। सत्ता में बैठे लोगों के लिये जरूरी है कि वे मौसम विशेषज्ञों, पर्यावरणविदों और क्षेत्र के अनुभवी लोगों से राय लें। साथ ही तकनीकी समाधानों को वरीयता दी जाए। इसमें दो राय नहीं कि मानव जनित समस्याओं के निदान के लिये मानवीय दृष्टि से संवेदनशील समाधान तलाशने की जरूरत है। निश्चित रूप से इसमें समुदाय के तौर पर एकजुटता के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं रह जाता। समय आ गया है कि हम एक बार फिर से पहाड़ों के अनुरूप जीवन शैली को अपनाएं। पहाड़ हमारी आवश्यकता तो पूरी कर सकते हैं, लेकिन वे इंसान की विलासिता का बोझ सहन करने को तैयार नहीं हैं। निश्चित ही आधुनिकता की आंधी में संयम का जीवन और आवश्यकताओं को सीमित करना कठिन कार्य है, लेकिन बचाव का संभवत: अंतिम उपाय यही है। बहुमंजिला इमारतों को सीमित करना, जल निकासी की समुचित व्यवस्था और निर्माण से पहले जमीन की क्षमता का आकलन करना जरूरी हो जाता है। नदियों में होने वाले अवैध खनन को रोकना भी उतना जरूरी है, जितना जंगलों का कटान रोकना जरूरी है। पहाड़ों को उस हरीतिमा से ढकना होगा जो भूस्खलन व मिट्टी के कटाव को रोकने में सक्षम हो। साथ ही नदियों के स्वाभाविक प्रवाह को बाधित करने वाले कारकों को दूर करने की भी जरूरत है। दरअसल, नदियां अधिक जल प्रवाह होने पर हमेशा अपने विस्तार क्षेत्र को ही तलाशती हैं।

आज का पंचांग

कोलकाता : 10 जुलाई, गुरुवार, 2025, विक्रम सम्वत् 2082, आषाढ़ शुक्लपक्ष पूर्णिमा, 26:04 तक, नक्षत्र : पूर्वाषाढ़ा, 29:48 तक, योग : इंद्र, 21:25 तक, सूर्योदय: 4:58, सूर्यास्त: 18:25, चन्द्रोदय : 18:17, चन्द्रास्त: 04:04, शक सम्वत: 1947 विश्वावसु, सूर्य राशि : मिथुन, चन्द्र राशि : धनु, राहू काल : 13:21 से 15:01

राशिफल

मेष : मेष राशि के लोगों को करियर में बड़ी सफलता मिल सकती है। कोई महत्वपूर्ण डील दोपहर तक फाइनल हो सकती है जिससे आपकी प्रफेशनल साख बढ़ेगी।

वृष : वृषभ राशि के लोगों का दिन काफी व्यस्तता से भरा होगा। आप अपने व्यापार या करियर के विस्तार की नई योजनाओं में व्यस्त रहेंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में लाभ मिलेगा।

मिथुन : मिथुन राशि के लोगों का भाग्य साथ दे रहा है। रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े लोगों के लिए दिन विशेष लाभकारी रहेगा। फ्रीलांसर, डिजाइनर, लेखक आदि के लिए नए क्लाइंट मिलने की संभावना है।

कर्क : कर्क राशि के लोगों का दिन शुभ है। आप अपनी सृजनात्मकता से करियर में एक नया मुकाम हासिल कर सकते हैं। शाम को अचानक कोई लाभ या बोनस मिल सकता है।

सिंह : सिंह राशि के लोगों का दिन काफी व्यस्त है। लेकिन आपके लिए कई नई संभावनाएं खुलने वाली हैं। जॉब चेंज या प्रमोशन की बात आगे बढ़ सकती है।

कन्या : कन्या राशि वालों के लिए आर्थिक मामलों में बहुत सतर्कता से काम करने का है। किसी पुराने लेनदेन में कानूनी उलझन संभव है, अतः दस्तावेजों की दोबारा जांच करें।

तुला : तुला राशि राशि के लोगों के लिए धन, करियर और साझेदारी के लिए दिन शुभ है। यदि आप नया व्यवसाय या वेंचर शुरू करने की सोच रहे हैं, तो आज का दिन श्रेष्ठ है।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि के लोगों का भाग्य साथ दे रहा है। आपके माली हालात में सुधार के योग बन रहे हैं। प्रफेशनल्स को बोनस या परफॉर्मेंस इंसेंटिव मिल सकता है।

धनु : धनु राशि के लोगों को लाभ होगा। दिन जोखिम और अवसर दोनों से भरा रहेगा। स्टार्टअप, फिनटेक या इनोवेटिव प्रॉजेक्ट्स में निवेश करने वाले लोग सफलता की ओर बढ़ सकते हैं।

मकर : मकर राशि करियर और व्यापार दोनों में आज गति आएगी। कई तरह के प्रॉजेक्ट्स एक साथ हाथ में आने से कार्यभार बढ़ेगा लेकिन साथ ही वित्तीय लाभ भी मिलेगा।

कुम्भ : कुंभ राशि के लोगों का दिन आर्थिक मामलों में संभावनाओं से भरा होगा। स्वास्थ्य पर खर्च की संभावना से आर्थिक संतुलन बिगड़ सकता है। व्यापारियों के लिए नए आइडिया लाभ दे सकते हैं।

मीन : मीन राशि के लोगों का दिन भाग्य का साथ दे रहा है। वित्तीय दृष्टि से दिन शुभ है। कोई पुराना निवेश जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट या शेयर अप्रत्याशित लाभ दे सकता है।

गुरु पूर्णिमा: मानवता को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने वाला पर्व

अर्जुन राम मेघवाल
केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार

भारत की सांस्कृतिक विरासत हमें मानवीय मूल्यों से परिचित कराती है तथा ज्ञान और शाश्वत शिक्षा प्रदान करती है। इसका विविध एवं सर्वव्यापी स्वरूप सामूहिक चेतना को जागृत करता है जिसकी अभिव्यक्ति भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों के रूप में होती है। ये त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं हैं बल्कि ये हमारी प्रकृति के साथ जुड़ाव तथा वैज्ञानिक सोच एवं आध्यात्मिक चिंतन से जुड़े हैं। गुरु पूर्णिमा एक ऐसा ही विशेष अवसर है जो हमें इतिहास में घटित घटनाओं के बारे में रूककर विचार करने और उन्हें समझने का अवसर प्रदान करता है। यह हमें यह जानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि विगत की परिस्थितियों में अब क्या बदलाव आया है, किन बातों को हम अभी भी अपनाए हुए हैं और हमने अपने पीछे क्या कुछ छोड़ दिया है? हमने व्यक्ति के रूप में कितनी और सामूहिक रूप में कितनी उपलब्धियां हासिल की हैं? अपनाने और छोड़ने के इस दौर में हमारा साथ किन लोगों ने सबसे अधिक दिया? जीवन के उथल-पुथल एवं दुख से भरे समय में जबकि हमारा काफी अधिक पतन हो सकता था वैसे अस्थिर समय में किसने हमारा साथ दिया? ये सभी ऐसे प्रश्न हैं जिनके समाधान के लिए हमें गुरु या एक पथ-प्रदर्शक शक्ति की सर्वाधिक अहम भूमिका होती है चाहे वह कोई व्यक्ति हो, सिद्धांत हो या हमारे अंतर्मन की शक्ति हो जो हमारी जीवन यात्रा के दौरान सर्वाधिक शक्तिशाली मित्र के रूप में हमारा साथ निभाती है। समय की कसौटी पर खरे उतरे वे कौन से सिद्धांत हैं, जो हमें जीवन के पथ पर एक संतुलित यात्री बने रहने में सफल बनाते हैं। हमारे जीवन की इन सभी विविध परिस्थितियों के बीच प्रायः अदृश्य अथवा दृश्य, मूर्त या अमूर्त ऐसी शक्तियां होती हैं चाहे वो किसी पथ-प्रदर्शक का हाथ हो या कोई दिव्य विचार हो, मां का सानिध्य हो, शिक्षक के ज्ञान भरे शब्द हों या किसी मित्र का साथ हो जो हमारा पथ-प्रदर्शक बन जाता है। अतः गुरु पूर्णिमा ऐसे सभी शक्तियों को चाहे वह दृश्य हों अथवा अदृश्य, जो हमारा मार्गदर्शन करती हों, हमें सही रूप में ढालती हों और हमारे जीवन में उन्नति के पथ पर हमारा साथ देती हों, सभी को सम्मानित करने का एक पवित्र अवसर है।

गुरु पूर्णिमा का त्योहार व्यक्ति के जीवन और उसके सामाजिक मूल्यों को एक सही रूप में ढालने में गुरु की भूमिका को सम्मानित करने की एक शाश्वत परंपरा है। आसाढ़ मास की पूर्णिमा के इस दिन का गहरा आध्यात्मिक, ऐतिहासिक तथा सामयिक महत्व है क्योंकि इसी दिन आदिगुरु भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान प्रदान किया था। इसी दिन महर्षि वेदव्यास की जन्म जयंती भी मनाई जाती है। इसके साथ ही, पूर्णिमा के दिन से चतुर्मास आरंभ होते हैं जो मानसून के दौरान के पवित्र चार महीने हैं जबकि साधु-संत किसी एक ही स्थान पर रहकर अपने शिष्यों को ज्ञान देते हैं। आसाढ़ मास की पूर्णिमा के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस दिन चांद के शीतल प्रकाश की ऊर्जा हमारे आंतरिक मन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करती है। गुरु पूर्णिमा का यह त्योहार हमें उन लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है जिन्होंने हमारे मन में ज्ञान की ज्योति जगाई है।

संस्कृत शब्द गुरु दो शब्दों 'गु' (अंधकार) और 'रु' (हटाना) का संयोजन है जिसका अर्थ होता है एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे मन से अंधकार अर्थात अज्ञानता को दूर करता हो। प्राचीन वैदिक परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा शिक्षा का आधार थी। गुरुकुल में शिक्षार्थियों को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करके उन्हें विचारशील बनाया जाता था तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाकर उनकी नैतिक दुविधाओं का समाधान किया जाता था। गुरुकुल में शिक्षा की यह प्रक्रिया शिक्षार्थियों को कर्म के माध्यम से मूल्य आधारित जीवन जीने व चरित्र निर्माण करने के लिए निरंतर प्रेरित करने की प्रक्रिया थी। गुरु के महत्व और महानता को केवल शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। गुरु मात्र एक शिक्षक ही नहीं होते बल्कि उनकी उपस्थिति ही एक ऐसी जीवंत शक्ति, एक ऐसी अनुभूति होती है जो शक्ति, मार्गदर्शन और प्रेरणा का एक निरंतर स्रोत होती है। जिस प्रकार पूर्णिमा संपूर्णता, शुद्धता और प्रकाश का प्रतीक है ठीक उसी प्रकार गुरु में भी वैसी ही महानता होती है और गुरु भी ज्ञान से संपूर्ण, निष्कपट और मन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के स्रोत होते हैं।

प्रसिद्ध संत कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से और शिष्य की तुलना मिट्टी के कच्चे बर्तन से करते हुए कहा है कि,
गुरु कुम्हार है, शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट। अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

इसका अर्थ है: गुरु कुम्हार है और शिष्य मिट्टी का घड़ा है। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को भीतर से हाथ का सहारा देकर और बाहर से चोट मारकर गढ़ता है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को भीतर से प्रेम, करुणा और ज्ञान का सहारा देकर और बाहर से डांट-फटकार लगाकर उसकी बुराइयों को दूर करता है और उसे अनुशासित व परिष्कृत करता है।

गुरु एक छिपे हुए और कभी भी खत्म न होने वाले ज्ञान का भंडार है – उनके आशीर्वाद मौन होते हुए भी जीवन में आमूल बदलाव लाने वाले होते हैं और शिष्य के मन में सच्चाई और अच्छाई से जुड़े मूल्यों से युक्त ज्ञान व बुद्धिमत्ता भरते हैं। रामायण काल में विश्वामित्र और भगवान राम के बीच तथा भक्तिकाल में गुरु रविदास और मीरा बाई, रामानंद और कबीर, गुरु नानक देव जी और उनके बाद हुए गुरुओं के बीच का संबंध- सभी भारतीय सभ्यता में आध्यात्मिक और बौद्धिक आदान-प्रदान की अमिट विरासत के उदाहरण हैं। इन पवित्र बंधनों ने समाज को एक नैतिक ढांचा प्रदान किया और इसके आंतरिक विकास को बढ़ावा दिया। आधुनिक युग में, देश के लोगों के मन में राष्ट्रवाद की अलख जगाने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज तथा समाज को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने में समर्थ गुरु रामदास, स्वामी विरजानंद सरस्वती और स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। इसी गुरु परंपरा में स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी हुए हैं जिनकी शिक्षा ने स्वामी विवेकानंद को एक आध्यात्मिक महापुरुष बनाया, जिन्होंने बाद में भारतीय दर्शन को पाश्चात्य देशों तक पहुँचाया। इसी प्रकार, महावतार बाबाजी, लाहिड़ी महाशय, श्री युक्तेश्वर और परमहंस योगानंद जैसे महापुरुषों द्वारा दिए गए ज्ञान की ज्योति दुनिया भर के साधकों का मार्गदर्शन करती रहेगी और उन्हें अपने मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। उनके द्वारा दिए गए ज्ञान ने विश्व-बंधुत्व की भावना को बढ़ाया है और लोगों को ज्ञान की दिव्य दृष्टि प्रदान की है। विश्व के सभी देशों में देवत्व के प्रति निष्ठा, समर्पण और व्यक्तिगत संबंध को अभिव्यक्त करने की परंपरा देखी जाती है। पश्चिमी देशों में ईश्वर की प्रार्थना के दौरान 'ओ माई मास्टर' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो ईश्वर के साथ गहरे आध्यात्मिक जुड़ाव का सूचक है।

प्रथम गुरु के रूप में मां शिशु को इस नए विश्व से परिचित कराती है और जीवन में पहला कदम उठाना सिखाती है। अगर दूसरे नजरिये से देखा जाए तो हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियां- कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नाक – बाहरी दुनिया से संवेदी सूचनाएं प्राप्त करती हैं, पांचों कर्मेन्द्रियां- हाथ, पांव, वाणी, गुदा, जननांग- शारीरिक क्रियाएं करती हैं तथा अंतःकरण की चारों वृत्तियां – मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त हमारे विचारों, भावनाओं और क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। यदि संक्षेप में कहा जाए तो, हमारी ज्ञानेंद्रियां प्रत्यक्ष जगत से प्राप्त जानकारियों को एकत्र करती हैं, मन उन्हें समझता है, बुद्धि निर्णय लेती है, अहंकार अनुभव को वैयक्तिक बनाता है, कर्मेंद्रियाँ क्रिया संपन्न करती हैं और चित्त उसे स्मृति के रूप में दर्ज करता है। गुरु ज्ञान के जिज्ञासुओं को ज्ञान प्रदान करता है जबकि सद्गुरु अपने शिष्यों में बुद्धिमत्ता का संचार करता है। उनके मार्गदर्शन से ही इन सभी अदृश्य आंतरिक जटिलताओं के बीच हमारे मन में सद्गुणों का संचार होता है।

सभी सद्गुणों से युक्त व्यक्ति एक पुष्ट फलों से युक्त फलते-फूलते वृक्ष के समान है जिसकी मज़बूत जड़ों को गुरु के ज्ञान, परिवार के सहयोग और समग्र समाज के मूल्यों से सींचा गया हो। व्यक्ति के कर्म इन आंतरिक मूल्यों की केवल अभिव्यक्ति हैं। पूर्णिमा का विशेष अवसर इन सभी तथ्यों पर आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करता है। यह मात्र एक खगोलीय घटना नहीं है, यह एक आध्यात्मिक दर्पण है, एक सांस्कृतिक समारोह है, एक वैज्ञानिक घटना है, तथा जीवन में नवीनता लाने, चिंतन करने तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का एक गहन प्रतीकात्मक अवसर है। इसका महत्व धर्म, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं और सदियों तक विस्तीर्ण है तथा हमें हमारे अंतःकरण में स्थित प्रकृति की लय और चक्र की याद दिलाता है। पूर्णिमा संपूर्णता और ज्ञानोदय का प्रतीक है- एक ऐसा समय है जबकि हम अपने स्वत्व की खोज सर्वाधिक स्पष्ट रूप में कर सकते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को पूरी तरह से परावर्तित करता है। योगी और संत प्रायः पूर्णिमा को गहन ध्यान, जप, उपवास और दिव्य ऊर्जा से जुड़ने के लिए एक आदर्श समय मानते हैं।

गुरु पूर्णिमा सीखने, ज्ञान अर्जन करने और कृतज्ञता व्यक्त करने का त्योहार है। सूचना की भरमार, भ्रम, तुलना और प्रतिस्पर्धा के इस युग में एक सच्चे गुरु की हमारे जीवन में उपस्थिति काफी महत्वपूर्ण है चाहे वह आध्यात्मिक गुरु हों अथवा कोई प्रशिक्षक, शिक्षा प्रदाता, माता-पिता या डिजिटल मार्गदर्शक क्यों न हों। उनकी उपस्थिति धर्म एवं धार्मिक अनुष्ठानों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। 21वीं सदी के अनिश्चितता से भरे दौर में जबकि भू-राजनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहे हैं, आतंकवाद, उग्रवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर युद्ध और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ युवाओं को परेशान कर रही हैं, गुरुओं और संतों की ज्ञान परंपरा का उत्सव गुरु पूर्णिमा पूरी दुनिया के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। आज के युग में लोगों द्वारा नैतिकता पर बिलकुल विचार नहीं करने एवं गलत और सही कार्यों के बीच अंतर नहीं कर पाने के कारण लोगों के सामने ढेर सारी चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं तथा सामाजिक ताना-बाना बिखर रहा है। ऐसे में गुरु की उपस्थिति मात्र से ही लोगों को गलत रास्ते पर जाने से रोका जा सकता है।

आज हम जैसे-जैसे डिजिटल युग की ओर बढ़ रहे हैं, गुरु पूर्णिमा का शाश्वत संदेश हमें ज्ञान प्राप्त करने, अपने मन की शक्ति से मार्गदर्शन प्राप्त करने, अपने गुरु और मार्गदर्शक का सम्मान करने तथा दूसरों के लिए ज्ञान का स्रोत बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह समाज में मानव मूल्यों को पोषित एवं सृजित करने का एक माध्यम सिद्ध होगा।

यूपी/बिहार

बिहार : मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के खिलाफ राहुल के नेतृत्व में बंद, आम जनजीवन प्रभावित

पटना : बिहार में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में बुधवार को विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन द्वारा विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के खिलाफ बुलाए गए बंद से आम जनजीवन प्रभावित रहा। राज्य में 'महागठबंधन' के नाम से जाने जाने वाले विपक्षी गठबंधन ने उस दिन राज्यव्यापी बंद का आयोजन किया था, जिस दिन वह नए श्रम संहिताओं के विरोध में मजदूर संघों द्वारा आहूत राष्ट्रव्यापी हड़ताल को समर्थन दे रहा था। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पटना पहुंचे और उनके द्वारा आयोजित विरोध प्रदर्शन में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता एवं बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) महासचिव एमए बेबी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के डी राजा और भाकपा (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन के दीपांकर भट्टाचार्य भी शामिल हुए। विपक्षी 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस' (इंडिया गठबंधन)के बड़े नेताओं ने एक विशाल जुलूस के रूप में यहां निर्वाचन आयोग कार्यालय तक पहुंचने की योजना बनाई थी, लेकिन उन्हें कुछ मीटर दूर शहीद स्मारक के सामने रोक दिया गया। यह स्मारक भारत छोड़ो आंदोलन के सात युवा शहीदों की याद में बनाया गया था, जो विधानसभा परिसर के ठीक सामने है। गांधी ने संविधान की एक प्रति हाथ में लेकर लोगों को संबोधित किया। उन्होंने आरोप लगाया कि निर्वाचन आयोग ''लोगों की सेवा करने के बजाय भाजपा (भारतीय जनता पार्टी)की सेवा कर'' रही है। गांधी ने दावा किया कि ''बिहार में महाराष्ट्र मॉडल को दोहराने'' का प्रयास किया जा रहा है।

महाराष्ट्र चुनाव में धांधली हुई, हम बिहार में ऐसा नहीं होने देंगे: राहुल गांधी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बुधवार को आरोप लगाया कि 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को लाभ पहुंचाने के लिए ''धांधली'' की गई और केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार इस साल के अंत में होने वाले बिहार चुनावों में भी ऐसा करना चाहती है। गांधी ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के खिलाफ पटना में निर्वाचन आयोग के कार्यालय तक विरोध मार्च के दौरान 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस) गठबंधन के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, ''महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भाजपा और राजग को लाभ पहुंचाने के लिए धांधली की गई थी। वे बिहार में भी इसे दोहराना चाहते हैं जो हम होने नहीं देंगे।''

समाज व राष्ट्र विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई जारी, ऐसे लोगों को चकनाचूर कर देंगे: आदित्यनाथ

योगी आदित्यनाथ ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत अयोध्या में पौधारोपण किया

आजमगढ़,(उप्र) : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि समाज विरोधी व राष्ट्र विरोधी हरकतों में लिप्त तत्वों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, और ऐसा करने वाले लोगों को चकनाचूर कर दिया जाएगा। उन्होंने आजमगढ़ में एक कार्यक्रम में कहा, मंगलवार को बलरामपुर में एक जल्लाद को हम लोगों ने गिरफ्तार किया है। वह जल्लाद हिंदु बहन-बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ करता था। पैसे में सौदेबाजी करता था, लेकिन अब ऐसे तत्वों के साथ सख्ती की जा रही है। हम समाज को टूटने भी नहीं देंगे और राष्ट्रविरोधी-समाजविरोधी तत्वों को भी चकनाचूर करके रहेंगे। मुख्यमंत्री का इशारा संभवत: धर्मांतरण रैकेट के कथित सरगना जलालुद्दीन की तरफ था। आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा था कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि जलालुद्दीन की गतिविधियां न केवल असामाजिक हैं, बल्कि राष्ट्रविरोधी भी हैं। राज्य में कानून-व्यवस्था से जुड़े मामलों में किसी भी तरह की ढील न बरतने का आश्वासन देते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, आरोपी और उसके गिरोह से जुड़े अन्य अपराधियों की संपत्ति जब्त की जाएगी और उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी। एक बयान के मुताबिक आदित्यनाथ ने आजमगढ़ के सठियांव ब्लॉक के केरमा गांव में एक्सप्रेसवे के किनारे हरिशंकरी वाटिका की स्थापना की। आजमगढ़ को 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत 60 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य मिला था। मुख्यमंत्री योगी ने यहां 60 लाख वां पौधा लगाया।

वर्ग पहेली नं. 3148

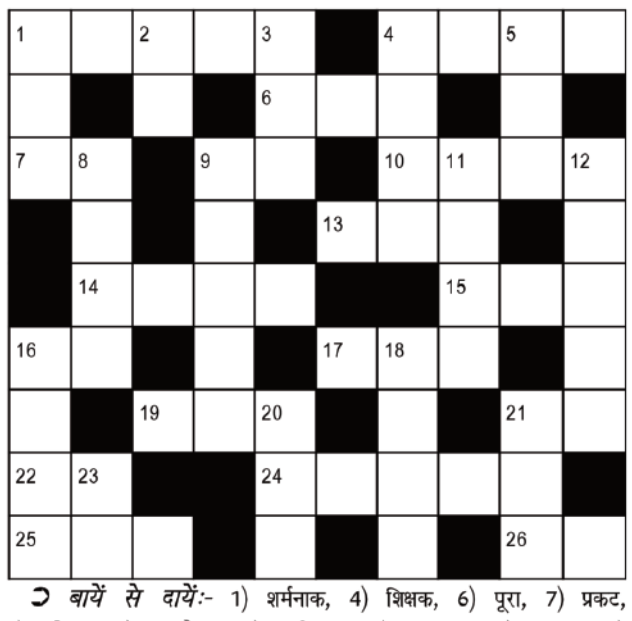

ऊपर से नीचे:- 1) चुटकुला, 2) उत्सव, 3) टीस, 4) आकस्मिक, 5) आँखों के ओझल, 8) ओस, 9) शयनागार, 11) खलना, 12) क्रोधातिरेक से चेहरा लाल होना, 16) आलसी; निकम्मा, 18) पराधीन, 20) कामना, 21) शिकारी, 23) कसक.

(उत्तर: अगले अंक में)

बायें से दायें:- 1) शर्मनाक, 4) शिक्षक, 6) पूरा, 7) प्रकट, 9) संदेह, 10) नखरौट, 13) मुसीबत, 14) नयापन, 15) कुपुत्र, 16) धंधा, 17) निज का, 19) समूचा; बिना टूटा हुआ, 21) हासिल करना, 22) शिखर, 24) विष्णु का एक अवतार, 25) जीभ, 26) आहिस्ता.

पिछली पहेली का उत्तर

घि	नौ	ना	■	■	गो	ल	म	टो	ल
स	■	रा	ह	ज़	नी	■	■	ना	ता
ना	■	ज	■	रू	■	क	म	■	■
■	अं	गी	का	र	■	म	ल	म	ल
मौ	त	■	म	■	प	रा	या	■	■
■	रा	ह	च	ल	ता	■	ल	■	ख
शै	ल	■	ला	■	■	आ	म	ले	ट
श	■	■	ऊ	हा	पो	ह	■	■	म
व	र्जि	त	■	मी	■	त	ब	दी	ल

सुडोकू-पहेली-3105

		8						
2						7	5	
	9							
	6	7		9				2
9			1	6				
				7	2		4	
			6	3				4
			9		4			1
5		6						

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरना आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।

••••

आड़ी और खड़ी में एवं 3-3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान जरूर रखें।

सूडोकू पहेली - 3104 का उत्तर

5	6	2	4	1	7	8	9	3
4	3	1	6	8	9	7	2	5
8	7	9	5	2	3	4	6	1
9	4	6	8	5	2	3	1	7
3	8	5	9	7	1	6	4	2
2	1	7	3	4	6	9	5	8
1	9	4	7	3	5	2	8	6
6	5	3	2	9	8	1	7	4
7	2	8	1	6	4	5	3	9

'भारत बंद' का बंगाल में आंशिक असर

हड़ताल समर्थकों एवं पुलिस के बीच झड़प, कई इलाकों में छिटपुट हिंसा

कोलकाता, समाज्ञा : देश की 10 बड़ी ट्रेड यूनियनों और किसान संगठनों द्वारा आज बुलाये गए 'भारत बंद' के कारण जहां देश के तमाम भागों में बैंक से लेकर परिवहन समेत कई सेवाएं बाधित रही तो उक्त हड़ताल का बंगाल में आंशिक असर दिखा। हालांकि, राज्य में वामपंथी दलों के समर्थन से केंद्रीय ट्रेड यूनियनों द्वारा आयोजित देशव्यापी हड़ताल को पश्चिम बंगाल में कुछ पॉकेट अंचलों में ज़बरदस्त समर्थन मिला है। बंगाल के कई हिस्सों में भारत बंद को लेकर ट्रेड यूनियनों और वामपंथी संगठनों ने जोरदार प्रदर्शन किया। कई स्थानों पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प, गिरफ्तारियां और सड़क व रेल अवरोध की घटनाएं भी सामने आईं। हालांकि कई जगहों पर यातायात साधन सामान्य रूप से चलते रहे।

रायगंज, बागडोगरा, बालुरघाट, चोपड़ा, माल्दा, सिलीगुड़ी और जलपाईगुड़ी में बंद का मिला-जुला असर देखने को मिला। कई जगहों पर दुकानें बंद रहीं, जबकि कुछ स्थानों पर स्कूल और वाहन सामान्य रूप से चले। नक्सलबाड़ी में तृणमूल और माकपा कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई, वहीं माल्दा के चांचल में भी पुलिस और बंद समर्थकों के बीच टकराव हुआ। हावड़ा के डोमजुड़ में सुबह से ही माकपा समर्थक सड़कों पर उतर आए। उन्होंने बसों और ट्रकों को रोकने की कोशिश की, स्थानीय दुकानों को बंद कराने का प्रयास किया और चालकों को जबरन वाहन से उतारने का प्रयास किया। स्थिति तनावपूर्ण हो गई और पुलिस तथा रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) ने लाठीचार्ज कर हालात पर काबू पाया। इधर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के राज्य सचिव मो. सलीम ने आज दावा किया कि बैंकिंग, बीमा, परिवहन और कारखाना क्षेत्रों के श्रमिकों ने बड़ी संख्या में इस हड़ताल में हिस्सा लिया। कोलकाता स्थित पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में सलीम ने कहा कि श्रमिक वर्गों से इस हड़ताल को अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिली। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदर्शनकारियों को विभिन्न स्थानों पर पुलिस द्वारा बेरहमी से पीटा गया और जब-जब वे शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें हिरासत में लिया गया।

आम हड़ताल को राज्य में मिला जबरदस्त समर्थन : मोहम्मद सलीम

विपक्षी दल मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) ने बुधवार को दावा किया कि आम हड़ताल को राज्य में श्रमिक वर्गों से भारी समर्थन मिला। माकपा के प्रदेश सचिव मोहम्मद सलीम ने दावा किया कि बैंकिंग, बीमा, परिवहन क्षेत्र और कारखाना श्रमिकों ने हड़ताल में भारी भागीदारी की। इस दिन, पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हड़ताल को मज़दूर वर्ग से अभूतपूर्व समर्थन मिला। सलीम ने आरोप लगाया कि पुलिस ने विभिन्न स्थानों पर हड़ताल समर्थकों पर अंधाधुंध लाठीचार्ज किया और जहां भी उन्होंने प्रदर्शन करने की कोशिश की, उन्हें गिरफ्तार भी किया। उन्होंने कहा कि पुलिस और तृणमूल कांग्रेस ने हड़ताल को विफल करने की कोशिश में निंदनीय भूमिका निभाई। सलीम ने कहा कि हालांकिष हड़ताल का आह्वान 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियन ने केंद्र की नीतियों के ख़िलाफ़ किया था, लेकिन राज्य सरकार इसे विफल करने के लिए ज़्यादा सक्रिय हो गई। उन्होंने कहा खइ लोकतांत्रिक प्रदर्शन को अलोकतांत्रिक तरीके से रोकने की कोशिश की गई। सलीम ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस सरकार दिल्ली में अपने आकाओं को खुश करने के लिए अति सक्रिय हो रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में विभिन्न स्थानों पर कथित पुलिस अत्याचारों के खिलाफ अगले तीन दिन तक प्रदर्शन किए जाएंगे। सलीम ने कहा कि राज्य सरकार ने हड़ताल को विफल करने के लिए अधिक बसें चलाईं, लेकिन बड़ी संख्या में निजी बसें और अन्य परिवहन साधन सड़कों से नदारद रहे।

टाटा संस के चेयरमैन चंद्रशेखरन ने ममता बनर्जी से मुलाकात की

कोलकाता, समाज्ञा : टाटा समूह के प्रमुख एन चंद्रशेखरन ने बुधवार को राज्य सचिवालय नवान्न में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या टाटा समूह राज्य में नए निवेश की राह पर आगे बढ़ेगा? सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल से इस मुलाकात की तस्वीरें साझा की, जिसमें टाटा समूह के प्रमुख को उत्तरीय पहनाकर मुख्यमंत्री अभिनंदन करतीं दिख रही हैं। तृणमूल ने एक्स पर लिखा कि बंगाल सरकार राज्य को औद्योगिक क्षेत्र में आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने बंगाल के औद्योगिक विकास और उभरते अवसरों पर रचनात्मक संवाद के लिए टाटा संस और टाटा समूह के अध्यक्ष एन चंद्रशेखरन की मेजबानी की। इस बैठक में नवाचार, निवेश और समावेशी विकास को बढ़ावा देने वाली सार्थक सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए बंगाल की प्रतिबद्धता परिलक्षित हुई। पार्टी ने उम्मीद है कि यह चर्चा भविष्य के औद्योगिक निवेश में अहम भूमिका निभाएगी। चंद्रशेखरन की मुख्यमंत्री के साथ बैठक के दौरान राज्य के मुख्य सचिव मनोज पंत भी मौजूद थे। हालांकि, फिलहाल यह पता नहीं चल पाया है कि मुख्यमंत्री ने बैठक में टाटा समूह के प्रमुख के साथ क्या चर्चा की। न तो ममता और न ही चंद्रशेखरन ने इस बारे में सार्वजनिक रूप से कुछ कहा है।

आज रांची में गृह मंत्री शाह के साथ बैठक में शामिल नहीं होंगी ममता

कोलकाता, समाज्ञा : रांची में आज पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी मौजूद नहीं रहेंगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अगुवाई में होने वाली बैठक में पश्चिम बंगाल की ओर से मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य मौजूद रहेंगी। उनके साथ राज्य के मुख्य सचिव और वित्त सचिव भी रहेंगे। बता दें कि रांची में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में बंगाल के अलावा बिहार, झारखंड और ओडिशा के प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। पता चला है कि चारों राज्यों के करीब 70 प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। बताया जा रहा है कि बैठक में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को आमंत्रित किया गया था। हालांकि, वह इसमें शामिल नहीं हो पा रही हैं। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कारण वह बैठक में शामिल नहीं हो पाएंगी। उनकी जगह चंद्रिमा जा रही हैं।

कॉलेजों में असामाजिक गतिविधियों को रोकने के लिए पुलिस कमिश्नर ने दिए कड़े निर्देश

कोलकाता, समाज्ञा : साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज दुष्कर्म मामले को लेकर पूरे राज्य में हड़कंप मचा हुआ है। इसी के बीच कोलकाता पुलिस कमिश्नर मनोज वर्मा ने शहर के सभी थानों को निर्देश दिए हैं कि वे कॉलेजों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखें और कॉलेज सुरक्षा गार्डों को थाने के अधिकारियों के नंबर उपलब्ध कराएं। पुलिस कमिश्नर ने बताया कि कसबा मामले में पुलिस ने सभी जरूरी कदम उठा लिए हैं। मनोज वर्मा ने कहा कि जिस थाना क्षेत्र में कोई कॉलेज हो, वहां के पुलिस अधिकारी उस कॉलेज के सुरक्षा गार्डों से रोजाना संपर्क बनाए रखेंगे। अगर कॉलेज सुरक्षा गार्ड परिसर में किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि देखें तो वे तुरंत नजदीकी थाने को सूचित करेंगे। इसके लिए थाने के किसी एक अधिकारी का नंबर सुरक्षा गार्डों के पास हमेशा मौजूद रहेगा। इसके अलावा, पुलिस थाने कॉलेजों में जाकर कार्यशालाएं भी आयोजित करेंगे, जिसमें छात्र-छात्राओं को इस प्रकार के अपराधों की सजा और संबंधित कानूनी धाराओं के बारे में जागरूक किया जाएगा। पुलिस का उद्देश्य छात्रों में जागरूकता बढ़ाना और अपराध रोकना है। मनोज वर्मा ने यह भी बताया कि यदि पढ़ाई के निर्धारित समय के बाद कोई व्यक्ति जबरन कॉलेज परिसर में रहता है या वहां निजी या अनैतिक कामकाज करता है तो कॉलेज प्रशासन को इसे थाने को तुरंत सूचित करना होगा। पुलिस यह भी सुनिश्चित करेगी कि कॉलेजों में लगे सीसीटीवी कैमरे सही ढंग से काम कर रहे हैं या नहीं, इसके लिए थाने कॉलेज प्रशासन के साथ समन्वय बनाए रखेंगे। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि हर थाना अपने क्षेत्र के कॉलेजों पर लगातार नजर रखेगा ताकि छात्रों और संस्थानों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

बंगाल की वास्तविक स्थिति बहुत खराब : शुभेंदु अधिकारी

भाजपा नेता ने आरोप, पुलिस राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखने में फेल

कोलकाता, समाज्ञा : नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने कोलकाता के लॉ कालेज में छात्रा से सामूहिक दुष्कर्म की घटना को लेकर ममता सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि बंगाल की वास्तविक स्थिति बहुत खराब है। भाजपा नेता ने कहा कि हर महीने, हर हफ्ते बंगाल के हर हिस्से में इस तरह की घटनाएं होती हैं, पुलिस की भूमिका बहुत खराब है। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखने में फेल है, इसलिए कई मामलों में अदालत को सीबीआई को जांच करने का आदेश देना पड़ता है। शुभेंदु ने कटाक्ष करते हुए कहा कि पुलिस का सिर्फ दो एजेंडा है, पहला- मनी कलेक्ट करना और दूसरा- सत्तारूढ़ दल के लिए वोट की लूट करना। शुभेंदु ने मुस्लिमों बाहुल्य इलाकों में भाजपा को वोट नहीं मिलने को लेकर भी निराशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राज्य में जहां मुस्लिमों के बाहुल्य इलाके हैं, वहां वे (मुस्लिम समुदाय के लोग) केंद्र सरकार की योजनाओं का फायदा तो लेते हैं, लेकिन वोट नहीं देते हैं। विपक्षी आईएनडीआईए गठबंधन की सिर्फ एक मानसिकता है कि भाजपा के हिंदू वोटों को बांटो। शुभेंदु ने कहा कि बिना जाति-धर्म देखे केंद्र की मोदी सरकार सभी लोगों तक विकास योजना पहुंचाती है। बंगाल के चुनाव में भाजपा को मुस्लिमों का एक प्रतिशत से कम वोट मिलता है। उन्होंने कहा कि मैं मुस्लिमों से वोट देने की अपील कर सकता हूं, लेकिन फिर भी वे भाजपा को वोट नहीं देंगे। लॉ कालेज की घटना घटना पर शुभेंदु ने कहा कि बंगाल के कालेजों में बैठे पास आउट विद्यार्थी अपनी पार्टी की बदौलत आज वहां अनैतिक तरीके से अपना आधिपत्य जमाकर रखे हैं। उन्होंने तृणमूल छात्र परिषद पर कालेजों में आतंक फैलाने का आरोप लगाया।

न्यू अलीपुर में ट्रक तोड़फोड़ मामले में चार सब-इंस्पेक्टर निलंबित, विभागीय जांच का आदेश

कोलकाता, समाज्ञा : शहर कोलकाता के न्यू अलीपुर में ट्रक तोड़फोड़ मामले के आरोपी चार सब-इंस्पेक्टर को निलंबित कर दिया गया है। लालबाजार पुलिस मुख्यालय सूत्रों के अनुसार, उक्त चारों आरोपी सब-इंस्पेक्टरों के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश दिए गए हैं। आरोप है कि मंगलवार की रात न्यू अलीपुर में सड़क पर खड़ी कई ट्रकों में उक्त पुलिस अधिकारियों के द्वारा अचानक तोड़कर की गई थी। उक्त घटना से इलाके में तनाव फैल गया है। आरोप है कि रात के अंधेरे में सड़क पर खड़ी कई ट्रकों में बिना किसी पूर्व आदेश के ही अचानक तोड़कर की गई। ट्रकों के मालिकों ने इस पूरी घटना में पुलिस के खिलाफ रंगदारी मांगने का मुद्दा उठाया और थाने के सामने विरोध प्रदर्शन किया। सूत्रों के अनुसार, सीसीटीवी फुटेज की जांच के बाद, न्यू अलीपुर लॉरी तोड़फोड़ की घटना में चार पुलिस कर्मियों को निलंबित कर दिया गया और उनके खिलाफ विभागीय जांच के आदेश दिए गए। घटना के बाद, लॉरी मालिकों ने सवाल उठाया कि अगर उस इलाके में 40 सालों से लॉरी ऐसे ही खड़ी रहती थी, अचानक इस तरह से वाहनों में तोड़फोड़ क्यों की गई? स्थानीय लोग भी लॉरी चालकों की बात से सहमत हैं। पुलिस के बड़े अधिकारियों ने वाहन मालिकों आश्वासन दिया कि घटना की उचित जांच की जाएगी। आखिरकार, घटना में चार उप-निरीक्षकों के निलंबन के बाद, लॉरी मालिकों का गुस्सा कुछ कम हुआ है। हालांकि, उनका सवाल यह है कि 30-35 लॉरियों में तोड़फोड़ के इतने बड़े नुकसान की भरपाई कौन करेगा?

आरजी कर कांड : कोर्ट में पीड़िता के माता-पिता की याचिका खारिज, मौके पर जाने की अनुमति नहीं

कोर्ट ने कहा... 'जांच अभी जारी हैं, इसीलिए घटनास्थल पर जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती'

कोलकाता, समाज्ञा : महानगर के सियालदह कोर्ट ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में जहां डॉक्टर से दुष्कर्म व हत्या की घटना हुई थी उस मौके पर जाने की पीड़िता के माता-पिता की याचिका को खारिज कर दिया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि मामले की जांच अभी जारी है, ऐसे में घटनास्थल पर जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इससे पहले, पीड़िता के माता-पिता ने कलकत्ता हाई कोर्ट में इस संबंध में गुहार लगाई थी। हालांकि, हाई कोर्ट ने उन्हें निचली अदालत से संपर्क करने का निर्देश दिया था। इसके बाद, सियालदह कोर्ट में याचिका दायर की गई थी, जिस पर सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से याचिका का विरोध किया गया। कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए याचिका खारिज कर दी। अदालत ने कहा कि चूंकि, मामला जांच के अधीन है, इसलिए वर्तमान में घटनास्थल पर जाने की अनुमति देना संभव नहीं है। बता दें कि पिछले साल 9 अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के सेमिनार हाल में एक महिला ट्रेनी डाक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई थी, जिससे पूरे अस्पताल परिसर में सनसनी फैल गई थी। मामले की शुरुआती जांच कोलकाता पुलिस ने की थी, जिसमें घटनास्थल से जुटाए गए सबूतों और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर सिविक वालंटियर संजय राय को गिरफ्तार किया गया था।

हाई कोर्ट संजय रॉय की दोष मुक्त की अर्जी पर 16 जुलाई को करेगा सुनवाई

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने बुधवार को कहा कि वह आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की प्रशिक्षु महिला चिकित्सक से दुष्कर्म एवं हत्या से जुड़े मामले में सजायाफ्ता संजय रॉय की उस याचिका पर 16 जुलाई को सुनवाई करेगा, जिसमें उसने खुद को दोषमुक्त करने का अनुरोध किया है। बता दें कि संजय रॉय को इस मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। न्यायमूर्ति देबांगसु बसाक और न्यायमूर्ति प्रसन्नजीत बिस्वास की खंडपीठ के समक्ष पेश याचिका में रॉय ने दावा किया है कि वह अपराध के लिए दोषी नहीं है, लिहाजा उसे दोषमुक्त किया जाना चाहिए। उच्च न्यायालय ने रॉय के वकील से मामले से जुड़े सभी पक्षों को याचिका की प्रति देने को कहा। उच्च न्यायालय ने मामले की जांच करने वाले केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की अपील पहले ही स्वीकार कर ली है। हालांकि, उसने पश्चिम बंगाल सरकार की उस अपील पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें रॉय को निचली अदालत की ओर से सुनाई गई सजा को चुनौती दी गई थी। रॉय के लिए निर्धारित दंड से असंतुष्ट सीबीआई ने सजा बढ़ाने का अनुरोध करते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। सीबीआई की ओर से दलील दी गई है कि सजा के बिंदु पर सुनवाई के समय उसने निचली अदालत से अधिकतम दंड यानी मौत की सजा देने का अनुरोध किया था।

पूर्व रेलवे

निविदा सूचना सं. एसजी.निविदा/डीएसटीई/एसडीएच/554, दिनांक 08.07.2025, वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता, पूर्व रेलवे, आरएमएस बिल्डिंग, काइज़र स्ट्रीट, सियालदह, कोलकाता-700014 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **'ई'-निविदा सं. एसडीएसटीई/एसआईजी/टी/25/25-26/आरआरएसके। कार्य का नाम एवं इसका स्थान:** दमदम कैंट- दमदम कैंटोनमेंट (डीडीसी) स्टेशन पर आउटडोर सिग्नलिंग गियरों का प्रतिस्थापन। **निविदा मूल्य :** रु. 2,41,56,488.63, **निविदा कागजात का मूल्य :** शून्य। **बयाना राशि/बोली प्रतिभूति जमा की जाएगी :** रु.2,70,800/-, **कार्य की समापन अवधि:** 09 माह। **निविदा जमा देने की प्रारंभिक तिथि:** 21.07.2025, **निविदा जमा देने की अंतिम तिथि:** 04.08.2025 को 14.00 बजे तक। **निविदा बोली के खोलने की तिथि:** 04.08.2025 को 14.30 बजे। **विवरण यहां उपलब्ध है:** www.ireps.gov.in **तकनीकी पात्रता मानदंड:** निविदाकार ने निविदा आमंत्रण से पूर्व महीने के अंतिम दिन को समाप्त, पिछले 07 (सात) वर्षों के दौरान, निम्नलिखित श्रेणियों में से किसी एक कार्य का सफलतापूर्वक पूरा या पर्याप्त रूप से निष्पादन किया है: (i) तीन समरूप कार्य जिनमें से प्रत्येक की लागत निविदा के विज्ञापित मूल्य के 30% की समान राशि से कम न हो, या (ii) दो समरूप कार्य जिनमें से प्रत्येक की लागत निविदा के विज्ञापित मूल्य के 40% की समान राशि से कम न हो, या (iii) एक समरूप कार्य जिसकी लागत निविदा के विज्ञापित मूल्य के 60% की समान राशि से कम न हो। **वित्तीय पात्रता मानदंड:** निविदाकार का न्यूनतम औसत वार्षिक ठेकाजनित कारोबार V/N या 'V' होना चाहिए, जो भी कम हो, जहाँ V = निविदा का विज्ञापित मूल्य करोड़ रुपये में, N = कार्य पूरा करने के लिए निर्धारित वर्षों की संख्या जिसके लिए बोलियाँ आमंत्रित की गई हैं। औसत वार्षिक ठेकाजनित कारोबार की गणना लेखापरीक्षित तुलन पत्र के अनुसार पिछले तीन वित्तीय वर्षों में "कुल ठेकाजनित भुगतान" के औसत के रूप में की जाएगी। तथापि, यदि पिछले वर्ष का तुलन-पत्र अभी तैयार किया जाना है/लेखापरीक्षित किया जाना है, तो औसत वार्षिक ठेकाजनित कारोबार की गणना के लिए चौथे पिछले वर्ष के लेखापरीक्षित तुलन-पत्र को विचार में लिया जाएगा। निविदाकार जीसीसी 2022 के अनेक्सर-VIबी (मौजूदा निविदा कागजात का फॉर्म-6) के अनुसार आवश्यक जानकारी के साथ सनदी लेखापाल द्वारा यथा प्रमाणित लेखापरीक्षित तुलन पत्र की प्रतियाँ/लेखापरीक्षित तुलन पत्र द्वारा यथा समर्थित सनदी लेखापाल से प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेंगे। **जमा किए जाने वाले अन्य कागजात:** निविदा कागजात में उल्लिखित अनुसार। **समरूप कार्य की प्रकृति:** पैनल इंटरलॉकिंग या रूट रिले इंटरलॉकिंग या इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग या आईबीएच या ऑटोमैटिक सिग्नलिंग या एलसी गेट इंटरलॉकिंग एएफटीसी या एसएसडीएसी या एमएसडीएसी। **टिप्पणी:** निविदाकार अपने निविदा प्रस्ताव के साथ निविदा कागजात में उल्लिखित पात्रता मानदंड को पूरा करने के अपने दावे के समर्थन में कागजात प्रस्तुत करेंगे। निविदाकार द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाण पत्रों के समर्थन में कागजातों/प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपि का प्रत्येक पृष्ठ निविदाकार या निविदाकारी फर्म के अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा स्व-सत्यापित/डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित होगा। स्व-सत्यापन में हस्ताक्षर, मुहर और तिथि (प्रत्येक पृष्ठ पर) शामिल होंगे।
SDAH-115/2025-26
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहां देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

Name Change

I, Himmat Kumar Bhaiya, son of Hiralal Bhaiya, residing at 1/23, G R Khemka Lane, Bally, PS-Liluah, Howrah-711204, do hereby solemnly affirm and declare that that my correct name is Himmat Kumar Bhaiya and Himmat Kumar Bhaiya and Himmat Bhaiya is the same and one identical person by the affidavit before the Notary Public at Howrah dated 7th July 2025.

I,TRIPTAI SAXENA (OLD NAME) W/O SANJEEV SAXENA,RESIDING AT FLAT-103, SHRI BALAJI APARTMENT, INDIRA NAGAR, INSAF NAGAR, SECTOR-10, DIST-LUCKNOW, PIN-226016, UTTAR PARADESH, INDIA. HAVE CHANGED MY NAME AND SHALL HENCEFORTH BE KNOWN AS TRIPTI SAXENA(NEW NAME) AS DECLARED BEFORE THE NOTARY PUBLIC AT KOLKATA DATED 09/07/2025. TRIPTAI SAXENA(OLD NAME) AND TRIPTI SAXENA (NEW NAME) BOTH ARE SAME AND IDENTICAL PERSON.

पूर्व रेलवे

संक्षिप्त निविदा सूचना सं. केपीए-ईआरएस-ओटी-04-25-26, दिनांक 08.07.2025, उप मुख्य विद्युत इंजीनियर, पूर्व रेलवे वर्कशॉप, कांचरापाड़ा, पिन-743145 द्वारा निविदा सूचना आमंत्रित की जाती है। **निविदा सं. : केपीए-ईआरएस-ओटी-04-25-26, विवरण:** "शॉप नं. 9, 9ए, 10, 11, 11ए, 14 और 34/केपीए में, कुल 1300 वर्गफीट परिमाण के साथ एसीपी बेस पर माउंट किया हुआ एवं एल्यूमिनियम चैनल के साथ फ्रेम किया हुआ, आयरन बार फ्रेम (1.0 इंच X 1.0 इंच वर्ग आयरन बार) के साथ डिजिटल प्रिंटेड लैमिनेटेड रेट्रो बोर्ड का प्रावधान"। **निविदा मूल्य:** रु.4,54,064/- मात्र जीएसटी और सभी अन्य खर्च सहित। **निविदा के खुलने की तिथि और समय:** दिनांक 30.07.2025 को 15.00 बजे। **समापन अवधि:** 04 माह। निविदा कागजात और अन्य विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in से प्राप्त किये जा सकते हैं। निविदा के लिए बोली उपर्युक्त वेबसाइट पर ई-निविदा प्रणाली के माध्यम से जमा की जाएगी। इस निविदा के लिए मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं दी जाती है एवं कोई मैनुअल प्रस्ताव प्राप्त होने पर स्वीकार नहीं किया जाएगा एवं तत्काल रद्द कर दिया जाएगा।
MISC-125/2025-26
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहां देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

निविदा का निरस्तीकरण

उप मुख्य बिजली इंजीनियर/निर्माण, पूर्व रेलवे, आसनसोल मंडल, स्टेशन रोड, आसनसोल, पिन-713301 द्वारा पूर्व प्रकाशित निविदा सूचना संख्या ईएल-एएसएन-सीओएन-टीआरएल-173-2025-एनआईटी, दिनांक : 20.06.2025 तकनीकी कारणवश एतद्द्वारा **निरस्त** की जाती है। CON-23/2025-26
हमें यहां देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

OFFICE OF THE
BLOCK DEV. OFFICER
Joypur Dev. Block, Joypur, Purulia
NOTICE INVITING TENDER
NO: NIeT- 02/BDO/J.D.B/ 2025-26
E-tenders are invited by the undersigned from eligible bonafied contractors having requisite credentials and other valid documents **upto 03.00 PM of 23.07.2025** for 03 nos. of work . For details intending participants may contact to the office of the undersigned or visit website **www.wbtenders.gov.in** in any working day before the Last date for submission of bid documents.
Sd/-
Block Development officer
Joypur Development Block

OFFICE OF THE
SABANG DEVELOPMENT BLOCK
SABANG, PASCHIM MEDINIPUR
NOTICE
NIT No-16/25-26 vide Memo No.-2115/SBG Dated-01.07.2025 has been invited for 03 nos CC Road, fund of TDD Last date & time for application of tender: : 15.07.2025 upto 18.00 Hours, for details log on : to:www.wbtenders.gov.in
Sd/
Block Development Officer,
Sabang Development Block

पूर्व रेलवे

ई-नीलामी आमंत्रण सूचना

सं. सीओएम/डीईवी/ई-ऑक्शन/पीयू/एचडब्ल्यूएच/2022 दिनांक 07.07.2025 वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, चतुर्थ तल, यात्री निवास, हावड़ा स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा हावड़ा मंडल के तहत 3 वर्ष की अवधि के लिए **बैद्यबाटी स्टेशन** पर पे एंड यूज शौचालय के परिचालन एवं रखरखाव के लिए नया ठेका प्रदान करने हेतु ई-नीलामी आमंत्रित की जाती है। संदर्भित ई-ऑक्शन रेलवे बोर्ड के फ्रेट मार्केटिंग सर्कुलर नं. 11 ऑफ 2022 एवं कमर्शियल सर्कुलर नं. 14 ऑफ 2022 के अनुसार संचालित है। अधिक जानकारी और ई-नीलामी में भागीदारी के लिए कृपया वेबसाइट **www.ireps.gov.in ई-ऑक्शन लीजिंग मॉड्यूल** के माध्यम से देखें। **ऑक्शन कैटलॉग सं. पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-आर-01-25, लॉट सं./कैटेगरी:** पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-बीबीएई-टीओआई-34-25-1, **स्टेशन:** बैद्यबाटी (बीबीएई)। **नीलामी की तिथि और समय :** 21.07.2025 को 13.30 बजे।
HWH-182/2025-26
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहां देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

मेट्रो रेलवे, कोलकाता

शुद्धिपत्र

शुद्धिपत्र सं. 1 उप मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर/सिग्नल द्वारा खुली निविदा सूचना सं. एस एंड टी/वर्क्स/22-2025 के तहत दिनांक 08.07.2025 को 17.30 बजे आईआरईपीएस वेबसाइट पर ई-प्रकाशित किया गया। **आइटम में संशोधन किया गया:** कार्यों का नाम वर्तमान उल्लेख के स्थान पर "मेट्रो रेलवे, कोलकाता की ब्लू लाइन में केएमयूके आरआरआई यार्ड, केकेवीएस आरआरआई यार्ड और केएनसीएस यार्ड में ड्यूएल ट्रैक डिटेक्शन के लिए पुनर्वास, संवर्धन" पढ़ा जाना चाहिए। **नए आइटम जोड़े गए: कागजात का विवरण और फाइल का नाम** इस प्रकार है: 1. एसआईपी केकेवीएस आरआरआई, 18B.KSCSYARDSIP.pdf 2. एसआईपी केएमयूके आरआरआई, 14B.KMUK CARSHEDSIP.pdf 3. निविदा कागजात, TDfordualdetection-22-20251_1.pdf, 4. एसआईपी केएनसीएस, 3B.KNOACARSHEDSIP_1.pdf **आइटम हटाए गए: क्रम सं. 1: कागजात का विवरण:** TDfordual detection-22-20251_2.pdf फाइल का नाम: निविदा कागजात। निविदा की अंतिम तिथि अपरिवर्तित रहेगी और विवरण www.ireps.gov.in पर देखे जा सकते हैं।
हमें यहां देखें: /metrorailwaykol /metrorailkolkata

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मण्डल विद्युत इंजीनियर/टी.आर.एस./पूर्वोत्तर रेलवे, लोको शेड गोण्डा द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु खुली ई-निविदायें आमंत्रित की जाती है। **क्र.सं.1- निविदा सूचना संख्या :** LS-GD-2025-Loco_ Cleaning, **कार्य का नाम:** "इलेक्ट्रिक लोको शेड-गोंडा में 24 महीने की अवधि के लिए 3-फेज और पारंपरिक इंजनों के रेडिएटर, फिल्टर, लोको बॉडी, लुकआउट ग्लास और विंडो ग्लास, ड्राइवर कैब, मशीन रूम, कॉरिडोर आदि की सफाई सहित इलेक्ट्रिक इंजनों की सफाई और ट्रिप शेड गोरखपुर और लखनऊ में ट्रिप शेड्यूल के दौरान होटल लोड फिल्टर की वॉशिंग, ब्लोइंग, सफाई", **अनुमानित लागत (रू में):** ₹ 30,83,057.41, **निविदा की अवधि:** 24 माह, **अग्रिम धन राशि (रू मे):** ₹ 61,700.00, **क्र.सं.2- निविदा सूचना संख्या:** LS-GD-25-Ovh-Aux-Motor-R, **कार्य का नाम:** "गोंडा और गोरखपुर शेड के पारंपरिक और 3 फेज इलेक्ट्रिक लोको के सहायक मोटर्स की 2 वर्षों के लिए ओवरहालिंग।", **अनुमानित लागत (रू में):** ₹ 1,03,52,960.28, **निविदा की अवधि:** 24 माह, **अग्रिम धन राशि (रू में):** ₹ 2,01,800.00 । **नोट:** 1. ऑफर अपलोड करने की अंतिम तिथि एवं समय 30/07/2025, 12:00 बजे । 2. इस ई-निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी, न्यूनतम अर्हतायें तथा नियम एवं शर्तें, रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। 3. निविदाकार, ई-निविदा प्रपत्र को अपलोड करने से पूर्व इस ई-निविदा से संबंधित शुद्धि पत्र (यदि कोई हो) को वेबसाइट पर संज्ञान मे लेना सुनिश्चित करें।
समविइं/टीआरएस लोको शेड गोण्डा
मुजाधि/विद्युत-81
"ट्रेनों में ज्वलनशील पदार्थ लेकर यात्रा न करें"

हावड़ा मंडल के तहत कुछ लोकल ट्रेनें रद्द रहेंगी

पॉइंट नं. 330बी/327ए (डायमंड क्रॉसिंग) के नवीनीकरण के लिए, **दिनांक 13.07.2025** को हावड़ा मंडल के तहत बर्द्धमान स्टेशन लिमिट में अप मेन लाइन पर **06 घंटे (01.40 बजे से 07.40 बजे तक)** के लिए ट्रैफिक ब्लॉक की आवश्यकता होगी। इसके फलस्वरूप, **दिनांक 13.07.2025 (रविवार)** को निम्नलिखित ट्रेनें रद्द रहेंगी: **हावड़ा से: 36811 हावड़ा-बर्द्धमान लोकल (कॉर्ड होकर), 37811 हावड़ा-बर्द्धमान लोकल (मेन होकर) एवं 37211 हावड़ा-बैण्डेल लोकल। बैण्डेल से: 37781, 37783 और 37785 बैण्डेल-बर्द्धमान लोकल। बर्द्धमान से: 37782 और 37786 बर्द्धमान-बैण्डेल लोकल, 36822 बर्द्धमान-हावड़ा लोकल (कॉर्ड होकर) एवं 37824 और 37826 बर्द्धमान-हावड़ा लोकल (मेन होकर)। विशेष टिप्पणी:** ब्लॉक अवधि के दौरान स्पेशल या विलंब से चलने वाली ट्रेन और कोई भी नई शुरू की गई ट्रेन/पार्सल ट्रेन/टीओडी, यदि कोई हो, को मार्ग में सुविधानुसार नियंत्रित/मार्ग परिवर्तित किया जाएगा। यात्रियों से अनुरोध है कि वे स्टेशनों की जनसंबोधन प्रणाली का पालन करें। असुविधा के लिए खेद है।
मंडल रेल प्रबंधक, हावड़ा
पूर्व रेलवे

निविदा सूचना सं.: KIR/ENGG./38 OF 2025; दिनांक: 06-06-2025 के विरूद्ध शुद्धि-पत्र-02

कृपया प्रशासनिक आधार पर एनआईटी के अधीन उपरोक्त निविदा संख्या 1, 2 और 3 की **बंद और खोलने** की संशोधित तिथि पढ़ें। विवरण नीचे दिये गये हैं।

मौजूदा तिथि एवं समय		संशोधित तिथि एवं समय	
निविदा बंद होने की तिथि एवं समय	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	निविदा बंद होने की तिथि एवं समय	निविदा खोलने की तिथि एवं समय
08-07-2025 को 15:00 बजे	08-07-2025 को 15:30 बजे	11-07-2025 को 15:00 बजे	11-07-2025 को 15:30 बजे

उपरोक्त निविदा की अन्य सभी नियम एवं शर्तें यथावत हैं।
मंडल रेलवे प्रबंधक (कार्य), कटिहार
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

पश्चिम मध्य रेल

'ई-निविदा सूचना'

भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से कार्यकारी विद्युत इंजी. (निर्माण) पश्चिम मध्य रेलवे कोटा निम्नलिखित कार्य के लिए खुले ई-टेण्डर आमंत्रित करते हैं जो इस कार्यालय में निम्न दर्शायी गई तारीख को खोले जायेंगे।, **खुली निविदा सूचना संख्या :** ईएल/सी0/कोटा/2025/निविदा/147R, **कार्य का नाम:** कोटा मंडल रामगंज मंडी भोपाल नई लाइन परियोजना के अंतर्गत राजगढ़ से बीअवारा स्टेशनो के मध्य डिजाइन सप्लाई इरेक्शन टेस्टिंग व कमीशनिंग ऑफ 2X25 के वी 50 हट्‌र्ज ऐ सी सिंगल फेज ओ एच ई का डिजाइन सप्लाई इरेक्शन टेस्टिंग व कमीशनिंग का कार्य एवं घाटोली से नया गांव पुरा कुमारा स्टेशनो के मध्य 1X25 के वी ओ एच ई का 2X25 के वी 50 हट्‌र्ज ओ एच ई से मॉडिफिकेशन कार्य।, **अनुमानित कीमत (करोड़ रूपए में):** 17.55 करोड़, **निविदा फार्म की कीमत (रूपए में):** 0, **बयाना राशि (रूपए में):** 10,28,000.00, **समापन अवधि:** 12 माह। **निविदा खुलने की तारीख:** 29.07.2025, विस्तृत जानकारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। ऑफर सिर्फ ई-निविदा के माध्यम से ही स्वीकार्य किये जायेंगे, ई-निविदा के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम से टेण्डर ऑफर स्वीकार्य नही किये जायेंगे।
(हस्ता.)
उप मुख्य विद्युत अभियंता (निर्माण)
पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल
कृते कार्यकारी विद्युत इंजीनियर (निर्माण) प.म.रे. कोटा
स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

नारायणगढ़ में बदहाल सड़क पर बीमार महिला को झोले में लेकर जाना पड़ा अस्पताल

बेसुध प्रशासन, फूटा ग्रामीणों का गुस्सा

पश्चिम मेदिनीपुर : जिले के नारायणगढ़ ब्लॉक के नारायणगढ़ 2 नंबर ग्राम पंचायत के सानदेउली गांव से एक बेहद संवेदनशील तस्वीर सामने आई है। भारी बारिश के बीच गांव की बदहाल सड़कों के कारण एक बीमार महिला को झोले में कंधे पर टांगकर मुख्य सड़क तक ले जाया गया। बुधवार को घटना की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। ग्रामीणों के अनुसार, गांव में प्रदेश करने वाली मुख्य सड़क सामने के लगभग 700 मीटर का हिस्सा इस कदर जर्जर है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। बारिश के मौसम में हालात और भी बदतर

हो जाते हैं। अगर कोई बीमार पड़ता है, तो उसे कंधे पर झोले में लेकर अस्पताल तक पहुंचाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता। सानदेउली गांव की रहने वाली वर्षीय सरस्वती सामट (65) को दिल की बीमारी है और वह लंबे समय से इससे पीड़ित हैं। हाल ही में अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई। लेकिन गांव से अस्प-ताल तक ले जाने का कोई साधन नहीं था, क्योंकि लगातार बारिश के कारण रास्ता पूरी तरह बंद हो गया था।

अंततः उन्हें झोले में लटकाकर गांव से मुख्य सड़क तक लाया गया, जहां से अस्पताल ले जाया गया। घटना से ग्रामीणों में भारी रोष है। स्थानीय निवासी नान्टू पूइला ने कहा कि हम यहां करीब 25 परिवार रहते हैं, सभी अनुसूचित जाति के हैं। हमने जिलाधिकारी से लेकर बीडीओ तक, एसडीओ से लेकर पंचायत प्रधान तक सभी को इस सड़क की हालत की शिकायत ई-मेल के जरिए और व्यक्तिगत रूप से दी है। लेकिन आज तक कोई समाधान नहीं हुआ।

हालात ऐसे हैं कि साइकिल और बाइक भी इस रास्ते से नहीं जा सकते। अगर कोई बीमार हो जाता है, तो उसे कंधे पर उठाकर ही ले जाना पड़ता है। ग्रामीणों ने प्रशासन से इस सड़क की मरम्मत की मांग की है और चेतावनी दी है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे आंदोलन के लिए मजबूर होंगे।

अंतिम मेरिट लिस्ट में नाम के बावजूद नियुक्ति नहीं, हाई कोर्ट में फिर फंसी एसएससी

कोलकाता, समाज्ञा : स्कूल सर्विस कमीशन (एसएससी) को कोलकाता हाईकोर्ट से एक बार फिर फटकार लगी है। इस बार मामला बोलपुर की रहने वाली मानसी पाल से जुड़ा है, जिन्होंने 2015 में टेट (टीईटी) परीक्षा पास की थी और सभी आवश्यक दस्तावेजों के सत्यापन के बाद उनका नाम अपर प्राइमरी भर्ती की अंतिम मेरिट सूची में सबसे ऊपर आया था। इसके बावजूद उन्हें नियुक्ति नहीं दी गई। इस पर हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि अंतिम मेरिट लिस्ट में नाम होने के बावजूद किसी अभ्यर्थी को वंचित करना न्यायसंगत नहीं है। कोर्ट ने एसएससी को दो सप्ताह के भीतर नियुक्ति पत्र देने और पहले से तय तिथि से नौकरी की गणना शुरू करने का आदेश दिया है। यह विवाद 2016 की अपर प्राइमरी शिक्षक भर्ती से जुड़ा है। मानसी पाल को उम्र सीमा के बहाने इंटरव्यू में बैठने से रोका गया था, जिसके बाद उन्होंने 2019 में हाईकोर्ट में याचिका दायर की। सुनवाई के दौरान जस्टिस शेखर बॉबी सराफ ने स्पष्ट किया था कि जो अभ्यर्थी 2013 में टेट के लिए आवेदन के समय उम्रसीमा में थे, लेकिन परीक्षा की तिथि तक उनकी उम्र पार हो गई, उन्हें टेट पास करने पर भर्ती प्रक्रिया में हिस्सा लेने से नहीं रोका जा सकता।

इस आदेश के बाद मानसी को इंटरव्यू का मौका मिला और सभी योग्यताओं को पूरा करने के बाद उनका नाम अंतिम मेरिट लिस्ट में आ गया। बाद में न्यायमूर्ति तपोब्रत चक्रवर्ती और न्यायमूर्ति पार्थ सारथी चट्टोपाध्याय की खंडपीठ ने भी इस सूची को वैध ठहराया और एसएससी को निर्देश दिया कि सूची में शामिल उम्मीदवारों को सीधे नियुक्ति दी जाए। फिर भी एसएससी ने पहले काउंसलिंग में बुलाने के बावजूद मानसी को यह कहकर लौटा दिया कि उनकी उम्र सीमा पार हो चुकी है। उन्हें एक लिखित मेमो भी जारी किया गया, जिसमें कहा गया कि नियुक्ति नहीं दी जा सकती। इसके बाद, मामला न्यायमूर्ति विश्वजीत बसु की अदालत में पहुंचा, जहां सात महीने की सुनवाई के बाद कोर्ट ने बुधवार को फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि जब एक बार अभ्यर्थी का नाम अंतिम मेरिट सूची में शामिल हो चुका है और अदालत द्वारा उसे वैधता भी मिल चुकी है, तो एसएससी किसी भी आधार पर उसे नियुक्ति से वंचित नहीं कर सकता।

शालीमार आरपीएफ ने मानव तस्करी की कोशिश नाकाम कर पांच नाबालिगों को बचाया

खड़गपुर, समाज्ञा : दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर मंडल के अंतर्गत शालीमार आरपीएफ पोस्ट द्वारा बुधवार को मानव तस्करी के खिलाफ एक संयुक्त अभियान चलाया गया। यह अभियान ऑपरेशन एएचटीयू के तहत ट्रेन संख्या 18045 (शालीमार से खड़गपुर) में बीबीए टीम के सहयोग से किया गया। इस अभियान के दौरान तीन मानव तस्करों को हिरासत में लिया गया, जो पांच नाबालिग बच्चों को हैदराबाद के सिकंदराबाद इलाके में बुर्का फैक्ट्री और पोल्ट्री उद्योग में मजदूरी के लिए ले जा रहे थे। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान समीम हुसैन (21), जाकिर मंडल (22) और अबुल फराक लस्कर (38) के रूप

में हुई है। तीनों आरोपी, उत्तर 24 परगना और दक्षिण 24 परगना जिलों के निवासी हैं। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्हें प्रत्येक बच्चे के लिए 8000 से 12000 प्रति माह भुगतान किया जाना था। उनके पास बच्चों को ले जाने का कोई वैध दस्तावेज नहीं था। मुक्त कराए गए बच्चों की पहचान समीम अली (17), मोहम्मद इरफान हुसैन (17), रोहित हक (14), मसीबुर लस्कर (15) और अजरूल सरदार (15) के रूप में हुई है। ये सभी पश्चिम बंगाल के विभिन्न गांवों- बोहेरा, छोटा जगुलिया, भटछला और भंगनखली से लाए गए थे। बच्चों को आरपीएफ पोस्ट/खड़गपुर लाकर सुरक्षित रखा गया और आरपीएफ/शालीमार के एएसआई बी. पांडा द्वारा इस संबंध में जीआ-रपीएस/खड़गपुर में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई गई। आरपीएफ की तत्परता और सजगता के कारण मानव तस्करी की एक गंभीर साजिश समय रहते नाकाम हो सकी और पांच मासूम बच्चों को जबरन मजदूरी से बचाया जा सका। रेलवे सुरक्षा बल की यह कार्रवाई समाज के प्रति उनकी सतर्कता और जिम्मेदारी का स्पष्ट उदाहरण है।

'दागी अभ्यर्थियों के साथ क्यों खड़ी है एसएससी', हाई कोर्ट ने उठाए सवाल

कोलकाता, समाज्ञा : शिक्षक भर्ती घोटाले से जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान बुधवार को कलकत्ता हाई कोर्ट ने स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) से सवाल किया कि वह दागी अभ्यर्थियों के साथ क्यों खड़ा है। दरअसल कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति सौगत भट्टाचार्य की एकल पीठ ने आदेश दिया है कि एसएससी की नई भर्ती परीक्षा में दागी अभ्यर्थी शामिल नहीं हो पाएंगे। इस आदेश को चुनौती देते हुए राज्य और एसएससी न्यायमूर्ति सौमेन सेन और न्यायमूर्ति स्मिता दास की खंडपीठ में गए हैं, जहां वहां उन्हें इन सवालों का सामना करना पड़ा। न्यायमूर्ति सेन ने एसएससी से कुल तीन प्रश्न पूछे। पहला एसएससी दागी या पहचाने गए अयोग्य लोगों के साथ क्यों खड़ी है? दूसरा, क्या

एसएससी दागी लोगों का साथ देने की स्थिति में है? तीसरा, भर्ती प्रक्रिया में भाग लेने या न लेने का आयोग पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? अदालत के सवालों के जवाब में एसएससी के वकील कल्याण बनर्जी ने दो कारण बताए। उनका पहला तर्क यह था कि नई भर्ती में कौन भाग ले सकता है और कौन नहीं, इस बारे में भ्रम है। हाई कोर्ट ने गैर-पैनल, समाप्त हो चुके पैनल और श्वेत पत्र जमा करके नौकरी पाने वालों को दागी के रूप में चिह्नित किया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी हाई कोर्ट के इस आदेश को बरकरार रखा। उनके अलावा किसी और की पहचान दागी के रूप में नहीं की गई है। ऐसे में वे हाई कोर्ट से स्वीकार्य आदेश की मांग कर रहे हैं। एसएससी स्पष्ट रूप से समझना चाहती है कि नई भर्ती में कौन भाग ले सकता है और कौन नहीं। इसीलिए एकल पीठ के आदेश को चुनौती दी गई है। कल्याण का दूसरा तर्क यह था कि दागी अभ्यर्थियों की नौकरियां रद कर दी गई हैं। वेतन भी वापस करना होगा। लेकिन उन्हें परीक्षा में बैठने की अनुमति क्यों नहीं दी जाएगी? कल्याण का सवाल था कि क्या एक ही गलती के लिए कई सजाएं मिलनी चाहिए? हालांकि कल्याण ने एकल पीठ में भी यही सवाल उठाया था। तब न्यायाधीश ने कहा था कि अगर वे (दागी के रूप में पहचाने गए लोग) धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के जरिए नौकरी पाते हैं, तो उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे। बुधवार की सुनवाई में, न्यायाधीश जानना चाहते थे कि अयोग्य घोषित किए गए अभ्यर्थियों में से कितनें ने अब तक नई परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन किया है? जवाब में, एसएससी ने कहा कि अब तक 10 प्रतिशत दागी अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। कुल संख्या 180 है। कुल दागी अभ्यर्थियों की संख्या 1800 है।

ट्रैक पर अवरोध के चलते पूर्व रेलवे की कुछ ट्रेनों में हुई देरी

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के कई क्षेत्रों में बुधवार को ट्रेनों की आवाजाही कुछ समय के लिए बाधित रही। सियालदह मंडल के सियालदह (दक्षिण)-डायमंड हार्बर सेक्शन में देउला और मगराहाट के बीच तथा सियालदह मेन लाइन सेक्शन में इछापुर, बेलघरिया, भगवानगोला, खरडा और शांतिपुर में अवरोध की घटनाएं हुईं। हावड़ा मंडल में भद्रेश्वर, मायापुर - टाकीपुर, चुचुड़ा और बंडेल के बीच, हिंद मोटर, समुद्रगढ़, पांडुआ और उत्तरपाड़ा स्टेशनों पर थोड़े समय के लिए सेवाएं बाधित हुईं। मालदह मंडल में मुंगेर स्टेशन पर अवरोध हुआ, जिससे 15553 अप भागल-पुर-जयनगर एक्सप्रेस को थोड़ी देर के लिए रोका गया। हावड़ा और सियालदह मंडलों में कुछ ईएमयू लोकल ट्रेनों को थोड़ी देरी का सामना करना पड़ा। हालांकि, पूर्व रेलवे की सेवाएं लगभग सामान्य रही।

श्रावणी मेले के दौरान कुछ ट्रेनों के अस्थायी ठहराव की घोषणा

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व मध्य रेलवे के दानापुर मंडल में श्रावणी मेले के अवसर पर यात्रियों की सुविधा हेतु रेलवे ने कुछ ट्रेनों का अस्थायी ठहराव प्रदान करने का निर्णय लिया है। यह ठहराव 11 जुलाई 2025 से 10 अगस्त 2025 तक प्रभावी रहेगा। इस दौरान, 63209 देवघर-पटना मेमू ट्रेन मंझौलिग्राम हॉल्ट स्टेशन पर दोपहर 12:04 बजे पहुंचेगी और 12:05 बजे प्रस्थान करेगी। वहीं, 13402 दानापुर-भागलपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस हरदास बिगहा स्टेशन पर शाम 17:21 बजे पहुंचेगी और 17:23 बजे रवाना होगी। इसी प्रकार, 13401 भागलपुर-दानापुर इंटरसिटी एक्सप्रेस सुबह 09:52 बजे हरदास बिगहा स्टेशन पर रुकेगी और 09:54 बजे प्रस्थान करेगी। श्रावणी मेले के दौरान इन अस्थायी ठहरावों से श्रद्धालुओं को यात्रा में विशेष सुविधा प्राप्त होगी।

टनकुप्पा रेलवे स्टेशन पर दून एक्सप्रेस का अतिरिक्त ठहराव 10 जुलाई से लागू

कोलकाता, समाज्ञा : रेलवे ने पूर्व मध्य रेलवे के धनबाद मंडल अंतर्गत टनकुप्पा स्टेशन पर 13009/13010 हावड़ा-योगनगरी ऋषिकेश - हावड़ा दून एक्सप्रेस का अतिरिक्त ठहराव देने का निर्णय लिया है। यह व्यवस्था 10 जुलाई 2025 से प्रभावी होगी। 13009 हावड़ा-योगनगरी ऋषिकेश दून एक्सप्रेस, जो 9 जुलाई से अपनी यात्रा शुरू कर रही है, टनकुप्पा स्टेशन पर सुबह 04:08 बजे पहुंचेगी। वहीं, 13010 योगनगरी ऋषिकेश-हावड़ा दून एक्सप्रेस, जो 9 जुलाई से संचालित हो रही है, रात 21:32 बजे टनकुप्पा स्टेशन पर ठहरेगी। इन ट्रेनों का ठहराव दोनों दिशाओं में 2 मिनट का होगा। इस अतिरिक्त ठहराव से स्थानीय यात्रियों को बेहतर सुविधा प्राप्त होगी।

जैन विद्यालय कोलकाता के सेवानिवृत्त शिक्षक रवींद्र झा का निधन

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता के प्रतिष्ठित जैन विद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक रवींद्र झा का सोमवार को निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। झा पिछले कुछ महीने से गंभीर रूप से बीमार चल रहे थे। मूल रूप से बिहार के मधुबनी जिले के पंडौल प्रखंड के नाहर गांव निवासी रवींद्र झा ने लंबे समय तक जैन विद्यालय, कोलकाता में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दी थीं। बंगाल ही उनकी कर्मभूमि रही। वे हुगली जिले के डानकुनी में रहते थे। उनका निधन दिल्ली में हुआ। अपने पुत्र रवि शेखर झा के दिल्ली स्थित आवास पर सोमवार सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली। करीब डेढ़ साल पहले ही उनकी धर्मपत्नी का भी

निधन हो गया था। इसके बाद से झा दिल्ली में अपने पुत्र के पास ही रह रहे थे। दिल्ली एम्स से उनका इलाज चल रहा था। झा अपने पीछे एक पुत्र, दो पुत्रियां, भाई सहित भरा- पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर जैन विद्यालय के वर्तमान व पूर्व शिक्षकों सहित कोलकाता में रहने वाले उनके ग्रामीणों व मिथिला समाज के लोगों ने गहरा शोक जताया है। हावड़ा में रहने वाले उनके ग्रामीण उद्योगपति शंभू नाथ झा, दुर्गा नंद झा, शोभा झा, चिरंजीब झा, पत्रकार राजीव कुमार झा सहित अन्य ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए उनके निधन को गांव- समाज के साथ शिक्षा जगत के लिए अपूरणीय क्षति बताया। काफी व्यवहार कुशल, ईमानदार व बेदाग छवि वाले वरिष्ठ शिक्षक रवींद्र झा का अपने गांव से लेकर कार्यस्थल तक सभी लोग बहुत सम्मान करते थे।

बांग्लादेशी बताकर बंगाल के श्रमिकों को परेशान करने पर कोर्ट में याचिका दाखिल

कोलकाता, समाज्ञा : दिल्ली और ओडिशा में बांग्लादेशी होने के संदेह में पश्चिम बंगाल के प्रवासी मजदूरों को हिरासत में लिए जाने और उनके साथ कथित दुर्व्यवहार के मामलों ने गंभीर मोड़ ले लिया है। ताजा घटनाक्रम में बीरभूम जिले के छह मजदूरों को कथित रूप से पकड़ा गया, जिसके बाद इस पूरे मामले को लेकर मंगलवार को कोलकाता हाईकोर्ट में हैबियस कॉर्पस याचिका दाखिल की गई। याचिकाकर्ता ने अदालत से इस संवेदनशील विषय पर त्वरित सुनवाई की मांग की है। मामले की सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति तपोब्रत चक्रवर्ती और न्यायमूर्ति ऋतब्रत कुमार मित्रा की डिवीजन बेंच ने स्पष्ट किया कि

दिल्ली और ओडिशा-दोनों ही स्थानों से एक जैसे आरोप सामने आए हैं, जहां बंगाल के मजदूरों को उनकी नागरिकता पर संदेह करते हुए हिरासत में लिया गया है। अदालत ने कहा कि इन दोनों राज्यों में घटित मामलों की संयुक्त रूप से सुनवाई की जाएगी। कोर्ट ने संकेत दिया है कि मामले की अगली सुनवाई शुक्रवार को हो सकती है।

मीशो मॉल पर टाटा कंज्यूमर और केन्व्यू के उत्पादों की शुरुआत

कोलकाता, समाज्ञा : ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म मीशो मॉल ने टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स और केन्व्यू इंडिया के साथ साझेदारी की है। इस कदम के तहत अब देशभर के ग्राहक टाटा टी, टेटली, टाटा कॉफी, क्लीन एंड क्लियर फेस वॉश, जॉनसन्स बेबी केयर और स्टेफ्री सैनिटरी पैड जैसे उत्पादों को आसानी से खरीद सकेंगे। यह साझेदारी खासकर टियर 2 और उससे छोटे शहरों के उपभोक्ताओं को ध्यान में रखकर की गई है। देहरादून, पुरी, मदुरई और सूरत जैसे शहरों में ग्राहक अब ग्रीन टी, स्किनकेयर और हाईजीन उत्पादों की ऑनलाइन खरीदारी में रुचि दिखा रहे हैं। लॉन्च के एक महीने के अंदर ही इन उत्पादों की मांग में तेजी दर्ज की गई है। मीशो के माध्यम से दोनों ब्रांड्स अब डिजिटल फर्स्ट ग्राहकों तक अपनी पहुंच बढ़ा रहे हैं, जिससे भारत के उभरते बाजारों में इनकी उपस्थिति और उपयोगिता लगातार मजबूत हो रही है।

अमेजन पे के साथ इस प्राइम डे पर करें स्मार्ट शॉपिंग और पाएं ज्यादा फायदे

कोलकाता, समाज्ञा : अमेजन प्राइम डे 2025, जो 12 से 14 जुलाई तक चलेगा, इस बार और भी ज्यादा बड़े ऑफर्स और बचत के साथ आ रहा है। इस मौके पर अमेजन पे का इस्तेमाल करके ग्राहक अपनी खरीदारी को और भी ज्यादा फायदेमंद बना सकते हैं। इस दौरान अगर ग्राहक अमेजन पे आईसीआईसीआई बैंक क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करते हैं तो उन्हें 10% तक का कैशबैक मिलेगा। नए यूज़र्स को 3,000 तक के रिवॉर्ड्स मिल सकते हैं। नॉन-प्राइम मेंबर्स को भी प्राइम सब्सक्रिप्शन पर छूट और रिवॉर्ड्स दिए जा रहे हैं। छोटी खरीदारी करने वाले ग्राहकों के लिए भी फायदे कम नहीं हैं। अमेजन पे यूपीआई से दूसरी बार 1,000 या उससे ज़्यादा की खरीदारी पर 100 का कैशबैक मिल सकता है। अमेजन पे बैलेंस टॉप-अप करने पर भी कैशबैक मिलेगा। इस बार ग्राहक डिजिटल गिफ्ट कार्ड्स पर भी छूट का लाभ उठा सकते हैं और त्योहारों या भविष्य की खरीदारी के लिए स्मार्ट प्लानिंग कर सकते हैं। अगर आप यात्रा की योजना बना रहे हैं, तो फ्लाइट, होटल और मूवी टिकट बुकिंग पर भी भारी छूट मिलेगी। अमेजन पे लॉटर के ज़रिए ग्राहक बिना तुरंत भुगतान किए आसान किश्तों में शॉपिंग कर सकेंगे और उन्हें अलग से रिवॉर्ड्स भी मिलेंगे। जो ग्राहक अब तक प्राइम मेंबर नहीं बने हैं, उनके लिए भी यह सही समय है। प्राइम की तीन योजनाएं उपलब्ध हैं - 1,499 में सालभर की सदस्यता, 799 में लाइट और 399 में शॉपिंग एडिशन।

एलोपैथी और योग का संयोजन बढ़ा रहा है इलाज की सफलता

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में योग और एलोपैथी के संयुक्त प्रभाव पर चर्चा की गई। डॉ. समीर कुमार घोष ने बताया कि योग न केवल शरीर को लचीला बनाता है, बल्कि मन और आत्मा को भी संतुलित करता है। कार्यक्रम में आम लोगों और मरीजों को योग प्रशिक्षण दिया गया, जिससे उन्हें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के तरीके सीखने को मिले। विशेषज्ञों ने बताया कि योग तनाव, मधुमेह, हाई ब्लड प्रेशर और मोटापे जैसी बीमारियों पर नियंत्रण में मदद करता है। डॉ. घोष ने कहा, योग एक दिन की नहीं, बल्कि जीवनभर की प्रक्रिया है। आज कई अस्पतालों में एलोपैथी के साथ योग और ध्यान को भी इलाज में शामिल किया जा रहा है, जिससे इलाज की सफलता और मरीजों की रिकवरी बेहतर हो रही है।

मालदह मंडल श्रावणी मेला की तैयारी में जुटा, सुल्तानगंज स्टेशन पर विशेष व्यवस्था

कोलकाता, समाज्ञा : मालदह मंडल ने आगामी श्रावणी मेले के सफल आयोजन के लिए सुल्तानगंज स्टेशन पर व्यापक तैयारियां शुरू कर दी हैं। यह प्रसिद्ध मेला इस वर्ष 11 जुलाई से 9 अगस्त 2025 तक आयोजित किया जाएगा। मेले के दौरान हर दिन के लिए एक

अधिकारी को नामित किया गया है, जो सुल्तानगंज स्टेशन पर पूरे दिन मौजूद रहकर व्यवस्थाओं की निगरानी करेंगे। भागलपुर स्टेशन निदेशक मेले के समन्वय अधिकारी होंगे, जबकि सीएमआई/जमालपुर को मेले अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है। इन व्यवस्थाओं में 24 घंटे पेयजल की आपूर्ति, पर्यटक शेड के पास पर्याप्त जल व्यवस्था, प्लेटफार्म, शौचालय और सर्कुलेटिंग क्षेत्र की सफाई, अस्थायी शौचालय और बेहतर ड्रेनेज व्यवस्था शामिल हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए निरंतर उद्घोषणा, प्रमुख स्थानों पर सूचना बोर्ड, उचित रोशनी, पंखे, हाई मास्ट टावर, चिकित्सकीय सहायता, सीसीटीवी निगरानी, आरपीएफ/जीआरपी बल की तैनाती और मे आई हेल्प यू बूथ स्थापित किए जाएंगे। यात्रियों को ट्रेन की छत या लेवल क्रॉसिंग पर बस की छत पर यात्रा न करने के लिए जागरूक किया जाएगा, क्योंकि किऊल से भागलपुर सेक्शन तक विद्युतीकरण पूरा हो चुका है।

हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में स्वयं-एनपीटीईएल अवेयरनेस वर्कशॉप का सफल आयोजन

कोलकाता, समाज्ञा : हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्न-ोलॉजी (एचआईटी), कोलकाता ने मौलाना अबुल कलाम आजाद यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (मकौत) के सहयोग से बुधवार को स्वयं-एनपीटीईएल अवेयरनेस वर्कशॉप का आयोजन किया। इस कार्यशाला में पश्चिम बंगाल के विभिन्न मकौत-संबद्ध संस्थानों से आए लगभग 400 शिक्षकों-जिनमें डीन, प्राचार्य, विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। इसका उद्देश्य भारत सरकार की स्वयं-एनपीटीईएल पहल के अंतर्गत मुफ्त ऑनलाइन कोर्सेज को लेकर जागरूकता फैलाना और शिक्षण में डिजिटल तकनीकों के एकीकरण को बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मकौत के रजिस्ट्रार डॉ. पार्थ प्रतिम लाहिरी,

कंट्रोलर ऑफ एग्जामिनेशन्स डॉ. सुभाषिस दत्ता, एचआईटी के प्रिंसिपल प्रो. बसब चौधुरी, हेरिटेज ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रिंसिपल एडवाइजर प्रो. सौविक भट्टाचार्य और सीईओ प्रदीप अग्रवाल, आईआईटी खड़गपुर की प्रो. हैमंती बनर्जी तथा एनपीटीईएल के वरिष्ठ प्रबंधक शिब शंकर दास उप-स्थित रहे। अपने वक्तव्यों में वक्ताओं ने डिजिटल शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। डॉ. लाहिरी ने स्वयं-एनपीटीईएल जैसे प्लेटफॉर्म को शिक्षण में शामिल करने की आवश्यकता को रेखांकित किया, जबकि डॉ. दत्ता ने परीक्षा गुणवत्ता और मानकों की चर्चा की। प्रो. चौधुरी ने संस्थान की नवाचार-प्रधान शैक्षणिक प्रतिबद्धता को दोहराया, और श्री अग्रवाल ने एमओओसी के जरिए फैकल्टी डेवलपमेंट को हेरिटेज ग्रुप की रणनीति से जोड़ा। कार्यशाला के व्यावहारिक सत्रों में प्रतिभागियों ने कोर्स पंजीकरण, सर्टिफिकेशन प्रक्रिया, कंटेंट एक्सेस और ऑनलाइन शिक्षण विधियों पर तकनीकी जानकारी प्राप्त की।

नैहाटी डिपो में लगे अत्याधुनिक उपकरण, वैगन मरम्मत होगी और भी प्रभावी

कोलकाता, समाज्ञा : रेलवे के रखरखाव और संचालन में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण पहल करते हुए नैहाटी कैरेज एंड वैगन डिपो, सियालदह मंडल में अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों को स्थापित किया गया है। इन नई तकनीकों के माध्यम से वैगनों की रूटीन ओवरहॉलिंग (आरओएच) प्रक्रिया अब पहले से अधिक तेज, सटीक और कुशल हो सकेगी, जिससे रेल परिचालन में विश्वसनीयता और सुरक्षा को और बल मिलेगा। सियालदह मंडल रेल प्रबंधक राजीव सक्सेना के नेतृत्व में इस तकनीकी उन्नयन के तहत नैहाटी डिपो में कई स्वचालित मशीनों की शुरुआत की गई है। इनमें सीटीआरबी कंडीशन मॉनिटरिंग सिस्टम - कार्ट्रिज टेपर रोलर बेयरिंग्स (सीटीआरबी) की जांच अब डिजिटल प्रणाली के जरिए

की जा सकेगी। यह प्रणाली विफलता से जुड़े मुद्दों को ट्रैक करने में सहायक होगी और रेल मेंटेनेंस को नई दिशा देगी। वेल्डिंग सिम्युलेटर - वेल्डिंग कार्य में दक्षता बढ़ाने के लिए वर्चुअल रियलिटी आधारित यह आधुनिक सिम्युलेटर तकनीशियनों को बिना किसी सामग्री के व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इसमें एंगल, स्पीड, आर्क लेंथ जैसी तकनीकों पर तुरंत प्रतिक्रिया मिलती है, जो कुशल श्रमबल तैयार करने में मददगार है। ब्रेकिंग उपकरणों का ओवरहॉलिंग - विशेष प्रीमियम रेक्स की जांच में उपयोग होने वाले एसएबी, बीसी, एलएसडी और एपीएम जैसे ब्रेकिंग उपकरणों की ओवरहॉलिंग अब नैहाटी डिपो में ही की जा रही है। इससे लिलुआ और कांचरापाड़ा जैसे बड़े कार्यशालाओं पर निर्भरता घटेगी और वैगनों की औसत रोक अवधि भी कम होगी। डिस्ट्रीब्यूशन वॉल्व की मरम्मत - डिपो में बड़ी संख्या में रेक्स की मरम्मत होती है, जिसमें 100% ब्रेक पावर अनिवार्य है। इस मांग को पूरा करने के लिए अब डिस्ट्रीब्यूशन वॉल्व की ओवरहॉलिंग की सुविधा भी नैहाटी डिपो में ही शुरू की गई है, जिससे यार्ड की कार्यकुशलता में और बढ़ोतरी होगी। नैहाटी डिपो की यह पहल भारतीय रेल के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पश्चिम बंगाल गारमेंट एसोसिएशन के 58वें बायर्स एंड सेलर्स मीट और बी2बी एक्सपो के अंतिम दिन डब्ल्यूबीजीएमडीए के अध्यक्ष हरि किशन राठी, विप्र फाउंडेशन के स्थापक एवं संयोजक सुशील ओझा, पार्षद महेश शर्मा, पवन ओझा, संजय अग्रवाल ने स्टॉल का दौरा किया।

भारत बंद के दौरान डोमजूर में सड़कों पर सीपीएम कार्यकर्ताओं और पुलिस की झड़प

➨ हावड़ा ब्रिज और स्टेशन पर सामान्य रही स्थिति

हावड़ा, समाज्ञा : वामपंथी ट्रेड यूनियनों द्वारा बुलाए गए भारत बंद के समर्थन में बुधवार को पश्चिम बंगाल के कई हिस्सों में प्रदर्शन हुए, लेकिन कहीं व्यापक असर नहीं देखा गया। डोमजूर में सीपीएम कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर बसों और ट्रकों को जबरन रोकने और दुकानें बंद कराने की कोशिश की, जिससे इलाके में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। सुबह डोमजूर बाजार में प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए चालकों को वाहनों से उतरने को मजबूर किया। स्थिति बिगड़ने पर भारी संख्या में पुलिस बल और रैपिड एक्शन फोर्स मौके पर तैनात की गई। पुलिस ने जब हल्का लाठीचार्ज किया, तो प्रदर्शनकारी इधर-उधर भाग गए। इस झड़प में दो लोग घायल हो गए जबकि डोमजूर थाना पुलिस ने दो सीपीएम कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। हालांकि, हावड़ा ब्रिज पर भारत बंद का कोई विशेष प्रभाव नहीं दिखा। रोजमर्रा की तरह ही ट्रैफिक सामान्य रहा और गाड़ियों की आव-जाही निर्बाध रूप से होती रही। सरकारी और निजी बसें, टैक्सी और फेरी सेवाएं पूरी तरह से सुचारू रहीं। हावड़ा स्टेशन पर लोकल और दूरदराज की ट्रेनों का संचालन भी लगभग सामान्य रहा। हावड़ा सिटी पुलिस ने स्टेशन और आसपास के इलाकों में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे। बारिश के बावजूद सीपीएम की ट्रेड यूनियन शाखा 'सीटू' ने हावड़ा मैदान, सलकिया बाधाघाट, चौराहा और दासनगर समेत कई जगहों पर सड़क अवरोध कर विरोध प्रदर्शन किया। बाद में भारी पुलिस बल ने प्रदर्शनकारियों को हटाया और यातायात बहाल कराया। हालांकि, दिनभर बारिश के कारण सड़कों पर लोगों की संख्या सामान्य से कम देखी गई।

हुगली में भारत बंद का मिला-जुला असर, कुछ जूट मिलें रहीं बंद

हुगली, समाज्ञा : पश्चिम बंगाल देशभर की दस केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और उनके सहयोगी संगठनों के आह्वान पर सोमवार को आयोजित 'भारत बंद' का हुगली जिले में मिला-जुला असर देखने को मिला जहां रिसड़ा की जयश्री मिल, गोंदलपाड़ा जूट मिल और बांसबेडिया स्थित गैंगेज जूट मिल में मजदूरों की अनुपस्थिति के चलते उत्पादन पूरी तरह ठप रहा, वहीं आम जनजीवन सामान्य बना रहा। बाजार, हाट, स्कूल-कॉलेज, बैंक, सरकारी कार्यालय और सार्वजनिक परिवहन अधिकांशतः सामान्य रूप से चालू रहे। हालांकि, कुछ स्थानों पर बंद समर्थकों ने आंशिक रूप से सड़क और रेल यातायात बाधित करने की कोशिश की। कोन्ननगर और रिसड़ा के बीच प्रदर्शनकारियों ने रेलवे ट्रैक पर झंडा गाड़ दिया और रेल सेवाओं को रोकने की कोशिश की। इससे कुछ समय के लिए रेलवे यातायात प्रभावित हुआ, लेकिन रेलवे प्रशासन और पुलिस की तत्परता से स्थिति जल्द ही नियंत्रित कर ली गई। रिसड़ा में जी.टी. रोड पर टायर जलाकर बंद समर्थकों ने यातायात रोकने की कोशिश की, जबकि श्रीरामपुर स्टेशन पर ट्रेनों को रोककर प्रदर्शन किया गया। कुछ जगहों पर नारेबाजी और सड़क अवरोधन भी हुआ, लेकिन जिला प्रशासन और पुलिस की सक्रियता के चलते किसी भी स्थान पर कोई गंभीर घटना नहीं घटी। कुल मिलाकर, भारत बंद का असर हुगली में उद्योगिक क्षेत्र तक ही सीमित रहा, जबकि आम लोगों की दिनचर्या अधिकतर प्रभावित नहीं हुई।

वसूली के आरोप में तृणमूल नेता के पति की नौकरी गई, पुलिस कमिश्नरेट ने जारी किया आदेश

हावड़ा, समाज्ञा : अवैध वसूली के आरोप में तृणमूल कांग्रेस की एक महिला नेता के पति को सरकारी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है। मंगलवार की रात हावड़ा पुलिस कमिश्नरेट की ओर से इस संबंध में आधिकारिक आदेश जारी किया गया। आरोपित का नाम बरुण दास, जो सांकराइल पंचायत समिति की सभापति सोनाली दास के पति हैं। बरुण दास पुलिस विभाग में ट्रेनी होम गार्ड के रूप में कार्यरत थे। पुलिस का आरोप है कि सांकराइल इलाके में जहां कहीं भी घर या दुकान निर्माण का कार्य चल रहा होता, वहां बरुण दास ज़ोर-जबरदस्ती से पैसे वसूलता था। पुलिस के मुताबिक, बरुण की ड्यूटी रात में धार्मिक स्थलों की निगरानी करने की थी, लेकिन दिन के समय वह निर्माण स्थलों पर जाकर स्थानीय लोगों से अवैध रूप से पैसे वसूलता था। हाल ही में, बरुण दास के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिसमें उसे एक निर्माणाधीन मकान के सामने मोटरसाइकिल पर बैठे देखा गया और वह जमीन मालिक से बहस करते नजर आया। पुलिस सूत्रों का कहना है कि बरुण के खिलाफ लगातार वसूली की शिकायतें मिल रही थीं, जो पुलिस के उच्चाधिकारियों तक भी पहुंचीं। इसके बाद ही कमिश्नरेट ने सख्त कदम उठाते हुए मंगलवार को सांकराइल थाने को नोटिस भेजकर बरुण को तुरंत और स्थायी रूप से सेवा से बर्खास्त करने का निर्देश दिया। बर्खास्तगी आदेश में कहा गया है कि बरुण न केवल ड्यूटी में ग़ैरहाज़िर रहता था, बल्कि सरकारी पद का दुरुपयोग कर निजी स्वार्थ के लिए लोगों को परेशान कर रहा था।

विधानसभा में केंद्रीय सुरक्षा बलों के प्रवेश पर विवाद, हाई कोर्ट में राज्य सरकार ने दी सफाई

कोलकाता, समाज्ञा : विधानसभा परिसर में केंद्रीय सुरक्षा बलों को प्रवेश देने की मांग को लेकर नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी द्वारा दायर याचिका पर सोमवार को हाई कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से एडवोकेट जनरल ने स्पष्ट किया कि किसी भी विधायक, मंत्री या नेता प्रतिपक्ष के निजी सुरक्षाकर्मियों - चाहे वे केंद्र सरकार से जुड़े हों या राज्य सरकार से, को विधानसभा के अंदर प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा सकती। राज्य सरकार ने तर्क दिया कि विधानसभा की सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह से मार्शल और कोलकाता पुलिस की विशेष इकाई के जिम्मे होती है। जब सत्र चलता है, तब सुरक्षा और निगरानी की जिम्मेदारी मार्शल के नेतृत्व में विशेष रूप से तैनात बलों को सौंपी जाती है। सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों ही दलों के नेताओं के निजी सुरक्षा कर्मियों को केवल निर्धारित स्थान तक ही आने की अनुमति होती है, और यह नियम सभी के लिए समान रूप से लागू होता है।

शुभेंदु अधिकारी ने हाल ही में यह आरोप लगाया था कि उन्हें विधानसभा के अंदर शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान किया गया था। इस आधार पर उन्होंने हाई कोर्ट से यह मांग की कि उनके साथ रहने वाले केंद्रीय सुरक्षा बलों को भी विधानसभा परिसर में प्रवेश करने दिया जाए ताकि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। राज्य सरकार की ओर से यह भी कहा गया कि चूंकि विधानसभा एक संवेदनशील और हथियार-मुक्त क्षेत्र है, इसलिए यहां किसी भी सुरक्षाकर्मी को हथियारों के साथ प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा सकती। संसद में भी यही नियम लागू है, जिससे विधानसभा को अपवाद नहीं बनाया जा सकता। सुनवाई के दौरान शुभेंदु अधिकारी के वकील बिल्बदल भट्टाचार्य ने इस मामले की प्रतिदिन सुनवाई की मांग की, जिसे न्यायमूर्ति अमृता सिन्हा ने अस्वीकार करते हुए कहा कि मामला इतना गंभीर नहीं है कि रोजाना सुनवाई की आवश्यकता हो। अब इस मामले पर अगली सुनवाई 21 जुलाई को होगी।

संदेशखाली में चुनाव बाद हिंसा में मारे गए तीन भाजपा कार्यकर्ताओं के घर पहुंची सीबीआई टीम

कोलकाता, समाज्ञा : उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखाली इलाके में 2019 में चुनाव के बाद हुई हिंसा में कथित तौर पर मारे गए तीन भाजपा कार्यकर्ताओं के आवासों पर बुधवार को सीबीआई की एक टीम पहुंची। बता दें कि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने संदेशखाली इलाके में भाजपा के कार्यकर्ताओं प्रदीप मंडल, देवदास मंडल और सुकांत मंडल की हत्या के मामले की जांच शनिवार को अपने हाथ में ले ली। सीबीआई ने इस मामले के मुख्य आरोपी और पूर्व तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। अधिकारी ने बताया कि इस दिन, संदेशखाली में प्रदीप मंडल के आवास पर जाने से पहले सीबीआई अधिकारियों की टीम मीनाखां स्थित एसडीपीओ कार्यालय भी गई। उन्होंने बताया कि वे चुनाव बाद हुई हिंसा में मारे गए दो अन्य भाजपा कार्यकर्ताओं के घर भी गए। अधिकारी ने कहा कि अधिकारियों ने संदेशखाली स्थित प्रदीप मंडल के आवास पर उनके परिवार के सदस्यों से बात की। इसके बाद वे मारे गए अन्य दो लोगों के घर भी गए। उन्होंने वहां स्थानीय लोगों से भी बात की। उल्लेखनीय है कि संदेश-खाली में 2019 में चुनाव बाद हुई हिंसा के दौरान तीन भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गई थी। कथित तौर पर शेख के नेतृत्व में एक भीड़ ने उनके गांव पर हमला किया था। राज्य सीआईडी ने शुरुआत में इस मामले की जांच की थी, लेकिन बाद में मृतकों के परिवारों ने सीबीआई जांच की मांग करते हुए उच्च न्यायालय में याचिका दायर की।

महुआ मोइत्रा ने ओडिशा में बंगाली भाषी प्रवासी श्रमिकों को अवैध हिरासत में रखने का लगाया आरोप

कोलकाता, समाज्ञा : ओडिशा के झारसुगुड़ा ज़िले में 444 बंगाली प्रवासी मजदूरों को 'बांग्लादेशी नागरिक' बताकर कथित तौर पर हिरासत में लेने के मामले ने सियासी तूल पकड़ लिया है। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा समेत कई नेताओं ने इस कार्रवाई को गैरकानूनी बताते हुए ओडिशा सरकार पर तीखा हमला बोला है। बताया जा रहा है कि ये सभी मजदूर नदिया, मुर्शिदाबाद, मालदह, पूर्व मेदिनीपुर, बीरभूम, पूर्व बर्दवान और दक्षिण 24 परगना ज़िलों से ताल्लुक रखते हैं। सोमवार को ओडिशा पुलिस ने इन मजदूरों को उन कॉलोनियों से उठाया जहां बंगाली भाषी श्रमिक बड़ी संख्या में रहते हैं। आरोप है कि उन्हें बिना उचित दस्तावेज़ के विदेशी घोषित कर हिरासत में लिया गया। नदिया ज़िले की मिर्ज़ापुर पंचायत क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले 23 मजदूरों की गिरफ्तारी पर नाराजगी जताते हुए महुआ मोइत्रा ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर वीडियो संदेश जारी किया। उन्होंने कहा कि मेरे लोकसभा क्षेत्र के पनिघाटा ग्राम पंचायत के मिर्ज़ापुर गांव से 23 मजदूरों को ओडिशा पुलिस ने अवैध रूप से हिरासत में लिया है। ये सभी आधार और मतदाता पहचान पत्र जैसे वैध दस्तावेज़ रखते हैं। यदि इन्हें तुरंत नहीं छोड़ा गया, तो हम 23 हैबियस कॉर्पस याचिकाएं दायर करेंगे और मैं खुद वहां जाऊंगी। महुआ ने यह भी आरोप लगाया कि यह सब कुछ भारतीय जनता पार्टी के ओडिशा में सत्ता में आने के बाद शुरू हुआ है। उन्होंने कहा कि नवीन पटनायक की बीजद सरकार के 23 वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ। लेकिन भाजपा के सत्ता में आने के बाद यह रोज़ का सिलसिला बन गया है। मोइत्रा ने ओडिशा सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि ओडिशा के पर्यटन राजस्व का 50 प्रतिशत बंगाली पर्यटकों से आता है। वे ही आपके होटलों में रुकते हैं, आपके तीर्थस्थलों पर जाते हैं। अगर बंगाली पर्यटक ओडिशा जाना बंद कर दें तो क्या होगा? उधर, मामले को लेकर बंगाल के मुख्य सचिव ने ओडिशा के मुख्य सचिव को पत्र भी भेजा है।

पुरुलिया में मोबाइल चोरी के आरोप में युवक की पीटकर हत्या

पुरुलिया : पुरुलिया के टामना थाना अंतर्गत चाकलतोड़ गांव में मोबाइल चोरी के आरोप में तीन युवकों पर एक युवक की पीट-पीटकर हत्या करने का आरोप लगा है। मृतक की पहचान तापस महापात्र के रूप में की गई है। पुलिस और स्थानीय सूत्रों के अनुसार, गत रविवार को तापस बलरामपुर थाना अंतर्गत उरमा गांव में एक परिचित के घर गया था। मंगलवार की सुबह वह गांव लौटा। कथित तौर पर, दोपहर में उरमा गांव के तीन युवकों ने तापस के घर पर हमला कर दिया। कथित तौर पर उसे घर से घसीटकर बाहर लाया गया। फिर, बिना कुछ बताए मारपीट शुरू कर दी। परिवार का दावा है कि फिर, वे उसे एक कार में उठाकर ले गए। रात में, आरोपियों ने तापस के घर फोन किया और उन्हें सूचित किया कि उसने जहर खा लिया है और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बुधवार की दोपहर अस्पताल में तापस की मौत हो गई। परिवार के सदस्यों के अनुसार, तापस को एक सिविक वॉलंटियर के सामने घसीट कर सड़क पर फेंका गया था। ग्रामीणों का आरोप है कि अगर मोबाइल फ़ोन चोरी हुआ होता, तो वे स्थानीय पुलिस स्टेशन में इसकी सूचना दे सकते थे। वे इस घटना में शामिल आरोपियों को कड़ी सज़ा देने की मांग कर रहे हैं। पुलिस दो आरोपियों को गिरफ़्तार करके पूछताछ कर रही है।

कुलतली में विवाहिता की रहस्यमयी मौत, पति पर अवैध संबंध और दहेज प्रताड़ना का आरोप

कोलकाता, समाज्ञा : दक्षिण 24 परगना के कुलतली थाना क्षेत्र में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत से इलाके में हड़कंप मच गया। मृतका की पहचान मानोआरा मोल्ला (20) के रूप में हुई है। उसके ससुराल में उसका शव फंदे से लटका मिला। मायके वालों ने पति पर न सिर्फ दहेज प्रताड़ना बल्कि अवैध संबंध का भी आरोप लगाया है। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के मुताबिक, मानोआरा बारुईपुर की रहने वाली थी, जबकि ससुराल कुलतली में है। डेढ़ साल पहले उसकी मुलाकात फोन पर माजिदुल मंडल से हुई थी। कुछ ही महीनों में दोनों के बीच रिश्ता बन गया। लड़की की इच्छा देखते हुए मायके वालों ने शादी पर कोई आपत्ति नहीं जताई। शादी के कुछ समय बाद माजिदुल उसे अपने घर ले गया। आरोप है कि ससुराल पहुंचते ही मानोआरा पर मानसिक और शारीरिक अत्याचार शुरू हो गया। शादी के वक्त मायके वालों ने दहेज के रूप में पैसे और सोने के गहने दिए थे, फिर भी उस पर लगातार और पैसे लाने का दबाव डाला जाता रहा। मायके वालों का कहना है कि माजिदुल का किसी अन्य महिला से अवैध संबंध था, और जब मानोआरा इसका विरोध करती, तो उसके साथ मारपीट की जाती। यहां तक कि कई बार उसे अपने मायके वालों से संपर्क करने तक नहीं दिया गया। बुधवार को मानोआरा को मायके जाने की तैयारी थी, लेकिन उससे पहले सुबह ससुराल में उसका शव फंदे से लटका मिला। ससुराल वालों ने मायके पक्ष को फोन कर बताया कि मानोआरा ने आत्महत्या कर ली है। परिजनों का आरोप है कि यह आत्महत्या नहीं, बल्कि हत्या है। उनका कहना है कि मंगलवार शाम तक मानोआरा से बात हुई थी और वह बिल्कुल सामान्य थी। बताया जा रहा है कि घटना के वक्त मानोआरा के पति माजिदुल और ससुर किसी अन्य राज्य में काम पर थे। घर में सास, देवर और ननद मौजूद थे। परिजनों का आरोप है कि इन लोगों ने ही मानोआरा की हत्या की है। मायके पक्ष ने कुलतली थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

बीजेपी के झूठे आरोपों के खिलाफ सख्त रुख, तृणमूल नेता ने ठोका एक करोड़ का मानहानि दावा

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता में राजनीतिक तनाव उस वक्त और बढ़ गया जब दक्षिण कोलकाता तृणमूल छात्र परिषद और युवा तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष सार्थक बंदोपाध्याय ने भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ 1 करोड़ का मानहानि का मुकदमा दायर किया। यह कदम भाजपा द्वारा लगाए गए कथित फर्जी संपत्ति के आरोपों के जवाब में उठाया गया है। सार्थक ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में दावा किया कि राज्य भाजपा ने उनके और उनके परिवार के खिलाफ झूठे, आधारहीन और अपमानजनक आरोप लगाए हैं, जिससे उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक प्रतिष्ठा को गंभीर नुकसान पहुंचा है। उन्होंने लिखा कि यह आरोप एक साजिश के तहत लगाए गए हैं और भाजपा को तुरंत सोशल मीडिया से ऐसे सभी आपत्तिजनक पोस्ट हटाने होंगे। यदि ऐसा नहीं किया गया तो पार्टी को 10 दिनों के अंदर 1 करोड़ का मुआवजा देना होगा। सार्थक ने यह भी स्पष्ट किया कि यह राशि उन्हें नहीं, बल्कि विभिन्न जनहित कार्यों के लिए दान की जाएगी, जिसकी जानकारी उन्होंने अपने फेसबुक पोस्ट में दी है। मामले की पृष्ठभूमि में, बीते सोमवार को राज्य भाजपा ने सोशल मीडिया पर एक सूची जारी कर आरोप लगाया था कि सार्थक बंदोपाध्याय के परिवार के पास कालीघाट, जादवपुर और आमतला में सात फ्लैट सहित बड़ी संपत्ति है। हालांकि, भाजपा ने अपनी पोस्ट में किसी भी संपत्ति का सटीक पता या ठोस विवरण नहीं दिया था। इन आरोपों को सार्थक ने तत्काल राजनीतिक बदले की भावना से प्रेरित और पूरी तरह बेबुनियाद करार दिया था। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी थी कि वे भाजपा के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेंगे। अब उन्होंने अपना वादा पूरा करते हुए भाजपा के खिलाफ मानहानि का मामला दर्ज करा दिया है।

बउबाजार में बहस के दौरान हाथापाई से बुजुर्ग की मौत, पांच गिरफ्तार

कोलकाता, समाज्ञा : बउबाजार थाना अंतर्गत गोपालचंद्र लेन में गत मंगलवार को पड़ोसियों से बहस के दौरान हुई हाथापाई में एक बुजुर्ग की मौत हो गई। पुलिस ने जांच के बाद पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। मृतक की पहचान इजहार अहमद (53) के रूप में की गई है। बताया गया है कि इजहार अहमद उक्त इलाके में किराए के मकान में रहता है। गत मंगलवार को इजहार अहमद का अपने पड़ोसी मोहम्मद सलीम और उसके साथियों से, जो उसी घर में रहते थे, झगड़ा हो गया। आरोप है कि कुछ देर तक बहस के बाद इजहार अहमद को धक्का दिया गया। इस घटना में वह बीमार पड़ गए। उनके परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों ने उन्हें जल्दी से स्थानीय मेडिकल कॉलेज अस्प-ताल ले गए। हालांकि, डॉक्टरों ने बुजुर्ग को मृत घोषित कर दिया। घटना का पता चलते ही इलाके में हड़कंप मच गया। मृतक के परिवार ने बउबाजार थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने आनन-फानन में जांच शुरू कर दी। जांचकर्ताओं ने रात में विभिन्न स्थानों पर छापेमारी के बाद पांच लोगों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार लोगों के नाम मोहम्मद सलीम, मोहम्मद फजलू, मोहम्मद हबीब, मोहम्मद अयूब और मोहम्मद शाहिद हुसैन हैं। गिरफ्तार लोगों के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया गया है। मृतक के परिजनों का आरोप है कि इजहार अहमद को हृदय संबंधी समस्या थी। एक साल पहले उसकी हृदय की सर्जरी भी हुई थी। इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है।

सहस्रार्जुन समारोह समिति के नव निर्वाचित पदाधिकारियों का सम्मान

बेलिलियस पार्क में जायसवाल विकास मंच के संयोजक एवं हावड़ा जायसवाल परिवार के चेयरमैन हरीश चन्द्र जायसवाल एवं सुरेश जायसवाल, महेन्द्र जायसवाल, कृष्णा जायसवाल, अजय जायसवाल, भोला जायसवाल, सुरेश जायसवाल नेताजी, रमेश जायसवाल, मुन्ना जायसवाल, विशाल जायसवाल, मनोज गुप्ता, शम्भू जायसवाल द्वारा सहसार्जुन समारोह समिति के नव निर्वाचित अध्यक्ष विकास जायसवाल, सचिव आकाश जायसवाल, कोषाध्यक्ष गणेश जायसवाल एवं स्वागताध्यक्ष राजेश जायसवाल का स्वागत किया गया। साथ में उपस्थित थे जवाहर लाल जायसवाल, गौतम जायसवाल, मनोहर जायसवाल, सुरेश जायसवाल, संजय जायसवाल सहित अनेक गणमान्य।

नरसिंह दत्त कॉलेज की घटना के विरोध में भाजपा का हंगामा

हावड़ा, समाज्ञा : हावड़ा के नरसिंह दत्त कॉलेज में निर्वस्त्र कर रैगिंग के पुराने वीडियो के वायरल होने के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। घटना को लेकर बुधवार की सुबह कॉलेज के बाहर माहौल तनावपूर्ण हो गया। बता दें कि मंगलवार को करीब डेढ़ साल पुराने एक वीडियो के वायरल होते ही यह मामला फिर सुर्खियों में आ गया। वीडियो में दिख रहा है कि तृणमूल छात्र परिषद के सह-संयोजक सौविक राय और उनके समर्थक कॉलेज के यूनियन रूम में नए छात्रों को जबरन निर्वस्त्र कर रैगिंग कर रहे हैं। आरोप है कि इस वीडियो के सामने आने के बावजूद अभी तक आरोपित के खिलाफ कोई कड़ी कार्रवाई नहीं हुई है। मंगलवार को एसएफआई ने कॉलेज में विरोध प्रदर्शन किया और बुधवार सुबह से ही भाजपा कार्यकर्ता कॉलेज के बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने सौविक राय की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की है। पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स ने जब उन्हें हटाने की कोशिश की, तो भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ झड़प हो गई। इस घटना से कॉलेज परिसर में भारी तनाव देखने को मिला।

मुर्शिदाबाद में ग्राहक सेवा केंद्र की आड़ में फर्जी आधार कार्ड बनाने के गोरखधंधे का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार

मुर्शिदाबाद : ग्राहक सेवा केंद्र की आड़ में चल रहे फर्जी आधार कार्ड बनाने के गोरखधंधे का पुलिस ने भंडाफोड़ किया। पुलिस ने गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया। साथ ही, पुलिस ने मौके से फर्जी आधार कार्ड बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री के साथ पंचायत प्रधान का फर्जी रबर स्टैंप भी बरामद किया। कांदी अनुमंडल पुलिस आरक्षी अधिकारी शत्रेक अंबरदार ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि भरतपुर थाने के आलुग्राम ग्राम पंचायत के गोबिंदपुर गांव में इमामुल शेख अपनी दुकान में फर्जी आधार कार्ड बना रहा था। इस घटना में इमामुल शेख और नियात शेख को गिरफ्तार किया गया है। नियात शेख का घर बरायण थाने के बधुआ गांव में है। पता चला है कि वह इमामुल शेख की दुकान पर फर्जी आधार कार्ड बनाता था। इस घटना में दो लैपटॉप, एक स्कैनर, दो प्रिंटर, एक लेमिनेशन मशीन, एक आईडी स्कैनर, तीन फिंगर प्रिंट मशीन और एक वेब कैमरा बरामद किया गया है। इसके अलावा, 13 फर्जी आधार कार्ड और सौ से ज़्यादा पासपोर्ट फोटो बरामद किए गए हैं। 24,900 रुपये भी बरामद किया गया है। इतना ही नहीं, एक अंगूठे का निशान और पंचायत प्रधान की एक फर्जी मुहर भी बरामद की गई है। पुलिस सूत्रों ने बताया है कि गिरफ्तार किए गए दोनों लोगों को 10 दिन की पुलिस हिरासत की अर्जी पर कांदी उपजिला न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस इन आधार कार्डों के बनने के कारण और इन्हें बनाने वालों की जांच कर रही है।

पूर्वस्थली में सड़क दुर्घटना में बाइक सवार तीन युवकों की मौत

पूर्व बर्दवान : जिले के पूर्वस्थली के शिवतला इलाके में बुधवार को तेज रफ्तार के कारण सड़क दुर्घटना में बाइक सवार तीन युवकों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान सुजय केदारबंशी (19), मुकेश केदारबंशी (29) और दिबाकर मजूमदार (29) के रूप में की गई है। ये सभी पिला के संतोषपुर इलाके के निवासी थे। बताया गया है कि इस दिन, सुजय केदारबंशी अपनी मां के कहने पर खरीदारी करने के लिए अपनी बाइक लेकर घर से निकला था। उसके बाद, उसकी मुलाकात दिबाकर मजूमदार और मुकेश केदारबंशी से हुई। काम के बाद, वे तीनों पाटुली बाजार से सुजय की बाइक पर पिला के संतोषपुर इलाके में घर के लिए निकल रहे थे। तभी, बारिश और तेज़ रफ़्तार के कारण बाइक एक खंभे और दीवार से टकरा गई। तीनों बाइक सवार एक साथ घायल हो गए। हेलमेट न पहने होने के कारण उनके सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आईं। गंभीर हालत में उन्हें स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह खबर सुनते ही तीनों शोकाकुल परिवार के सदस्य फूट-फूट कर रोने लगे। पूर्वस्थली थाने की पुलिस शवों को बरामद कर थाने ले गई। पुलिस ने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा जाएगा।

चापड़ा में महिला तृणमूल नेता से छेड़छाड़, विलेज पुलिस कर्मी सहित चार गिरफ्तार

कोलकाता, समाज्ञा : कसबा कांड को लेकर राज्य में चल रहे सियासी उथल-पुथल के बीच तृणमूल कांग्रेस की एक महिला नेता से कथित यौन उत्पीड़न और धमकी के मामले में नदिया जिले के चापड़ा में एक विलेज पुलिस सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि महिला नेसा से पहले छेड़छाड़ की गई और फिर बाद में शिकायत वापस लेने के लिए उन्हें धमकाया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, गिरफ्तार आरोपितों में अमित पाल (विलेज पुलिस), भोला हातजी, भंजन दास और जय पाल शामिल हैं। इनमें अमित पाल और भोला हातजी पर महिला नेता से अश्लीलता और छेड़छाड़ का आरोप है, जबकि भंजन दास और जय पाल पर नेता को धमकाने और शिकायत वापस लेने के लिए दबाव डालने का आरोप है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गत 4 जुलाई की रात की चापड़ा इलाके की एक महिला तृणमूल नेता अपने मायके रानाबंध से ससुराल (क्रिश्चियनपाड़ा) जा रही थीं। रास्ते में मोहल्ले के एक मोड़ पर नशे की हालत में खड़े विलेज पुलिस कर्मी अमित पाल ने उन्हें आपत्तिजनक प्रस्ताव दिया। उसके साथ मौजूद भोला हातजी ने भी इसी तरह की हरकत की। किसी तरह महिला खुद को बचाकर घर पहुंची और पुलिस को सूचना दी। इसके बाद, अगले दिन पीडिता थाना पहुंचीं और औपचारिक रूप से शिकायत दर्ज करवाई, लेकिन मामला यहीं नहीं रुका। उसी रात भंजन दास, जय पाल और कुछ अन्य लोग उनके घर पहुंचे और शिकायत वापस लेने के लिए उन्हें धमकी दी। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए सबसे पहले अमित पाल को गिरफ्तार किया। इसके बाद, क्रमशः भोला हातजी, भंजन दास और जय पाल को भी हिरासत में ले लिया गया। पुलिस ने यह भी पुष्टि की है कि आरोपित विलेज पुलिस कर्मी अमित पाल को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है। चारों आरोपितों को बुधवार को कृष्णनगर अदालत में पेश किया गया। पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है।

स्वस्थ रहिए बारिशों के मौसम में

घनश्याम बादल

'सावन का महीना, पवन करे शोर, जियरा झूमे ऐसे, जैसे बन में नाचे मोर...' गाने की ये पक्तियां मदहोश सावन के ही आने का संदेश नहीं देती अपितु तन-मन के खुशी से झूमने की बात भी कहती हैं। सावन-भादों या फिर जुलाई-अगस्त के ये दो महीने खुशगवार बारिश की रिमझिम लेकर आते हैं। इस मौसम में किसान तो खुशी से झूमते ही हैं, युवा तन मन भी मस्ती में झूमने लगते हैं। पकवानों और पके आमों के खाने का मजा ही कुछ है बारिश की फुहारों के बीच।

लेकिन यह मस्ती, मौज और झूमने, खाने पीने का मजा भी तंदुरूस्त व स्वस्थ तन-मन ही ले सकता है। बारिश का मौसम खुशगवार व सुहावना होने के साथ-साथ बड़ा नाजुक भी होता है। पल में गर्मी, पल में बारिश मौसम के उतार-चढ़ाव को बल देती है। इन दिनों तापमान के अधिक होने तथा वातावरण में नमी के होने और पसीना आने से सर्द-गरम होने एवं जुकाम होने की प्रबल संभावना बनी रहती है, अतः धूप से तुरंत उठकर भीगने से बचना चाहिए।

घर से बाहर जाते समय रेनकोट या छाता अवश्य ही साथ लेकर चलना चाहिए ताकि अचानक ही उमड़ घुमड़ आए बादलों से बरसी

चांदी सी बूंदें आपके स्वास्थ्य की दुश्मन न बन जाएं।

बारिश के मौसम में अनेक कीटाणु एवं वायरस भी वातावरण में आ जाते हैं तथा जरा सा स्वास्थ्य नरम पाते ही ये टूट पड़ते हैं। जुकाम, बुखार, मलेरिया एवं वायरल तो जैसे घात ही लगाए बैठे रहते हैं। यही नहीं, अनेकों कीड़े मकोड़े भी जमीन में पानी भरने से बाहर निकल आते हैं अतः नंगे पैर जमीन पर चलने से अंधेरे में तो विशेष रूप से बचना ही चाहिए।

बारिश के मौसम में बच्चे चार बूंद पड़ते ही नहाने निकल पड़ते हैं जो खतरे का सबब भी बन सकता है क्योंकि एक तो बच्चों का शरीर कोमल होता है, ऊपर से वातावरण में वायुमंडल में जमे धूल कण तथा गैसें उस पानी में घुल कर आती हैं जो त्वचा में संक्रमण कर सकती हैं। अतः नहाने का मन होने पर भी 10-15 मिनट की बारिश के बाद ही बाहर निकलने दें बच्चों को।

बच्चों को पानी का छपछपाना बहुत लुभाता है अतः वे गलियों में इकट्ठे हुए पानी में निकल पड़ते हैं। यह गंदा पानी उनके कोमल पैरों में फंगल इंफेक्शन का कारण बन सकता है और अनेक त्वचा रोग पैदा कर सकता है अतः बच्चों को गंदे पानी से बचाएं तथा बारिश स्नान के बाद भी स्वच्छ पानी से जरूर नहलाएं।

यदि बारिश में आप भीग जाएं तो घर लौटते ही सबसे पहले साफ तौलिए से शरीर पोंछ कर तुरंत ही सूखे कपड़े पहनकर खाज, खारिश व फफूंद के आक्रमण से बचें। एक दूसरे के अधोवस्त्र जैसे कच्छा, बनियान, ब्रा वगैरह तो इन दिनों भूल कर भी न पहनें।

चप्पल या जूते भी ऐसे पहनें जिनके तले सपाट या फिसलने वाले न हों। चमड़े के चप्पल जूते भीग कर खराब तो हो ही जाते हैं, इंफेक्शन का कारण भी बन जाते हैं अतः इस मौसम में प्लास्टिक, नायलोन या सिंथेटिक जूते-चप्पल इस्तेमाल किया जा सकते हैं मगर पहले देख लें कि आप की त्वचा इनसे रियेक्शन तो नहीं करती।

इन दिनों खान-पान पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है। मन तो पकौड़े व गर्मागर्म समोसों की तरफ भागता है परन्तु पाचन तंत्र इन दिनों अधिक क्रियाशील नहीं रह पाता, सो तले भुने, तेज मसालों वाले चटपटे पदार्थों से यथा संभव बचें।

कच्चे व कीटाणु रहित सलाद तथा ताजे फलों का सेवन धोकर करें। इन दिनों मौसमी फलों में आम, खीरा, नाशपाती, सेब, जामुन, आड़ू, अमरूद आदि का सेवन स्वास्थ्य के लिये लाभदायक होते हैं। बाजार से कटे हुए व सड़े गले फल कदापि न खाएं।

भोजन में दलिया, खिचड़ी, सत्तू, चावल तथा चपाती ले सकते हैं परन्तु ठण्डे बासी भोजन में बैक्टीरिया हो सकता है, अतः ताजा ही खाएं। बहुत ज्यादा आम भी फोड़े फुंसी का कारण बनते हैं अतः आम के साथ पर्याप्त मात्रा में दूध लें या फिर मैंगो शेक के रूप में आम के गुणों का लाभ लें।

बारिश के मौसम में त्वचा की रक्षा के लिए किसी अच्छी क्वालिटी की क्रीम प्रयोग करें। एण्टीसेप्टिक या हर्बल क्रीम अच्छी रहती है। हां माश्चराइजर एवं ऑयली क्रीम से बचें क्योंकि इन दिनों वैसे ही त्वचा प्रायः नम एवं तैलीय रहती है, अतः इनसे त्वचा के रंध्र बंद होने से परेशानी हो सकती है।

तो फिर आइये, बारिशों का मौसम है। अपने आपको स्वस्थ रखकर इस का पूरा लुत्फ उठाइए, झूमिए, नाचिये और गाइए। (स्वा. द.)

सेहत की खबरें

सोनी मल्होत्रा

प्रकृति के समीप व्यक्ति स्वयं को महसूस करता है तरोताजा

एयरकंडीशनर लगे बंद कमरे आज की आधुनिक जीवन शैली का एक अंग बनते जा रहे हैं। दफ्तर, घर, सब जगह एयरकंडीशनर लगे होना एक आम बात है पर ये एयरकंडीशनर लगे बड़े-बड़े कमरे व्यक्ति को प्राकृतिक वातावरण से दूर करते जा रहे हैं। अभी हाल ही में ब्रिटेनवासियों पर किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि प्रकृति से दूर, बंद दरवाजों वाले एअरकंडीशन दफ्तरों में काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी दिन के अंत में स्वयं को तनावग्रस्त और थका हुआ महसूस करते हैं।

यही नहीं इन दफ्तरों में काम करने वाले लोगों ने प्राकृतिक ऊर्जा के अभाव की भी शिकायत की। इस सर्वेक्षण में न केवल शहर में रहने वाली आबादी बल्कि शहरों से दूर बसी आबादी में रहने वालों में भी काफी अंतर देखने को मिला। शहरों से दूर बसी यह आबादी स्वच्छ सांस ले रही है व प्रकृति के समीप रहते हुए स्वयं को तरोताजा महसूस करती है जबकि शहरों में रहने वाले लोगों को स्वच्छ वायु तक नसीब नहीं है।

अवसाद जन्म देता है हृदय रोगों को

हाल ही में किए गए एक नवीन शोध के अनुसार जो व्यक्ति अवसादग्रस्त रहते हैं, उन्हें हृदय संबंधी रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि हृदय संबंधी रोगों में मनोवैज्ञानिक कारण प्रमुख भूमिका निभाते हैं। दिमागी तनाव के कारण रक्त नलिकाओं के बगल में 'प्लेक्सेस' बढ़ता है जिसके कारण धमनियों में अवरोध आ जाता है और हृदय संबंधी रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। इस संबंध में इससे पूर्व भी कई शोध हुए हैं और अवसाद को न केवल हृदय रोगों बल्कि कई अन्य गंभीर रोगों की जड़ माना गया है। इसलिए व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी है अवसाद से बचना व खुश रहना।

सॉफ्ट ड्रिंक्स बच्चों को सिर्फ मोटापा दे रहे हैं

'द लेन्सट' मेडिकल जर्नल में प्रकाशित एक शोध के अनुसार सॉफ्ट ड्रिंक्स का अधिक सेवन बच्चे में मोटापा होने की संभावना को बढ़ाता है। एक अमरीकी टीन एजर एक दिन में 15-20 चम्मच अतिरिक्त चीनी का सेवन करता है जो वह सोडा और अन्य सॉफ्ट ड्रिंक्स से लेता है। इस शोध में 11-12 वर्ष के 548 बच्चों पर सॉफ्ट ड्रिंक्स के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

इस शोध में पाया गया कि एक चीनीयुक्त सॉफ्ट ड्रिंक्स ने बच्चे के बॉडी मास इंडेक्स यानी बी. एम. आई में 0.18 प्वाइंटस की वृद्धि की। अगर इसके अतिरिक्त उन्हें एक भी सोडा या सॉफ्ट ड्रिंक्स अधिक दिया जाता तो उनके मोटे होने की संभावना 60 प्रतिशत अधिक बढ़ती है।

विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि कम खाना और अधिक सॉफ्ट ड्रिंक्स के सेवन से बेहतर है कि वे सामान्य मात्रा में भोजन लें और सॉफ्ट ड्रिंक्स का सेवन घटाएं। अगर बच्चों में मोटापे की यही दर रही तो बाद में उन्हें मधुमेह, हृदय रोग कैंसर और आर्थराइटिस होने की संभावना बढ़ जाएगी।

नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है मालिश

भारतीय विशेषज्ञों के अनुसार तेल की मालिश नवजात शिशु की विकास दर में तेजी लाती है व नवजात शिशु को अच्छी नींद भी देती है। भारत ही नहीं, विश्व भर में नवजात शिशु के लिए मालिश की महत्ता को स्वीकार किया गया है। इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च में प्रकाशित एक शोध में यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंसिस डॉ के. एन अग्रवाल और उनके सहयोगियों ने 125 स्वस्थ नवजात शिशुओं पर मालिश के प्रभाव को जानने की कोशिश की। इन शिशुओं की उम्र 6 हफ्ते की थी और इन्हें पांच ग्रुप में बांटा गया।

इनमें से चार ग्रुप के शिशुओं की अलग-अलग तेल हर्बल आयल, तिल ऑयल, सरसों के तेल और विटामिन ई युक्त मिनरल आयल से मालिश की गई और एक ग्रुप के बच्चों की किसी भी आयल से मालिश नहीं की गई। यह मालिश चारों ग्रुप को 10 मिनट प्रतिदिन चार हफ्ते तक दी गई। शोध के अंत में विशेषज्ञों ने पांचों ग्रुप के बच्चों के वजन, लम्बाई आदि का अध्ययन किया और पाया कि जिन चारों ग्रुप के बच्चों की मालिश हुई थी, उनके वजन, लम्बाई में बढ़ोतरी पाई गई और सबसे अधिक बढ़ोतरी तिल तेल से मसाज पाने वाले बच्चों में पाई गई।

विशेषज्ञों ने इस शोध में यह भी पाया कि बच्चों को मसाज के बाद अच्छी नींद आई जो मालिश के फलस्वरूप रक्त संचार में वृद्धि और बच्चों के विकास हारमोन के स्तर में वृद्धि के कारण थी।

नीतू गुप्ता

जीने के लिए सांस लेना सबसे अहम है। सांस चल रही है तो आप जिंदा हैं। सांस बंद होने पर दुनिया से अलविदा होना पड़ता है। पैदा होने से लेकर जीवन के आखिरी समय तक हम सांस लेते हैं। फिर भी हम सही तरीके से सांस नहीं लेते। अगर हम सही तरीके से सांस लेना सीख लें तो हम अधिक स्वस्थ और प्रसन्न रह सकते हैं। हम अपने लंग्स की क्षमतानुसार सांस नहीं लेते, उसका 15-20 प्रतिशत तक इस्तेमाल ही करते हैं।

सांस लेने का सही तरीका-

सांस लेने का सही तरीका जानने के लिए सांस लेते समय पेट पर हाथ रखें। अगर आपका पेट सांस लेने के साथ फूलता है और सांस छोड़ने पर पेट अंदर जाता है। यह सांस लेने और छोड़ने का सही तरीका है अक्सर लोग सांस लेते समय पेट अंदर करते हैं और सांस छोड़ते समय पेट बाहर। यह गलत है। ऐसा करने से हमारे लंग्स और हार्ट पर अधिक दबाव पड़ता है।

इसके लिए दिन में कई बार स्वयं को चेक करना चाहिए कि आप सांस ठीक ले रहे हैं या गलत। बार-बार के अभ्यास से हम सही तरीके से सांस ले सकते हैं। गुब्बारा इसका सही उदाहरण है जैसे हवा भरने के साथ-साथ गुब्बारा फूलता है और हवा निकलने पर गुब्बारा सिकुड़ना शुरू हो जाता है इसी प्रकार हमारा पेट भी सांस लेने और छोड़ने के साथ काम करता है।

एक मिनट में हम (आम आदमी) 12 से 20 सांस लेते हैं, खिलाड़ी और ज्यादा। शारीरिक श्रम करने वालों की सांस लेने की क्षमता 10 से 12 होती है। मोटे लोग ज्यादा सांस लेते हैं। एक मिनट में में 12 से 25 सांस लेना नार्मल माना जाता है। इससे अधिक या कम ठीक नहीं। बूढ़े लोग एक मिनट में 12 से 28 तक सांस लेते हैं जो नार्मल है।

गहरी धीमी सांस लेने के लाभ-

सांसें हमेशा धीमी और गहरी लें। इससे तनाव कम होता है, ब्लडप्रेशर कम होता है, शरीर में खून का दौरा बेहतर होता है। शरीर से ऐसे हार्मोन्स निकलते हैं जो हमारे दर्द को कम करते हैं, मन शांत रहता है, मन पर कंट्रोल करना आसान होता है। हम सतर्क रहते हैं और नर्वस सिस्टम बेहतर होता है। लंबी, गहरी सांसों से याददाश्त अच्छी होती है और मानसिक एकाग्रता बढ़ती है। हमारी पाचन प्रणाली में सुधार होता है और एनर्जी का स्तर बढ़ता है।

तेज सांस लेने के नुकसान-

तेज तेज सांस लेने से शरीर में आक्सीजन कम हो जाती है जिससे तनाव, अस्थमा, निमोनिया व अटैक की आशंका बढ़ जाती है। हमारी मांसपेशियों में अकड़न आने से क्रैम्पस पड़ते हैं। हार्ट रेट बढ़ता है, ब्लड प्रेशर बढ़तर है, सांस लेने में मुश्किल होती है। इसलिए आज से ही आदत डालिए सही सांस लेने की ताकि शरीर को नुकसान होने से बचाया जा सके। हर घंटे के बाद 3-4 मिनट तक सही सांस लेने का अभ्यास करें। (स्वा. द.)

शहद की परीक्षा- असली है या नकली

उमेश कुमार साहू

आजकल मिलावटी चीजों की बाढ़ सी आ गई है। शहद भी इससे बच नहीं पाया है। शहद में गुड़ या शक्कर की चाशनी, ग्लूकोस, फ्रक्टोस आदि की मिलावट की जाती है। यूं तो मिलावटी शहद से उतनी हानि नहीं होती लेकिन जितना फायदा होना चाहिए उतना नहीं मिल पाता। हां मधुमेह (डायबिटीज) के रोगी को ऐसा शहद नुकसान पहुंचा सकता है।

अब बात आती है कि आखिर कैसे पता करें कि शहद असली है या नकली? लीजिए प्रस्तुत हैं कुछ आसान उपाय जिससे आप तुरंत शहद की शुद्धता जांच सकते हैं -

- कांच के गिलास में साफ पानी भरकर इसमें शहद की 2-3 बूंद टपकाएं। यदि शहद सीधा गिलास की सतह में जाकर बैठ जाए तो असली है और आकार में बड़ा हो जाए, पानी में फैल जाए या बिना हिलाए घुल जाए तो शहद नकली यानी मिलावटी है।
- एक कटोरी में थोड़ा शहद लेकर माचिस की तीली जलाकर शहद के पास ले जाएं। यदि शहद जलने लगे तो असली है, नहीं जले तो मिलावटी है।
- शहद को प्लेट में टपकाएं। यदि प्लेट पर शहद की आकृति सांप की कुंडली जैसी बन जाए तो शहद शुद्ध है। मिलावटी शहद प्लेट में फैल जाएगा।
- शुद्ध शहद सर्दी में जम जाता है और गर्मी में पिघल जाता है जबकि मिलावटी शहद हमेशा एक जैसा रहता है।
- रुई की बत्ती बनाकर शहद में भिगोएं, इस बत्ती को जलाने से यदि बत्ती बिना आवाज के जले तो शहद असली है और यदि चिट-चिट आवाज करके जले तो मिलावटी है।
- एक सफेद कपड़े में शहद लगाकर रखें। थोड़ी देर बाद इसे पानी से धो लें, यदि कपड़े में दाग लग जाए तो यह मिलावटी शहद है। शुद्ध शहद का कपड़े पर दाग नहीं लगता।
- शुद्ध शहद पारदर्शी होता है जबकि मिलावटी शहद पारदर्शी नहीं होता।
- शुद्ध शहद में यदि मक्खी गिर जाए तो फंसती नहीं। फड़फड़ा कर निकल जाती है जबकि अशुद्ध शहद में मक्खी फंस जाती है तो निकल नहीं पाती।

तो जब भी आप शहद खरीदें, एक बार उसकी शुद्धता की जांच इन विधियों से जरूर कर लें ताकि प्रकृति के इस कीमती और गुणकारी वरदान का पूरा लाभ मिल सके।

गले को सुखद अहसास देते पानी के गरारे

मौसम बदलने पर ठंडा गर्म का सेवन बिना अंतराल के करने पर, ज्यादा जोर से चिल्लाने पर, प्रदूषण में बाहर ज्यादा रहने पर गला खराब होना, दर्द होना यह आम समस्या लोगों में परेशानी का कारण बनी रहती है। हल्के गुनगुने पानी में नमक मिलाकर गरारे करना ओरल हैल्थ के लिए अच्छा माना जाता है। डाक्टर्स भी अब गरारे करने की सलाह देते हैं क्योंकि शुरूआत में गला दर्द या खराब होने पर इसे दिन में दो से तीन बार करें तो लाभ मिलता है।

थोड़ा दांतों में दर्द होने पर भी डेंटिस्ट नमक मिले पानी से कुल्ला करने को कहते हैं क्योंकि नमक का पानी मुंह के गंदे बैक्टीरिया को साफ करता है और उन्हें वापस मुंह में आने से रोकता है। नमक मिला गुनगुना पानी गले की खराश,सर्दी, जुकाम, मुंह में अल्सर और दांतों की तकलीफ से राहत दिलाता है।

गरारे और कुल्ला कैसे करें-

एक गिलास गुनगुने पानी में आधा चम्मच नमक मिला लें, फिर इस पानी को मुंह में भरकर मुंह थोड़ा ऊपर कर गरारे करें ताकि गले को उस नमक मिले पानी से राहत मिले। फिर पानी को गिरा दें, पुनः भरकर फिर करें। इस प्रकार इस प्रक्रिया को कई बार दोहराएं। ध्यान दें नमक वाला पानी मुंह से बाहर फेंकना है उसे पीना नहीं है अन्यथा आपको डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है और हाई ब्लड प्रेशर भी हो सकता है। कई बार कैल्शियम की कमी भी हो सकती है।

मुंह में मसूड़ों के सूजने पर गुनगुने पानी में नमक मिलाकर मुंह में भरें और उस पानी को मुंह में घुमाएं और बाहर फेंके, इस प्रकार इस प्रक्रिया को एक बार में तीन चार बार करें और दिन में दो से तीन बार करें।

गले की खराश:-

गले की खराश या गले के अंदर सूजन होने पर नमक के पानी से गरारे करना बेहतर और आसान उपाय है। नमक वाला पानी गले के सूजे हुए टिश्यूज को आराम पहुंचाता है जिससे सूजन और खराश से राहत मिलती है।

मुंह में अल्सर:-

मुंह में अल्सर होने पर नमक वाले पानी से गरारे करने पर अल्सर में होने वाले दर्द से राहत मिलती है और सूजन भी कम होती हे। टांसिल्स में भी गरारे लाभप्रद होते हैं।

साइनस:-

शोधकर्ताओं के अनुसार साइनस के रोगियों को भी नमक वाला पानी आराम पहुंचाता है। साइनस संबंधित रोगियों को दिन में कम से कम चार बार नमक वाले गर्म पानी से गरारे करने चाहिएं।

प्रदूषण से एलर्जी

धूल मिट्टी के संपर्क में आने से गले में खिचखिच होने पर घर आकर गर्म पानी से गरारे करने से राहत मिलती है। मुंह के बैक्टीरिया को खत्म करने के लिए भी नमक वाले पानी से कुल्ले करें। धूल मिट्टी से हुई एलर्जी में नमक वाले पानी से आराम मिलता है।

मसूड़ों की सूजन कम करने में और मसूड़ों को हैल्दी रखने के लिए नमक वाले पानी से कुल्ले करते रहें। (स्वा. द.)

एक पूर्ण आहार: सत्तू

गिरीश चन्द्र ओझा

गांव ही क्या, शहरों में भी लोग सत्तू बड़े शौक से खाते हैं। इसे लोग सतुआ भी कहते हैं। जौ, मटर, चना, अरहर को भून कर मिलाकर पीस लेते हैं। पिसा हुआ मिश्रण ही सतुआ कहलाता है। मुख्यतः सतुआ जौ का ही होता है पर मटर, चना और अरहर मिलाने से इसकी सुपाच्यता तथा गुणवत्ता बढ़ जाती है। कुछ लोग केवल जौ का सतुआ ही बड़े प्रेम से खाते हैं।

सतुआ पानी में मिलाकर, फिर मथकर खाया जाता है। इच्छा के अनुसार नमक या गुड़ मिलाया जाता है। गुड़ के शर्बत में भी सतुआ मथकर (सानकर) खाया जाता है। कुछ लोग तो गुड़ में सतुआ लपेट कर बड़े प्रेम से खाते हैं। यह खाने में अत्यन्त स्वादिष्ट होता है।

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में तो सतुआ को पक्का भोजन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यहां के लोग खाने के अवसर पर मात्रा सतुआ ही खाते हैं मगर यहां यह नहीं भूलना चाहिए कि इसे पक्के भोजन के रूप में ही यहां के लोग खाते हैं। कच्चे भोजन के रूप में दाल भात, रोटी सब्जी, दूध, दही आदि बनते हैं।

सतुआ भोजन के स्थान पर केवल बलिया में ही प्रयोग किया जाता है, ऐसी बात नहीं है। देश के अन्य भागों में भी लोग मौके-बेमौके सतुआ खाते हैं।

सतुआ को पानी में घोलकर नमक मिलाकर पिया जाता है। गर्मी के दिनों में यह पेट को शीतल रखता है। जो सतुआ मथकर या सानकर खाया जाता है, वह गरिष्ठ होता है और देर से पचता है।

उत्तरी भारत के कुछ क्षेत्रों में तो वर्ष में एक बार ऐसा त्योहार मनाया जाता है जिस दिन केवल सतुआ ही खाया जाता है। यह त्योहार उन दिनों पड़ता है जब आमों में फल लगने शुरू होते हैं। आम की चटनी के साथ सतुआ खाने की प्रथा आज भी इन क्षेत्रों मे स्थापित है।

सतुआ शरीर के कई प्रकार के रोगों में उपयोगी होता है। पाचन शक्ति की कमजोरी में जौ का सतुआ लाभप्रद होता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सतुआ एक पूर्ण, उपयोगी, सर्वप्रिय तथा सस्ता भोजन है जिसे धनी-निर्धन, राजा-रंक, बाल-वृद्ध सभी खाते हैं भले ही मौके-बेमौके। (स्वा. द.)

स्वास्थ्य सुरक्षा: नियम एवं परहेज

मीना जैन छाबड़ा

मनुष्य का स्वस्थ रहना स्वयं उसके अपने ही हाथों में है बशर्ते वह स्वयं के लिए कुछ नियम निर्धारित करे। जिस प्रकार किसी भी काम के लिए नियम एवं शर्तें लागू होती हैं, उसी प्रकार स्वस्थ एवं रोग मुक्त जीवन के लिये भी कुछ नियम एवं परहेज अति आवश्यक हैं।

- भोजन के साथ जल न पिएं। खाने के एक घंटा पहले या एक घंटा बाद ही जल का सेवन करें।
- दिन भर में तीन चार लिटर जल का सेवन करें। पेशाब करने के बाद थोड़ा पानी अवश्य पिएं।
- अन्न का आहार चौबीस घंटे में दो बार या एक ही बार लें। बार बार ठोस आहार मत खाएं। खूब भूख लगने पर ही भोजन करें।
- दोपहर के भोजन के बाद तथा शाम के भोजन के बाद 10-15 मिनट वज्रासन पर बैठें।
- किसी भी तीव्र पीड़ा, कष्ट, क्रोध या दुःख के समय भोजन न करें। भोजन शांत मन से एवं रूचिपूर्वक ही करें।
- भूख, अरूचि या अनिच्छा होने पर हल्का भोजन केवल फल, सब्जियां या जूस, सूप, रस, छाछ आदि ही लें या उपवास कर लें।
- जीर्ण और जटिल रोगों की अवस्था में निम्न वस्तुएं एवं खाद्य त्याग दें जैसे पकी दालें, दूध, चीनी, चावल, आलू, नमक, मिर्च-मसाले, चाट, खटाई, घी-तेल में तले पकवान, मिठाइयां, नमकीन, बेसन, मैदा आदि।
- अण्डा, मांस, मछली, शराब, गांजा, ड्रग्स, भांग, अफीम, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, सभी नशीले मादक पदार्थ, उत्तेजक मादक रसायन औषधियां और बोतलबंद पेय पदार्थों को सदैव के लिए त्याग दें।
- खान-पान, रहन-सहन की आदतों एवं नियमों का ठीक ढंग से पालन करें। संयम और परहेज रखें। खान-पान में परिवर्तन, सुधार निरन्तर करने से निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होने लगता है।
- भोजन, रहन-सहन के सुधार के साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सा के शोधक उपचारों का होना भी बहुत आवश्यक है जिससे पाचन संस्थान और शरीर की जीवनी शक्ति की सक्रियता बढ़े और उसमें शुद्धता आए।
- भोजन का प्राकृतिक रूप से संतुलित, नियंत्रित और शुद्धिकारक, पोषक होना परम आवश्यक है क्योंकि 'भोजन ही औषधि है' और इसके पालन के बिना उपचार अधूरा है। (स्वा. द.)

जानलेवा भी बन सकता है डायरिया

सुनीता गाबा

'डायरिया', जिसे दस्त रोग भी कहा जाता है, प्रायः बच्चों के लिए खतरनाक माना जाता है। इस रोग का मुख्य संबंध खान पान और पाचन शक्ति से होता है। अधिकतर इस रोग की चपेट में छोटे बच्चे आते हैं पर यह किसी भी आयु वाले को हो सकता है।

बच्चों के लिए इसे खतरनाक इसलिए माना जाता है क्योंकि बार-बार दस्त आने से शरीर में पानी की तेजी से कमी होती है जो प्रायः बच्चे इसे सहन नहीं कर पाते। बड़े तो अपनी शारीरिक क्षमता के कारण इसे झेल लेते हैं।

डायरिया अधिकतर आस-पास की गंदगी और गंदे पानी पीने के कारण होता है। यदि हम अपने आसपास स्वच्छ वातावरण बनाए रखें और पानी भी स्वच्छ पिएं तो हम काफी हद तक इस पर काबू पा सकते हैं।

- भोजन और अन्य खाद्य पदार्थों को सदैव ढककर रखना चाहिए। ऐसा करने से उन पर मक्खी मच्छर नहीं बैठ पायेंगे।
- मक्खी मच्छर अधिकतर गंदगी पर ही बैठते हैं या जहां पानी एकत्रित रहता हो। इसलिए घर के अन्दर तथा आसपास सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि मच्छरों, मक्खियों को पनपने का स्थान न मिल सके।
- बच्चों को शौच के बाद अच्छी तरह से हाथ धोना सिखाना चाहिए ताकि गंदगी खाने के साथ शरीर में प्रवेश न कर सके।
- पानी उबाल कर ठंडा कर पीना चाहिए या फिल्टर किया पानी पीना चाहिए पर फिल्टर में यह ध्यान रखें कि माह में दो बार कैंडल्स को उबालना चाहिए और साल में दो बार कैंडल्स तब्दील करनी चाहिएं ताकि विषाणु पनपने न पायें।

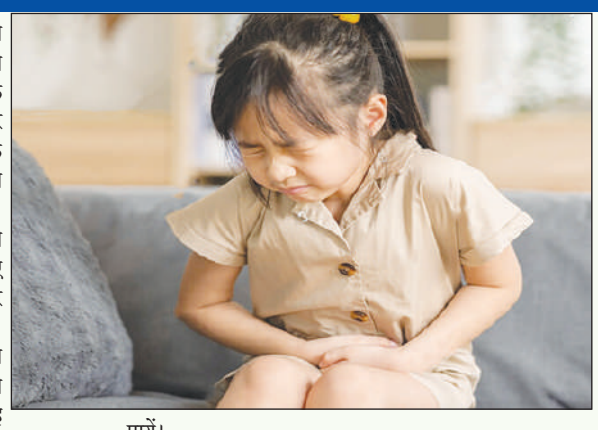

- घर की महिला को खाना बनाने से पूर्व अच्छी तरह हाथ साफ कर खाना बनाना चाहिए।
- बच्चों और बड़ों को नाखून नहीं बढ़ाने चाहिए। हर दो सप्ताह में नाखून काटते रहना चाहिए क्योंकि लम्बे गंदे नाखूनों के ज़रिये रोगाणु शरीर में आसानी से प्रवेश कर जाते हैं।
- डायरिया के रोगी के वस्त्रा अलग से धोने चाहिए और बाद में फर्श और हाथ अच्छी तरह साफ कर लेने चाहिए।
- यदि घर पर कॉकरोच वगैरह हों तो उनका ट्रीटमेंट करवा लेना चाहिए।

लक्षण:-

- रोगी को बार-बार उल्टी व पेट में दर्द होता है।
- शरीर में ऐंठन महसूस होती है. गला रूंधा लगता है।
- रोगी की जीभ सूखती है प्यास लगती है और कमजोरी होती है।
- चमड़ी ढीली और ठंडी पड़ जाती है, आंखें अंदर की तरफ धंस जाती हैं।
- रोगी दिन में कई बार शौच जाता है और पेट में मरोड़ उठती हैं।
- रोगी की टांगों में जान नहीं रहती।
- ऐसी स्थिति के होने पर तुरन्त रोगी को डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। जब तक डॉक्टर के पास जायें। तब तक घरेलू उपचार शुरू कर दें।
- रोगी के शरीर में पानी की कमी न होने पाये, इस हेतु जीवन रक्षक घोल दें। शिकंजी, इलेक्ट्राल, नारियल पानी, चावल का मांड, लस्सी आदि भी देते रहें।
- उलटी होने पर भी रोगी को तरल पेय देते रहें।
- बच्चा बहुत छोटा है और मां का दूध पीता है तो मां को स्तनपान कराते रहना चाहिए। (स्वा. द.)

न्यूज इन ब्रीफ

दिल्ली जा रहा इंडिगो का विमान तकनीकी खराबी के कारण पटना लौटा, सभी यात्री सुरक्षित

पटना : पटना से 175 यात्रियों को लेकर बुधवार सुबह दिल्ली जा रहे इंडिगो के विमान से पक्षी टकरा गया, जिसके बाद इंजन में तकनीकी खराबी आने से विमान जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर वापस लौट आया। हवाई अड्डे के अधिकारियों ने यह जानकारी देते हुए बताया कि सभी 175 यात्री और चालक दल के सदस्य सुरक्षित हैं। पटना हवाईअड्डे की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है, ''पटना से दिल्ली जाने वाली आईजीओ5009 उड़ान ने सुबह आठ बजकर 42 मिनट पर उड़ान भरने के बाद पक्षी के टकराने की सूचना दी, निरीक्षण के दौरान रनवे पर एक मृत पक्षी पाया गया। 'एप्रोच कंट्रोल यूनिट' ने विमान को इसकी सूचना दी।

पचास रुपये का सिक्का जारी करने कोई योजना नहीं, लोग बैंक नोट पसंद करते हैं : केंद्र ने अदालत से कहा

नयी दिल्ली : केंद्र सरकार ने दिल्ली उच्च न्यायालय को सूचित किया है कि 50 रुपये का सिक्का जारी करने की उसकी कोई योजना नहीं है, क्योंकि लोग बैंक नोट को अधिक पसंद करते हैं। केंद्र ने यह जानकारी एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान दी जिसमें ऐसे करेंसी नोट और सिक्के, विशेष रूप से 50 रुपये और उससे कम मूल्य के जारी करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है जिन्हें दृष्टिबाधित व्यक्ति आसानी से पहचान सकें। मुख्य न्यायाधीश डी.के. उपाध्याय और न्यायमूर्ति अनीश दयाल की पीठ ने बुधवार को कहा कि यद्यपि जवाबी हलफनामा रजिस्ट्री में दाखिल किया गया था, लेकिन यह रिकार्ड पर नहीं आया है। पीठ ने कहा, ''इसे रिकॉर्ड में दर्ज करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं।'' इसी के साथ मामले की सुनवाई स्थगित कर दी। सिक्का एवं मुद्रा प्रभाग में अवर सचिव द्वारा दायर हलफनामे में कहा गया है,''भारतीय रिजर्व बैंक ने 2022 में प्रचलन में मौजूदा सिक्कों और बैंक नोट के उपयोग की परिपाटी का विश्लेषण करने के लिए एक सर्वेक्षण किया था। निष्कर्षों से पता चला है कि 10 रुपये और 20 रुपये मूल्यवर्ग के सिक्कों की तुलना में बैंक नोटों को प्राथमिकता दी जा रही है।''

गोवा सरकार पिटबुल और रॉटवीलर कुत्तों के प्रजनन पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक लाएगी

पणजी : गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार 21 जुलाई से शुरू होने जा रहे विधानसभा के मानसून सत्र में पिटबुल और रॉटवीलर कुत्तों के प्रजनन और उन्हें पालने पर प्रतिबंध लगाने के प्रावधान वाला विधेयक पेश करेगी। सावंत ने कहा कि उनकी अध्यक्षता में राज्य मंत्रिमंडल ने गोवा पशु प्रजनन, पालन और विनियमन एवं मुआवजा विधेयक, 2025 को विधानसभा में पेश करने की मंजूरी दे दी है।

बेंगलुरु: चिटफंड कंपनी के जरिए 50 करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी करने के बाद दंपति फरार

बेंगलुरु : केरल के एक दंपति ने बेंगलुरु में 'चिटफंड कंपनी' के जरिए करीब 1,300 निवेशकों से 50 करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी की और उसके बाद दोनों फरार हो गए। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उनके अधिकतर निवेशक केरलवासी हैं। उसने बताया कि निवेशकों में से एक पी.टी. सवियो ने योजना में 70 लाख रुपये गंवाने का दावा किया और पांच जुलाई को राममूर्ति नगर थाने में अधिकारियों से संपर्क किया, जिसके बाद यह मामला प्रकाश में आया। पुलिस ने बताया कि शिकायत के आधार पर बेंगलुरु के राममूर्ति नगर इलाके में एएंडए चिट फंड्स एंड फाइनेंस के मालिक टॉमी ए और उसकी पत्नी शिनी टॉमी के खिलाफ चिट फंड अधिनियम, अनियमित जमा योजना प्रतिबंध अध्यादेश 2019 की संबंधित धारा और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 318 (धोखाधड़ी), 316 (आपराधिक विश्वासघात) के तहत मामला दर्ज कर लिया गया।

अरुणाचल प्रदेश की सीमा तिब्बत से लगती है, चीन से नहीं: मुख्यमंत्री पेमा खांडू

मुख्यमंत्री ने किया दलाई लामा को भारत रत्न देने का समर्थन, केंद्र से करेंगे सिफारिश

नयी दिल्ली : चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू का कहना है कि ये नाम बदलने का खेल है, वरना हकीकत ये है कि हमारे राज्य की सीमा चीन से नहीं बल्कि तिब्बत से लगती है। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ने यह बात 'पीटीआई वीडियो' के साथ साक्षात्कार में कही। खांडू ने साक्षात्कार में कहा कि अगर यह तथ्यात्मक रूप से अज्ञानतापूर्ण लगता है तो जरा दोबारा विचार करें। वास्तव में अरुणाचल प्रदेश की 1,200 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा तिब्बत से लगती है, चीन से नहीं। उनका यह बयान क्षेत्र की संवेदनशीलता और अरुणाचल प्रदेश पर चीन के दावे तथा राज्य के स्थानों के बार-बार नाम बदलने के उसके रुख के बीच आया है। जब खांडू से कहा गया कि अरुणाचल प्रदेश की चीन से 1,200 किलोमीटर लंबी सीमा लगती है तो उन्होंने तुरंत हस्तक्षेप करते हुए कहा, '' यहां मैं आपकी गलती सुधार दूं। हमारी सीमा तिब्बत के साथ लगती है, चीन के साथ नहीं।'' उन्होंने कहा, ''आधिकारिक तौर पर तिब्बत अब चीन के अधीन है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन मूल रूप से हम तिब्बत के साथ सीमा साझा करते हैं। और अरुणाचल प्रदेश में हम तीन अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को साझा करते हैं - भूटान के साथ लगभग 150 किलोमीटर, तिब्बत के साथ लगभग 1,200 किलोमीटर, जो देश की सबसे लंबी सीमाओं में से एक है, और पूर्वी हिस्से में म्यांमा के साथ लगभग 550 किलोमीटर।'' मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि भारत का कोई भी राज्य सीधे तौर पर चीन के साथ सीमा साझा नहीं करता केवल तिब्बत के साथ करता है और उस क्षेत्र पर चीन ने 1950 के दशक में जबरन कब्जा कर लिया था।

दिल्ली की अदालत ने तहव्वुर राणा की न्यायिक हिरासत 13 अगस्त तक बढ़ायी

नयी दिल्ली : दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को 26/11 मुंबई आतंकवादी हमले के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा की न्यायिक हिरासत 13 अगस्त तक बढ़ा दी। विशेष न्यायाधीश चंदर जीत सिंह ने यह आदेश पारित किया। राणा की न्यायिक हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद उसे वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए अदालत में पेश किया गया। राणा 26/11 हमलों के मुख्य षड्यंत्रकारी अमेरिकी नागरिक डेविड कोलमैन हेडली उर्फ दाऊद गिलानी का करीबी सहयोगी है। अमेरिकी उच्चतम न्यायालय द्वारा चार अप्रैल को भारत में प्रत्यर्पण के खिलाफ राणा की पुनर्विचार याचिका खारिज किए जाने के बाद उसे भारत लाया गया था। गौरतलब है कि 26 नवंबर 2008 को 10 पाकिस्तानी आतंकवादियों ने समुद्री मार्ग से मुंबई में घुसने के बाद एक रेलवे स्टेशन, दो आलीशान होटलों और एक यहूदी केंद्र पर हमला करके उत्पात मचाया था।

शिवसेना विधायक संजय गायकवाड़ ने मुंबई में एक कैंटीन कर्मचारी को थप्पड़ मारा, विपक्ष ने आलोचना की

मुंबई : महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ शिवसेना के विधायक संजय गायकवाड़ ने बासी भोजन परोसे जाने को लेकर मुंबई में विधायक हॉस्टल कैंटीन के एक कर्मचारी को कथित तौर पर थप्पड़ मार दिया। बुलढाणा विधायक के इस कृत्य का वीडियो वायरल हुआ है, जिसकी मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ-साथ विपक्षी दलों ने भी निंदा की। फडणवीस ने बुधवार को कहा कि गायकवाड़ द्वारा मुंबई में 'आकाशवाणी एमएलए' हॉस्टल की कैंटीन के एक कर्मचारी को थप्पड़ मारने की घटना से सभी विधायकों के बारे में यह गलत संदेश गया है कि वे सत्ता का दुरुपयोग करते हैं। उपमुख्यमंत्री एवं शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने भी अपनी पार्टी के नेता के कृत्य को ''अनुचित'' बताया। हालांकि, मंगलवार रात को हुई इस घटना के बाद बुलढाणा से विधायक गायकवाड़ ने अपने आचरण का बचाव करते हुए कहा कि उन्हें ''शिवसेना शैली'' की प्रतिक्रिया के लिए बाध्य होना पड़ा, क्योंकि भोजन की गुणवत्ता के बारे में उनकी पूर्व की शिकायतों का समाधान नहीं किया गया था। गायकवाड़ ने कहा कि उन्हें अपने कृत्य पर कोई पछतावा नहीं है।

सीबीआई ने आर्थिक अपराधी मोनिका कपूर को अमेरिका में हिरासत में लिया

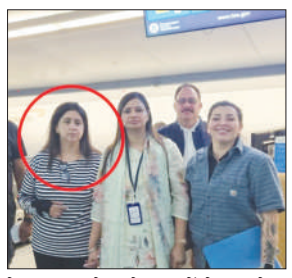

नयी दिल्ली : केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) अधिकारियों ने कथित आर्थिक अपराधी मोनिका कपूर को अमेरिका से प्रत्यर्पित किये जाने के बाद हिरासत में लिया तथा भारत के लिए रवाना हो गए। बुधवार को यह जानकारी देते हुए अधिकारियों ने बताया कि कपूर करीब 25 साल से अधिक समय से फरार थी। अधिकारियों ने बताया कि कपूर के खिलाफ 'इंटरपोल रेड नोटिस' जारी किया गया था। सीबीआई की एक टीम ने उसे अमेरिका में हिरासत में लिया और उसे लेकर अमेरिकन एयरलाइंस की उड़ान संख्या एए 292 में सवार हो गए, जिसके बुधवार रात को यहां पहुंचने की उम्मीद है। अमेरिकी अधिकारियों के साथ निरंतर सहयोग के माध्यम से अमेरिका में नेहल मोदी की गिरफ्तारी के बाद हाल के दिनों में एजेंसी के लिए यह दूसरी बड़ी सफलता है। सीबीआई प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, यह प्रत्यर्पण न्याय की दिशा में एक बड़ी सफलता है और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की परवाह किए बिना भगोड़ों को भारत में कानून के कठघरे में लाने की सीबीआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने 17 देशों की संसदों को संबोधित कर बनाया नया कीर्तिमान

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रिकार्ड 17 देशों की संसदों को संबोधित किया है, जो उनके सभी कांग्रेसी पूर्ववर्तियों के कुल संबोधनों की संख्या के बराबर है। आधिकारिक सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। प्रधानमंत्री का पांच देशों का दौरा बुधवार को संपन्न हो रहा है और इस दौरान उन्होंने घाना, त्रिनिदाद एवं टोबैगो तथा नामीबिया की संसदों को संबोधित किया। सूत्रों ने बताया कि कांग्रेस पार्टी से संबद्ध प्रधानमंत्रियों मनमोहन सिंह ने सात बार, इंदिरा गांधी ने चार बार, जवाहरलाल नेहरू ने तीन बार, राजीव गांधी ने दो बार और पीवी नरसिंह राव ने एक बार दूसरे देश की संसद को संबोधित किया था। इस प्रकार कांग्रेस से संबद्ध पांच प्रधानमंत्रियों ने करीब सात दशक में कुल 17 बार विदेशी संसद को संबोधित किया था। अधिकारियों ने बताया कि मोदी ने इस आंकड़े की बराबरी कर ली है। सूत्रों ने बताया कि मोदी ने विकसित और विकासशील देशों की संसदों को संबोधित किया है, जो आज भारत के व्यापक वैश्विक सम्मान और प्रासंगिकता को दर्शाता है।

गुजरात पुल हादसा : बीच नदी से महिला ने लगाई गुहार, मेरे बच्चे और पति डूब रहे हैं उन्हें बचा लो

वडोदरा : गुजरात के वडोदरा जिले के महिसागर नदी में पुल का एक हिस्सा ढह जाने के बाद दिल को झकझोर देने वाला दृश्य देखने को मिला जब नदी में डूबे वाहन के ऊपर बैठी 35 वर्षीय सोनलबेन पढियार वहां मौजूद लोगों से अपने दो बच्चों और पति को बचाने की गुहार लगाती दिखीं। हालांकि, जब तक बचावकर्मी मौके पर पहुंचे, बहुत देर हो चुकी थी। उसके पति और बच्चे पहले ही डूब चुके थे, और बचावकर्मी बाद में उनके शव निकाले। इस दिल दहला देने वाले दृश्य का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है जिसमें सोनलबेन एक वाहन के डूबे हुए मलबे पर बैठी दिखाई दे रही हैं, उनका शरीर आंशिक रूप से पानी में डूबा हुआ है। वह रोते हुए घटनास्थल के पास जमा लोगों से मदद मांग रही हैं। वह गुजराती में बदहवास होकर चिल्लाती नजर आ रही हैं, ''मेरे बच्चे डूब गए... मेरे पति डूब गए, कृपया उन्हें बचा लो।'' उसे दिलासा देने के लिए, पुल से वीडियो रिकॉर्ड कर रहा व्यक्ति उसे बताता है कि बचाव दल आ रहे हैं। गुजरात के वडोदरा जिले में सुबह पुल का एक हिस्सा ढह जाने से कई वाहन महिसागर नदी में गिर गए। इस हादसे में सोनलबेन के पति रमेश पढियार (38), बेटी वेदिका (4) और बेटा नैतिक (2) सहित दस लोगों की मौत हो गई। वडोदरा के पादरा तालुका के मुजपुर गांव की निवासी सोनलबेन को जब नदी के किनारे लाया गया तो उन्होंने बताया कि करीब एक घंटे तक वह मदद मांगती रहीं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

पंजाब पुलिस ने बड़ी आतंकी साजिश नाकाम की, हथियारों का जखीरा बरामद

चंडीगढ़ : पंजाब पुलिस ने पाकिस्तान के आतंकवादी हरविंदर रिंदा द्वारा रची गई एक बड़ी आतंकी साजिश को नाकाम करते हुए गुरदासपुर के जंगल से हथियारों का जखीरा बरामद किया है। राज्य की पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पाया गया कि पंजाब में कई स्थानों पर हमले करने की पूर्व नियोजित साजिश के तहत पाकिस्तानी एजेंसियों और रिंदा ने यह खेप भारत पहुंचाई थी, जिसका उद्देश्य शांति को बाधित करना था। डीजीपी ने बताया कि खुफिया सूचना पर तेजी से कार्रवाई करते हुए गैंगस्टर रोधी कार्य बल (एजीटीएफ) के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) प्रमोद बान की देखरेख में एजीटीएफ टीम ने गुरदासपुर के एक वन क्षेत्र से आतंकवादी सामग्री का एक बड़ा जखीरा बरामद किया। इसमें दो एके-47 राइफलें, 16 कारतूस, दो मैगजीन और दो पी-86 (उच्च विस्फोटक) हथगोले शामिल हैं। ये बरामदगी हरविंदर रिंदा के सहयोगियों तक पहुंच पाने से पहले की गई। उन्होंने कहा कि इस खेप को वापस लाने वाले गुर्गों की पहचान करने के लिए जांच की जा रही है। यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''एक खुफिया अभियान में, एजीटीएफ, पंजाब ने पाकिस्तान में स्थित और पाकिस्तान की आईएसआई द्वारा समर्थित बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) के एक संचालक हरविंदर रिंदा द्वारा रची गई एक बड़ी आतंकी साजिश को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया।''

यूएई ने गोल्डन वीजा योजना शुरू की भारतीयों को हो सकता है फायदा

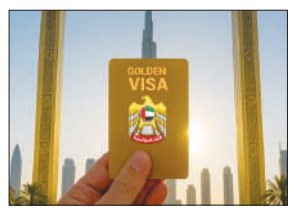

नयी दिल्ली : संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने तेल-आधारित अर्थव्यवस्था से इतर एक व्यापक विकास इंजन बनने के अपने दृष्टिकोण के तहत निवेशकों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, एथलीटों और छात्रों को 10 साल तक के नवीनीकरण योग्य निवास परमिट की पेशकश करने के लिए अपने वीजा कार्यक्रम में बदलाव किया है। यूएई के अधिकारियों ने कहा कि उनके देश का ''गोल्डन वीजा'' कार्यक्रम प्रतिभाशाली और उच्च-निवल-संपत्ति वाले भारतीयों व अन्य देशों के नागरिकों को यूएई में दीर्घकालिक निवास का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा विनियमित इस वीजा कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आवेदकों को देश में काम करने वाले अन्य प्रवासियों के विपरीत निवास के लिए किसी प्रायोजक की जरूरत नहीं पड़ती। रणनीतिक मामलों के विशेषज्ञों के मुताबिक, यूएई उन भारतीयों के लिए पसंदीदा गंतव्य है, जो बेहतर भविष्य की तलाश में हैं और गोल्डन वीजा कार्यक्रम का यह प्रावधान उन लोगों के लिए मददगार साबित होगा, जो इस खाड़ी देश में दीर्घकालिक प्रवास की चाह रखते हैं।

भदोही में 17 करोड़ रुपये का जीएसटी फर्जीवाड़ा उजागर; कंपनी मालिक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

भदोही (उप्र) : भदोही जिले के अधिकारियों ने एक बड़ा वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) घोटाला पकड़ा है, जिसमें नकली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर 17 करोड़ रुपये से ज्यादा की कर चोरी की गई है। पुलिस ने बताया कि आरोपी जोगेंद्र सिंह ने जीएसटी रजिस्ट्रेशन हासिल करने के लिए कथित तौर पर कूटरचित दस्तावेजों का उपयोग किया और 10 अलग-अलग राज्यों से करीब एक अरब रुपये का लेनदेन किया। पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने बताया कि आरोपी ने औराई थाना क्षेत्र के खमरिया में 'मेसर्स जोगेंद्र इंटरप्राइजेज' नाम से एक कंपनी खोलकर 22 दिसंबर 2024 को जीएसटी नंबर हासिल किया और इस रजिस्ट्रेशन का उपयोग कर उसने कुल 96.53 करोड़ रुपये के बिल जारी किए। उन्होंने बताया कि हालांकि वह 17.57 करोड़ रुपये जीएसटी का भुगतान करने में विफल रहा। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि सहायक आयुक्त (वाणिज्यिक कर) मनोज कुमार अग्रवाल ने निरीक्षण के दौरान पाया कि इस कंपनी का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है जिसके बाद अग्रवाल ने जोगेंद्र सिंह के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई।

संभल में कांवड़ मार्ग पर अवैध अतिक्रमण हटाने के लिये चला बुलडोजर

संभल (उप्र) : संभल तहसील क्षेत्र में राय सत्ती से लेकर चंदौसी तक कांवड़ यात्रा मार्ग पर कांवड़ियों को किसी भी तरह की परेशानी नहीं होने देने के मकसद से जिला प्रशासन ने बुधवार को कथित अवैध अतिक्रमण को बुलडोजर चलवाकर हटा दिया। उप जिलाधिकारी विकास चंद्र ने संवाददातओं को बताया कि कांवड़ यात्रा के मद्देनजर अवैध कब्जों को बुलडोजर के जरिये हटाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कई जगहों पर लोगों ने अतिक्रमण करके रास्ते को तंग कर दिया था। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रियों को कोई परेशानी ना हो, इसके लिये उसे चौड़ा करना जरूरी है इसीलिए तहसील प्रशासन कार्रवाई कर रहा है। एक सवाल के जवाब में उप जिलाधिकारी ने बताया कि रायसत्ती सीकर-चंदौसी मार्ग तक अतिक्रमण रोधी अभियान चलाया जा रहा है।

वाराणसी में संपत्ति विवाद में पिता और बहन की हत्या

वाराणसी (उप्र) : वाराणसी में संपत्ति विवाद के बाद एक व्यक्ति ने अपने बुजुर्ग पिता और बहन की रॉड व ईंटों से प्रहार कर कथित तौर पर हत्या कर दी। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (वरुण क्षेत्र) नीतू कत्याल ने बताया कि दोहरे हत्याकांड की यह घटना मंगलवार को कैंट थाना क्षेत्र के प्रताप नगर कॉलोनी की है। अधिकारी ने बताया कि पारिवारिक संपत्ति को लेकर हुए एक तीखे विवाद के दौरान आरोपी राजेश कुमार ने अपने 78 वर्षीय पिता रूप चंद्र भारद्वाज और 50 वर्षीय बहन शिवकुमारी पर कथित तौर पर हमला कर दिया। उन्होंने बताया कि रॉड और ईंटों से बार-बार वार किए जाने के बाद दोनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

त्रिपुरा में बाढ़ से 100 से अधिक परिवार बेघर हुए

अगरतला : दक्षिण त्रिपुरा जिले में आई बाढ़ के कारण 100 से अधिक परिवार बेघर हो गए हैं। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। जिले के सभी स्कूल और आंगनवाड़ी केंद्र बुधवार को एहतियातन बंद हैं। जिला प्रशासन ने मंगलवार को लगातार बारिश के कारण आई बाढ़ के मद्देनजर निचले इलाकों में रहने वाले लोगों से सतर्क रहने को कहा है। मुहुरी नदी का जलस्तर खतरे के निशान (15.70 मीटर) से ऊपर है जिससे तटबंध के दोनों ओर बाढ़ आ गई है। दक्षिण त्रिपुरा के जिलाधिकारी (डीएम) मुहम्मद सज्जाद ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''सोमवार रात से लगातार हो रही बारिश के कारण बेलोनिया और संतिरबाजार उप-मंडलों के कई निचले इलाके बाढ़ के पानी में डूब गए हैं। इसके कारण 118 परिवारों के 289 लोगों ने 10 राहत शिविरों में शरण ली है।''

होटल विवाद: वारंट रद्द करवाने के लिए अदालत में पेश हुईं मलाइका

■ गवाह के तौर पर नाम हटा

मुंबई : मुंबई की एक अदालत ने बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान से जुड़े 2012 के होटल विवाद मामले में अभियोजन पक्ष की गवाह एवं अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा के खिलाफ जारी जमानती वारंट बुधवार को रद्द कर दिया। हालांकि, अभियोजन पक्ष द्वारा यह दलील दिए जाने के बाद कि अभिनेत्री ''उनके मामले का समर्थन नहीं कर रहीं'', उन्हें गवाह के तौर पर मामले से हटा दिया गया। अदालत ने यह वारंट अरोड़ा के उस मामले में पेश न होने पर जारी किया था, जिसमें खान पर 13 साल पहले मुंबई के एक फाइव स्टार होटल में प्रवासी भारतीय व्यवसायी पर हमला करने का आरोप है। अभिनेत्री-मॉडल मलाइका (51) उस समूह का हिस्सा थीं, जो 22 फरवरी 2012 को कथित घटना के समय खान के साथ होटल में रात का भोजन करने के लिए गए थे। अदालत ने मामले में गवाह के रूप में अपनी गवाही देने के लिए उपस्थित न होने पर अप्रैल में उनके खिलाफ जमानती वारंट जारी किया था। अभिनेत्री बुधवार को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (एस्प्लेनेड अदालत) के. एस. झंवर के समक्ष पेश हुईं। इसके बाद, उन्होंने वारंट रद्द करने के लिए एक अर्जी दायर की, जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया। खान और दो अन्य लोगों को व्यवसायी इकबाल मीर शर्मा की शिकायत के बाद गिरफ्तार किया गया था।

कांग्रेस, सपा और बसपा का 2047 तक हो जाएगा सफाया : केशव प्रसाद मौय

मेरठ (उप्र) : उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बुधवार को दावा किया कि वर्ष 2047 तक कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (सपा) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का भारतीय राजनीति से पूरी तरह सफाया हो जाएगा। मौर्य ने मेरठ में 'एक पेड़ मां के नाम 2.0' अभियान के तहत पौधरोपण करने के बाद अपने संबोधन में विपक्षी दलों पर तीखा हमला बोला। सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए मौर्य ने कहा, ''सपा का इतिहास भगवान राम के भक्तों पर गोली चलाने और कांवड़ियों पर बल प्रयोग करने से जुड़ा है। इसके विपरीत वर्तमान भाजपा नीत सरकार उन पर पुष्प वर्षा कर रही है। यही अंतर सपा के राजनीतिक भविष्य को आकार देगा।'' मौर्य ने दावा किया, ''भाजपा 2027 के विधानसभा चुनावों में भारी बहुमत के साथ सत्ता में वापसी करेगी जबकि जनता ने भी मन बना लिया है कि 2047 तक सपा जैसी पार्टियों का पूरी तरह सफाया हो जाएगा।'' धर्मांतरण पर टिप्पणी करते हुए मौर्य ने कहा कि सरकार धर्म के नाम पर लोगों को 'धोखा' देने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। उन्होंने आगे कहा, ''अगर कोई दूसरों को धोखा देने के लिए अपनी पहचान छिपाता है, तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।'' केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के नेता जयंत चौधरी के हालिया बयान पर मौर्य ने कहा कि चौधरी ने सही बात कही है। चौधरी ने कांवड़ मार्ग पर आम लोगों द्वारा भोजनालयों व दुकानों पर की जा रही पहचान की जांच को 'सतर्कता' बताया था। उपमुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि भ्रामक 'नेमप्लेट' का इस्तेमाल धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए और अगर लोग ऐसे मामले देखते हैं तो पुलिस को सूचित करें। सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मौर्य ने एक पौधा लगाया और कहा कि उत्तर प्रदेश में अब तक 210 करोड़ से ज़्यादा पेड़ लगाए जा चुके हैं। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया।

लेवल क्रॉसिंग गेटों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान, रेल मंत्री ने शुरू कराया 15 दिवसीय निरीक्षण अभियान

■ रेल मंत्री ने किया रिव्यू, अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

कोलकाता, समाज्ञा : रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने समपार फाटकों की सुरक्षा व्यवस्था को रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्यों तथा जोनल रेलवे के महाप्रबंधकों के साथ रिव्यू किया । अपने पिता के निधन के एक दिन बाद ही व्यक्तिगत शोक और अंतिम संस्कार की व्यस्तताओं के बीच रेलमंत्री ने रेलवे की महत्वपूर्ण सुरक्षा व्यवस्थाओं की समीक्षा की। समीक्षा में 'लेवल क्रॉसिंग गेट सुरक्षा' के विषय पर गहन विचार-विमर्श किया गया। रेल मंत्री ने इस संबंध में 11 महत्वपूर्ण निर्णय लिए। सभी लेवल क्रॉसिंग गेटों पर सीसीटीवी कैमरे तथा रिकॉर्डिंग सिस्टम लगाए जाएं। बिजली आपूर्ति की व्यवस्था सौर पैनल, बैटरी बैकअप, यूपीएस आदि के माध्यम से सुनिश्चित की जाए। यह कार्य मिशन मोड में पूरा किया जाए। सड़क यातायात के लिए बंद गेटों को सड़क यातायात के लिए खुले गेटों में बदलने के लिए नीति की समीक्षा की जाएगी। एलसी गेटों के इंटरलॉकिंग कार्यों को मिशन मोड में त्वरित गति से पूरा किया जाएगा। रेलवे पीएसयू को इंटरलॉकिंग कार्यों और निर्माण कार्यों में शामिल किया जाएगा। टीवीयू की सीमा घटाई गई है। अब 10,000 टीवीयू पर ही इंटरलॉकिंग प्रारंभ की जाएगी। पहले यह सीमा 20,000 थी। 10,000 टीवीयू से अधिक वाले सभी गेटों पर आरओबी/आरयूबी/एलएचएस योजनाओं से भिन्न होकर भी इंटरलॉकिंग अनिवार्य होगी। गैर-इंटरलॉक गेटों पर प्रतिदिन दो यादृच्छिक आवाज रिकॉर्डिंग जांच प्रति डिवीजन की जाएगी। गैर-इंटरलॉक गेटों पर वॉयस लॉगर सिस्टम की कार्यशीलता की पुष्टि सभी डीआरएम द्वारा की जाएगी। सभी एलसी गेटों पर स्पीड ब्रेकर, चेतावनी बोर्ड आदि को मानकीकृत किया जाएगा और आवश्यक सुधार किए जाएंगे। लेवल क्रॉसिंग गेटों को समाप्त करने हेतु रोड ओवर ब्रिज और रोड अंडर ब्रिज तथा लो हाइट पुलों के निर्माण कार्यों को तेज किया जाएगा।उन गेटों की सूची तैयार की जाएगी जहां विवाद या जनता द्वारा दबाव/मारपीट की घटनाएं होती हैं। वहां रेल सुरक्षा बल/होमगार्ड की तैनाती सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही ब्लॉक सेक्शनों में लेबल क्रासिंग गेटों पर 15-दिवसीय सुरक्षा निरीक्षण अभियान भी शुरू कर दिया गया है।

लॉर्ड्स की चुनौतीपूर्ण पिच पर होगी बल्लेबाजों की कड़ी परीक्षा

लंदन : शानदार फॉर्म में चल रहे भारतीय बल्लेबाजों को इंग्लैंड के खिलाफ गुरुवार से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट क्रिकेट मैच में लॉर्ड्स की चुनौती पूर्ण पिच पर सफलता हासिल करने के लिए खुद को अच्छी तरह से तैयार करना होगा जबकि जसप्रीत बुमराह की वापसी से मेजबान टीम के बल्लेबाजों की भी कड़ी परीक्षा होगी। इंग्लैंड ने लीड्स में पहला टेस्ट जबकि भारत ने बर्मिंघम में दूसरा टेस्ट मैच जीता था और इस तरह से पांच मैच की श्रृंखला अभी बराबरी पर है। भारत की दूसरे मैच में 336 रन से जीत के बाद हालांकि समीकरण काफी बदल गए हैं। भारत ने अभी तक दोनों मैच में अधिकतर समय अपना दबदबा बनाए रखा है और अगर उसने पहले टेस्ट मैच में कुछ कैच नहीं छोड़े होते और निचले क्रम के बल्लेबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया होता तो वह श्रृंखला में 2-0 से आगे होता। नए कप्तान शुभमन गिल के नेतृत्व में भारतीय टीम की अनुभवहीनता को देखते हुए लग रहा था कि इंग्लैंड की टीम उस पर हावी रहेगी लेकिन अभी तक जिस तरह से भारत ने प्रदर्शन किया है उसे देखते हुए उसे रोहित शर्मा और विराट कोहली की कमी नहीं खली जिन्होंने इस श्रृंखला से पहले टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। इससे भारत की मजबूत बेंच स्ट्रेंथ का भी पता चलता है। गिल एंड कंपनी द्वारा बनाए गए रनों के पहाड़ ने बेन स्टोक्स की सपाट पिच तैयार करके विपक्षी टीम को मुकाबले से बाहर करने की रणनीति पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। सपाट पिचों पर भारतीय बल्लेबाजों की ज़बरदस्त सफलता मेज़बान टीम के लिए नुक़सानदेह साबित हुई है। अब उन्हें ऐसे विकेट पर खेलना पड़ सकता है जिस पर अच्छी सीम मूवमेंट की उम्मीद की जा रही है। इसके अलावा, प्रतिष्ठित लॉर्ड्स में ऊपर-नीचे जाने वाली ढलान की अनोखी चुनौती भी है। बुमराह और जोफ्रा आर्चर की वापसी से बल्लेबाजों का काम और कठिन हो जाएगा। आर्चर चार साल में इंग्लैंड के लिए अपना पहला टेस्ट खेलने के लिए तैयार हैं। बल्लेबाज़ी विभाग में भारतीय टीम के लिए ज़्यादा चिंता की कोई बात नहीं है, सिवाय करुण नायर के फॉर्म के, जो लेंथ से उछलती गेंदों के सामने थोड़े असहज दिखे हैं। इंग्लैंड यशस्वी जायसवाल की शॉर्ट पिच गेंदों से परीक्षा लेने की कोशिश करेगा लेकिन पूरी संभावना है कि भारतीय सलामी बल्लेबाज रन बनाने का कोई न कोई तरीका निकाल ही लेगा। भारत की अंतिम एकादश में एकमात्र अपेक्षित बदलाव प्रसिद्ध कृष्णा की जगह बुमराह का आना होगा। लीड्स के बाद भारतीय तेज गेंदबाजों की प्रभावशीलता पर गंभीर सवालिया निशान उठे थे, लेकिन आकाशदीप, मोहम्मद सिराज और बुमराह की तिकड़ी आक्रमण को एक शक्तिशाली रूप देती है।

टेस्ट क्रिकेट से संन्यास पर कोहली ने कहा, जब आप हर चार दिन में दाढ़ी रंगते हैं तो समय आ गया है

लंदन : भारतीय स्टार विराट कोहली ने लंदन में युवराज सिंह के 'फंडरेजर' कार्यक्रम में अपने टेस्ट करियर के संन्यास के बारे में बात करते हुए खूब हंसी मजाक किया और कहा कि 'जब आप हर चार दिन में दाढ़ी रंगते हैं तो मतलब है कि समय आ गया है'। कोहली अब लंदन में रहते हैं। वह हाल में विम्बलडन टेनिस ग्रैंडस्लैम में दिखाई दिए जिसमें वह भूरे रंग के सूट में काफी स्टाइलिश लग रहे थे। इसके बाद वह तुरंत 'यूवीकैन' कैंसर फंडरेजर (धनराशि जुटाना) कार्यक्रम में पहुंच गए। भारतीय टीम भी इस कार्यक्रम में मौजूद थी और कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता ने कोहली के टीम का हिस्सा नहीं होने का जिक्र क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड दौरे से पहले संन्यास की घोषणा कर दी थी। प्रस्तुतकर्ता गौरव कपूर ने कहा, 'मैदान पर हमें आपकी कमी खलती है।' रवि शास्त्री, क्रिस गेल, केविन पीटरसन और युवराज तब कोहली के बगल में खड़े थे और इस भारतीय सुपरस्टार ने कुछ देर रुककर जवाब दिया, 'मैंने अभी दो दिन पहले ही अपनी दाढ़ी रंगी है। आपको पता है कि जब आप हर चार दिन में अपनी दाढ़ी रंगते हैं तो यह आराम करने का समय होता है।'

एजबेस्टन में शानदार प्रदर्शन के बाद गिल पहली बार शीर्ष 10 में शामिल

दुबई : भारतीय कप्तान शुभमन गिल एजबेस्टन में इंग्लैंड के खिलाफ रिकॉर्ड प्रदर्शन के बाद अपने करियर में पहली बार बुधवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष 10 में शामिल हो गए। गिल ने मैच में 269 और 161 रन की पारी खेली थी जिससे वह टेस्ट की दोनों पारियों में 150 से अधिक रन बनाने वाले इतिहास के केवल दूसरे खिलाड़ी बन गए। इस प्रदर्शन से भारत ने इंग्लैंड को 336 रन से हराकर पांच मैचों की श्रृंखला 1-1 से बराबर कर ली। भारतीय टेस्ट कप्तान के रूप में यह उनकी पहली जीत भी थी। श्रृंखला से पहले 24 वर्षीय शुभमन 23वें स्थान पर थे और बुधवार को जारी आईसीसी की टेस्ट बल्लेबाजों की ताजा रैंकिंग में 15 पायदान की छलांग लगाकर अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ छठी रैंकिंग पर पहुंच गए। एजबेस्टन में 430 रन से उन्होंने अभी तक दो टेस्ट में कुल 585 रन बना लिए हैं। अभी श्रृंखला में तीन मैच और खेले जाने हैं। गिल के करियर की पिछली सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग 14 थी जो उन्होंने सितंबर 2023 में हासिल की थी। वहीं वनडे में गिल बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं जबकि श्रीलंका के चरित असलंका (छठे स्थान पर) और कुसल मेंडिस (10 पायदान के फायदे से 10वें स्थान पर) ने बांग्लादेश पर 2-1 से श्रृंखला जीत के बाद छलांग लगाई है। श्रृंखला में नौ विकेट लेने के बाद वानिंदु हसरंगा एकदिवसीय गेंदबाजी रैंकिंग में 11 पायदान की छलांग लगाकर आठवें स्थान पर पहुंच गए।

तीरंदाजी विश्व कप: भारतीय महिला कंपाउंड टीम फाइनल में, पुरुष टीम क्वार्टर फाइनल में बाहर

मैड्रिड : कंपाउंड महिला टीम के बुधवार को यहां फाइनल में पहुंचने से तीरंदाजी विश्व कप के चौथे चरण में भारत का कम से कम एक पदक पक्का हो गया जबकि पुरुष टीम क्वार्टर फाइनल में हार गई। शीर्ष वरीयता प्राप्त ज्योति सुरेखा वेन्नम, परनीत कौर और पदार्पण कर रही 16 वर्षीय पृथिका की महिला तिकड़ी ने सेमीफाइनल में इंडोनेशिया को 230-226 से हराकर शानदार प्रदर्शन किया। अब शनिवार को स्वर्ण पदक के लिए उनका सामना 10वीं वरीयता प्राप्त चीनी ताइपे से होगा। इससे पहले इस तिकड़ी ने क्वार्टर फाइनल में अल सल्वाडोर को 235-226 से हराया था। हालांकि ऋषभ यादव, प्रथमेश फुगे और अमन सैनी की पुरुष कंपाउंड टीम एक अंक से चूक गई और क्वार्टर फाइनल में मैक्सिको से 233-234 से हार गई। क्वालीफिकेशन में शीर्ष पर रहे भारतीयों ने अच्छी शुरुआत की, लेकिन दूसरे राउंड में पिछड़ गए और वापसी नहीं कर सके। मंगलवार को ऋषभ पुरुष और ज्योति महिला वर्ग में व्यक्तिगत क्वालीफिकेशन राउंड में शीर्ष स्थान पर रहे थे। इन दोनों ने 1431 के स्कोर के साथ मिश्रित टीम विश्व रिकॉर्ड भी तोड़ा था जो पहले 2023 यूरोपीय खेलों में डेनमार्क (1429) के नाम था। पुरुषों के क्वालीफाइंग में यादव का 716 का स्कोर व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था जो व्यक्तिगत विश्व रिकॉर्ड से केवल दो अंक कम था। मौजूदा एशियाई खेलों की चैंपियन ज्योति ने भी 715 का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ स्कोर बनाकर महिला वर्ग में शीर्ष वरीयता हासिल की थी।

भारत ए पुरुष हॉकी टीम ने आयरलैंड को 6-1 से हराकर यूरोप दौरे की शुरुआत की

आइंडहोवन (नीदरलैंड) : भारत ए पुरुष हॉकी टीम ने मंगलवार रात हॉकी क्लब ओरांजे-रूड में आयरलैंड को 6-1 से हराकर अपने यूरोपीय दौरे की शानदार शुरुआत की। भारतीय टीम की तरफ से उत्तम सिंह, अमनदीप लाकड़ा, आदित्य लालगे, सेल्वम कार्थी और बॉबी सिंह धामी ने गोल किए। भारत ने मैच में शुरू से लेकर आखिर तक दबदबा बनाए रखा और आयरलैंड को वापसी का कोई मौका नहीं दिया। उत्तम ने भारतीय टीम के लिए पहला गोल किया और बाद में अमनदीप ने टीम की बढ़त को और मजबूत कर दिया। इसके बाद आदित्य ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए लगातार दो गोल दागकर भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। फॉरवर्ड सेल्वम कार्ति और बॉबी सिंह धामी ने भी एक-एक गोल करके स्कोरशीट में अपना नाम दर्ज कराया। भारतीय रक्षा पंक्ति ने भी अच्छा खेल दिखाया और आयरलैंड के प्रयासों को अच्छी तरह से नाकाम किया। आयरलैंड की टीम केवल एक गोल ही कर पाई। भारत अब बुधवार को फिर से आयरलैंड का सामना करेगा। इसके बाद वह अगले दो सप्ताह में फ्रांस, इंग्लैंड, बेल्जियम और मेज़बान नीदरलैंड के खिलाफ खेलेगा।

सैमसोनोवा को हराकर स्वियातेक पहली बार विंबलडन सेमीफाइनल में

लंदन: इगा स्वियातेक ने बुधवार को यहां 19वीं वरीय ल्युडमिला सैमसोनोवा को सीधे सेट में हराकर पहली बार विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल के सेमीफाइनल में जगह बनाई। पांच बार की ग्रैंडस्लैम चैंपियन स्वियातेक ने क्वार्टर फाइनल में सैमसोनोवा को 6-2, 7-5 से हराया। चार बार फ्रेंच ओपन और एक बार अमेरिकी ओपन का खिताब जीतने वाली स्वियातेक को पेशेवर के रूप में विंबलडन में सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ा है और यहां पांच प्रयास में इस साल से पहले वह सिर्फ एक बार 2023 में क्वार्टर फाइनल में पहुंची थी। उन्होंने हालांकि 2018 में जूनियर चैंपियनशिप जीती थी। पोलैंड की 24 साल की स्वियातेक बृहस्पतिवार को होने वाले सेमीफाइनल में सातवीं वरीय माइरा आंद्रीवा और बेलिंडा बेनसिच के बीच होने वाले मैच की विजेता से भिड़ेंगी। पहली बार ग्रैंडस्लैम क्वार्टर फाइनल में खेल रहीं सैमसोनोवा पहला सेट गंवाने के बाद दूसरे सेट में 0-3 से पिछड़ रहीं थी लेकिन वापसी करते हुए पहले 4-4 और फिर 5-5 स्कोर करने में सफल रहीं। स्वियातेक ने हालांकि इसके बाद अपनी सर्विस बचाकर 6-5 की बढ़त बनाई और फिर सैमसोनोवा की सर्विस तोड़कर मैच जीत लिया।

गेंद की हालत कभी इतनी खराब होते नहीं देखी: पंत

लंदन : भारत के उप कप्तान ऋषभ पंत ने इंग्लैंड के खिलाफ चल रही टेस्ट श्रृंखला में इस्तेमाल की जा रही ड्यूक्स गेंद की गुणवत्ता की आलोचना करते हुए कहा कि बुधवार को कहा कि उन्होंने लाल गेंद को इस हद तक बिगड़ते कभी नहीं देखा। ड्यूक्स की गेंद का आकार बिगड़ रहा है जिससे इस श्रृंखला में खिलाड़ी नियमित रूप से अंपायरों के पास जाकर गेंद को बदलने की मांग कर रहे हैं। गेंद के नरम होने के बाद गेंदबाजों को इससे कोई मदद नहीं मिल रही जिससे बल्लेबाज-गेंदबाज मुकाबला मुख्य रूप से नई गेंद तक ही सीमित रह गया है। बृहस्पतिवार से लार्ड्स में शुरू हो रहे टेस्ट से पहले पंत ने कहा कि गेंद एक बड़ी समस्या बन गई है और यह खेल के लिए अच्छी नहीं है। पंत ने मैच से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'गेंदों को मापने का गेज (चाहे ड्यूक्स हो या कूकाबुरा) एक जैसा होना चाहिए। लेकिन अगर यह छोटा होता तो बेहतर होता (हंसते हुए)। गेंदें बहुत परेशानी दे रही हैं। निश्चित रूप से मुझे लगता है कि यह एक बड़ी समस्या है क्योंकि गेंद का आकार बिगड़ रहा है।' उन्होंने कहा, 'गेंद का आकार बहुत अधिक बिगड़ रहा है। मेरे साथ ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यह खिलाड़ियों के लिए निश्चित रूप से परेशान करने वाला है क्योंकि हर गेंद अलग तरह से खेलती है। जब यह नरम हो जाती है तो कभी-कभी मूवमेंट नहीं मिलती। लेकिन जैसे ही गेंद बदलती है तो पर्याप्त मदद मिलने लगती है।'

निवेशकों के सतर्क रुख के बीच सेंसेक्स 176 अंक टूटा, निफ्टी में 46 अंक की गिरावट

मुंबई : स्थानीय शेयर बाजार में बुधवार को गिरावट आई और आईटी और तेल एवं गैस शेयरों में बिकवाली से बीएसई सेंसेक्स 176 अंक के नुकसान में रहा। वैश्विक स्तर पर मिले-जुले रुख और कंपनियों के नतीजों से पहले निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 176.43 अंक यानी 0.21 प्रतिशत की गिरावट के साथ 83,536.08 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 330.23 अंक तक टूट गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 46.40 अंक यानी 0.18 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,476.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में एचसीएल टेक, टाटा स्टील, टेक महिंद्रा, रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और आईसीआईसीआई बैंक प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं। दूसरी तरफ, लाभ में रहने वाले शेयरों में बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, अल्ट्राटेक सीमेंट और पावर ग्रिड शामिल हैं। जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लि. के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'भारतीय शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक सीमित दायरे में रहे...वैश्विक व्यापार तनाव और शुल्क के बावजूद, निवेशकों का ध्यान घरेलू कंपनियों के वित्तीय नतीजों और संरचनात्मक वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की ओर बढ़ रहा है।

ऑस्ट्रेलिया, यूएई, ब्रिटेन के साथ एफटीए से कृषि क्षेत्र को बेहतर बाजार पहुंच मिलेगी: गोयल

नयी दिल्ली : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को कहा कि ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ब्रिटेन जैसे विकसित बाजारों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) घरेलू कृषि क्षेत्र के लिए बेहतर बाजार पहुंच प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि वैश्विक सुस्ती के बावजूद भारत का कृषि, पशुपालन और मत्स्य निर्यात चार लाख करोड़ रुपये का रहा है। गोयल ने यहां एक कार्यक्रम में कहा, हम विकसित बाजारों- ऑस्ट्रेलिया, यूएई, ईएफटीए, ब्रिटेन के साथ एफटीए कर रहे हैं..... इन समझौतों के माध्यम से हमने अपने कृषि क्षेत्र के लिए नए बाजार खोले हैं। भारत ने 2022 में ऑस्ट्रेलिया और यूएई के साथ व्यापार समझौते लागू किए। चार देशों के यूरोपीय समूह ईएफटीए के साथ एफटीए पर मार्च, 2024 में हस्ताक्षर किए गए, और इस वर्ष के अंत में इसके लागू होने की उम्मीद है। ब्रिटेन के साथ व्यापार समझौते की घोषणा मई में की गई थी। इस पर जल्द ही हस्ताक्षर होने की संभावना है। यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के सदस्य आयरलैंड, लीशटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड हैं।

कोलकाता के लिए एतिहाद की नई उड़ान सेवा 26 सितंबर से शुरू

चीफ रेवेन्यू और कमर्शियल ऑफिसर, अरिक दे

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित नया ए321एलआर विमान

❑ **अबू धाबी-कोलकाता मार्ग पर बढ़ेगी कनेक्टिविटी और आराम**

कोलकाता, समाज्ञा : एतिहाद एयरवेज ने भारत में अपनी सेवाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए कोलकाता रूट पर अपने नए पीढ़ी के एयरबस ए321एलआर विमान तैनात करने की घोषणा की है। यह उन्नयन 26 सितंबर 2025 से प्रभावी होगा, जिसके बाद अबू धाबी के जायद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के बीच सभी उड़ानें इसी अत्याधुनिक विमान से संचालित की जाएंगी। ए321एलआर विमान में फर्स्ट क्लास सुइट्स, पूरी तरह से लेटने वाली बिजनेस क्लास सीटें और हाई-स्पीड वाईफाई तथा 4के टचस्क्रीन वाली नई पीढ़ी की इकोनॉमी क्लास जैसी विश्वस्तरीय सुविधाएं होंगी। यह सिंगल-आइल विमान वाइड-बॉडी अनुभव देता है, जिसमें अधिक स्पेस, गोपनीयता और आरामदायक सुविधाएं मिलती हैं। फर्स्ट सुइट्स में 1-1 कॉन्फिगरेशन के साथ पूरी तरह से फ्लैट बेड की सुविधा होगी, वहीं बिजनेस क्लास में 14 प्रीमियम सीटें उपलब्ध होंगी। इकोनॉमी क्लास के यात्रियों को भी उच्च गुणवत्ता वाली इन-फ्लाइट एंटरटेनमेंट सुविधाएं और बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी, जिससे उनका यात्रा अनुभव और बेहतर होगा। एतिहाद एयरवेज के चीफ रेवेन्यू और कमर्शियल ऑफिसर, अरिक दे ने कहा कि, भारत एतिहाद के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है, और कोलकाता सेवा में अत्याधुनिक ए321एलआर विमान को शामिल करना इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इस बदलाव से अबू धाबी और कोलकाता के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को सभी श्रेणियों में अधिक आरामदायक और उन्नत सेवाएं मिलेंगी। यह विमान सेवा सप्ताह में कई बार संचालित होगी, जिसमें चार फ्लाइट्स (ईवाई 0220 और ईवाई 0221, ईवाई 0222 और ईवाई 0223) निर्धारित समय पर अबू धाबी से कोलकाता और कोलकाता से अबू धाबी के बीच उड़ान भरेंगी। एतिहाद एयरवेज की यह पहल न केवल भारत के लिए बेहतर कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती है, बल्कि यह एयरलाइन की वैश्विक नेटवर्क को भी और मजबूत करती है।

शाह ने बताया रिटायरमेंट प्लान, कहा- प्राकृतिक खेती करूंगा

अहमदाबाद : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि प्राकृतिक खेती एक वैज्ञानिक प्रयोग है और अधिक उपज समेत इसके कई लाभ हैं। उन्होंने आगाह किया कि रासायनिक उर्वरकों के साथ गेहूं की खेती से अक्सर कई स्वास्थ्य समस्याएं पैदा होती हैं। शाह ने कहा कि अगर कोई व्यक्ति रसायनों और उर्वरकों से मुक्त भोजन करता है, तो उसे किसी दवा की आवश्यकता नहीं होगी। वरिष्ठ भाजपा नेता ने यह भी कहा कि सेवानिवृत्ति के बाद, वह अपना शेष जीवन प्राचीन भारतीय ग्रंथों वेदों, उपनिषदों और प्राकृतिक खेती को देंगे। शाह ने कहा, ''मैंने पहले ही निर्णय ले लिया है कि जब भी मैं सेवानिवृत्त होऊंगा, मैं अपना शेष जीवन वेदों, उपनिषदों और प्राकृतिक खेती को समर्पित करूंगा। प्राकृतिक खेती एक वैज्ञानिक प्रयोग है जिसके कई लाभ हैं।'' केंद्रीय मंत्री ने यह बात 'सहकार संवाद' के दौरान कही। यह अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के अवसर पर अहमदाबाद में गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान की महिला सहकारी कार्यकर्ताओं के साथ एक संवाद था। शाह के गुजरात दौरे के दौरान अहमदाबाद की साइंस सिटी में पिछले शनिवार और रविवार को हुई इस बातचीत का वीडियो और प्रेस विज्ञप्ति बुधवार को जारी की गई। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का उपयोग करके उगाया गया गेहूं थायराइड, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और कैंसर का कारण बन सकता है। शाह ने कहा, ''अगर आप रसायनों और उर्वरकों से मुक्त भोजन का सेवन करते हैं, तो आपको किसी दवा की आवश्यकता नहीं होगी। फसल की पैदावार भी बढ़ेगी, जो प्राकृतिक खेती का एक और लाभ है। अपने खेत में इस कृषि तकनीक को लागू करने के बाद मेरी उपज में डेढ़ गुना वृद्धि हुई है।''

सेमीकंडक्टर कंपनी एनवीडिया 4,000 अरब डॉलर के साथ सबसे मूल्यवान कंपनी बनी

न्यूयॉर्क: दिग्गज सेमीकंडक्टर कंपनी एनवीडिया निवेशकों का समर्थन जारी रहने से बुधवार को 4,000 अरब डॉलर का मूल्यांकन हासिल करने वाली पहली सार्वजनिक कंपनी बन गई। बुधवार को शुरुआती कारोबार में एनवीडिया के शेयरों के दाम 2.5 प्रतिशत चढ़कर 164 डॉलर प्रति शेयर के पार पहुंच गए। यह इस लिहाज से खासा अहम है कि वर्ष 2023 की शुरुआत में एनवीडिया के शेयर सिर्फ 14 डॉलर प्रति शेयर के भाव पर थे। एनवीडिया की ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (जीपीयू), चिपसेट और संबंधित सॉफ्टवेयर के डिजाइन और निर्माण में महारत है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में इसका ध्यान कृत्रिम मेधा (एआई) और हाई-परफॉरमेंस कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में काफी बढ़ा है। पिछले कुछ वर्षों में एआई को लेकर दुनिया भर में मची हलचल के दम पर एनवीडिया अमेरिकी शेयर बाजार की सबसे बड़ी कंपनी बन गई है। इसने प्रौद्योगिकी कंपनियों माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, अमेजन और गूगल को पीछे छोड़ दिया है। स्थिति यह है कि अब इसके शेयरों की कीमतों में उतार-चढ़ाव का एसएंडपी 500 एवं अन्य सूचकांकों पर एप्पल को छोड़कर किसी भी दूसरी कंपनी से ज्यादा असर पड़ता है।

न्यूज अपडेट

क्रिज़ैक का शेयर पहले दिन के कारोबार में 26 प्रतिशत चढ़ा

नयी दिल्ली : छात्र भर्ती समाधान प्रदाता क्रिज़ैक लिमिटेड का शेयर बुधवार को 245 रुपये के निर्गम मूल्य के मुकाबले लगभग 26 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुआ। बीएसई में कंपनी के शेयर ने 280 रुपये पर शुरुआत की, जो निर्गम मूल्य से 14.28 प्रतिशत की बढ़त है। बाद में, यह 25.69 प्रतिशत बढ़कर 307.95 रुपये पर पहुंच गया। अंततः कंपनी यह 25.48 प्रतिशत की बढ़त के साथ 307.45 रुपये पर बंद हुआ। एनएसई में, शेयर ने 14.71 प्रतिशत की बढ़त के साथ 281.05 रुपये पर कारोबार शुरू किया। यह निर्गम मूल्य से 25.56 प्रतिशत की बढ़त के साथ 307.63 रुपये पर बंद हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन 5,379.84 करोड़ रुपये रहा। पिछले सप्ताह शुक्रवार को बोली के अंतिम दिन क्रिजैक लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को 59.82 गुना अभिदान मिला था। 860 करोड़ रुपये की आरंभिक शेयर बिक्री के लिए मूल्य दायरा 233-245 रुपये प्रति शेयर था।

ऑयल इंडिया, गेल ने गैस बिक्री और खरीद के लिए किया समझौता

नयी दिल्ली : सार्वजनिक क्षेत्र की ऑयल इंडिया लि. और गेल (इंडिया) लि. ने मौजूदा गैस बिक्री और खरीद समझौते को एक जुलाई से और 15 साल के लिए बढ़ाने को लेकर समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। ऑयल इंडिया ने बुधवार को बयान में कहा कि इस समझौते के तहत ऑयल इंडिया के राजस्थान गैस क्षेत्रों से प्रतिदिन 9,00,000 मानक घन मीटर (एससीएमडी) प्राकृतिक गैस की आपूर्ति की जा सकेगी। समझौते पर नयी दिल्ली में इंडियन ऑयल के कार्यकारी निदेशक रंजन गोस्वामी और गेल (इंडिया) के कार्यकारी निदेशक सुमित किशोर (गैस विपणन) ने हस्ताक्षर किये। बयान के अनुसार, गैस की आपूर्ति सार्वजनिक क्षेत्र के बिजली संयंत्र राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि. को बिजली उत्पादन के लिए की जाएगी।

स्टारलिंक को भारत में उपग्रह आधारित इंटरनेट सेवा शुरू करने की अनुमति

नयी दिल्ली : भारत के अंतरिक्ष नियामक इन-स्पेस ने अरबपति उद्योगपति एलन मस्क की स्टारलिंक को देश में उपग्रह-आधारित इंटरनेट सेवाएं प्रदान करने का लाइसेंस प्रदान किया है। भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (इन-स्पेस) ने अपनी वेबसाइट पर बताया कि उसने 'स्टारलिंक सैटेलाइट कम्युनिकेशंस' को भारत में 'स्टारलिंक जेन1 कॉन्स्टेलेशन' क्षमता के प्रावधान को सक्षम करने की मंजूरी दे दी है। यह मंजूरी पांच साल की अवधि के लिए वैध है। स्टारलिंक 2022 से ही वाणिज्यिक परिचालन शुरू करने के लिए भारतीय बाजार पर नजर गड़ाए हुए थी।

डीजीसीए ने उड़ान प्रशिक्षण संगठनों के लिए 'रैंकिंग' प्रणाली शुरू की

नयी दिल्ली : नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने देश में पायलट प्रशिक्षण गतिविधियों की गुणवत्ता एवं सुरक्षा में सुधार के प्रयासों के तहत उड़ान प्रशिक्षण संगठनों के लिए 'रैंकिंग' प्रणाली शुरू की है। यह कदम उड़ान प्रशिक्षण संगठनों (एफटीओ) के विमानों से जुड़ी विभिन्न घटनाओं और स्पष्ट खामियों की पृष्ठभूमि में उठाया गया है। डीजीसीए ने बयान में कहा कि 'रैंकिंग' प्रणाली एक अक्टूबर, 2025 से लागू की जाएगी। इसे हर साल दो बार एक अक्टूबर और एक अप्रैल को प्रकाशित किया जाएगा। डीजीसीए के अनुसार, यह पहल भारत में पायलट प्रशिक्षण की गुणवत्ता, सुरक्षा एवं दक्षता में सुधार लाने और प्रदर्शन-संचालित व पारदर्शी प्रशिक्षण परिवेश को बढ़ावा देने की उसकी निरंतर प्रतिबद्धता का हिस्सा है। डीजीसीए ने आठ जुलाई को जारी पत्र में कहा कि एफटीओ को विभिन्न मानदंडों के आधार पर 'रैंकिंग' दी जाएगी।

वर्ष 10, पूर्णांक 3292 अंक 102, RNI No WBHIN/2016/66788, सर्वांग प्रकाशन के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सरोज राय द्वारा 17, बालमुकुन्द मक्कर रोड, 2सरा तल्ला, कोलकाता-700 007 से प्रकाशित। एल. एस. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता-700 015 से मुद्रित।
सम्पादक- अनिल कुमार राय (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी), विज्ञापन एवं प्रसार-9874555256/7044444522, ई-मेल news@samagya.in